

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रकाश सम्पादक—पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[सम्मान्य सचालक, राजस्थान प्राण्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

पी उत्तरगच्छीय शाह मन्दिर जयपुर

‡

ग्रन्थाङ्क ४४

राजस्थानी-हस्तलिखितग्रन्थ-सूची

भाग १

‡

प्रकाशक

राजस्थान राज्य-भूतवापित

राजस्थान प्राण्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावलि

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

[आनरेरि भेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएण्टल सोसाइटी, जर्मनी]

सम्मान्य सदस्य

भाण्डारकर प्राच्यविद्यासंशोधनमन्दिर, पूना, गुजरातसाहित्य-सभा, अहमदाबाद;
विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध-संस्थान, होशियारपुर, निवृत्त सम्मान्य नियामक—
(आनरेरि डायरेक्टर)—भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ग्रन्थाङ्क ४४

राजस्थानी-हस्तलिखितग्रन्थ-सूची

भाग १

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

राजस्थानी-हस्तलिखितग्रन्थ-सूची

भाग १

प्रधान सम्पादक

मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

सहायक

श्रीपुद्दयोत्तमलाल मेनारिया
एम ए (प्री) साहित्यरत्न
प्रवर गोप-महायन

श्रीरमानन्द सारस्वत
शास्त्री, ज्योतिषाचार्य
गोप-महायन

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राग्यान्तातार

सचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०१७ }
प्रथमावृत्ति ५०० }

भारतराष्ट्रीय शतानन्द १८८२

{ मुद्राणां १६६०
{ मूल्य ४५० १५

मुद्र-इतिप्रमाणं पारीक्ष माधना प्रग जोधपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमालाके कुछ ग्रन्थ

प्रकाशित ग्रन्थ

संस्कृतभाषाग्रन्थ-१. प्रमाणमजरी-ताकिरूचूडामणि मरुदेवाचार्य, मूल्य ६.००।
 २ यन्त्रराजरचना-महाराजा सवाई जयसिंह, मूल्य १७५। ३ महर्षिमुनिवैभवम्-स्व०
 श्रीमधुसूदन श्रोभा, मूल्य १०७५। ४ तर्कमगह-प० दमानल्लामग, मूल्य ३००।
 ५ कारकसम्बन्धोद्योत-प० रमननन्दि, मूल्य १७५। ६. वृत्तिदीपिका-प० मोनिकृष्ण,
 मूल्य २००। ७ चन्द्ररत्नप्रदीप, मूल्य २००। ८ कृष्णगीति-कवि मोमनाथ, मूल्य १.७५।
 ९ शृङ्गारदासवली-हर्षकवि, मूल्य २७५। १० चन्द्रपारिणवियजयमहाकाव्य-प० लक्ष्मी-
 धरभट्ट, मूल्य ३५०। ११. राजविनोद-कवि उदयराम, मूल्य २.२५। १२. नृत्तनग्रह,
 मूल्य १७५। १३ नृत्यरत्नकोश, प्रथम भाग-महाराणा वृष्भरण, मूल्य ३७५। १४ उक्ति-
 रत्नाकर-प० साधुमुन्दरगणि, मूल्य ४७५। १५ दुर्गापुष्पाञ्जलि-प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी,
 मूल्य ४२५। १६ कर्णकुतूहल तथा कृष्णनीनामृत-भोतानाथ, मूल्य १५०। १७ ईश्वर-
 विलास महाकाव्य-श्रीकृष्ण भट्ट, मूल्य ११.५०। १८. पद्ममुक्तावली-कविभट्टानिधि
 श्रीकृष्णभट्ट, मूल्य ४००। १९. रसदीपिका-त्रियाराम भट्ट, मूल्य २००।

राजस्थानी और हिन्दी भाषा ग्रन्थ-१ कान्ठदे प्रबन्ध-कवि पद्मनाभ, मूल्य
 १२.२५। २ क्यामसाराणा-कवि जान, मूल्य ४.७५। ३ लावारणा-गोपालदान, मूल्य
 ३७५। ४ वाकीदामरी रयात-महाकवि वाकीदाम, मूल्य ५.५०। ५ राजस्थानी नाहिन्य-
 सग्रह, भाग १, मूल्य २२५। ६ जुगल-विनाम-कवि पीयूष, मूल्य १७५। ७ बर्वान्द्र-
 कल्पलता-कवीन्द्राचार्य मूल्य २००। ८ भगतमाळ-चारण ब्रह्मदामजी, मूल्य १७५।
 ९. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोकी सूची, भाग १, मूल्य ७५०।
 १०. मुहता नैरासीरी रयात, भाग १, मूल्य ८५० न प। ११. रघुवरजयप्रकाश, विननाजी
 आढा, मूल्य ८-२५ न प। १२ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १, मूल्य ४.५०।

प्रसोमें छप रहे ग्रन्थ

संस्कृत-भाषा-ग्रन्थ-१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव-लघुपडित। २. शकुनप्रदीप-नावण्य-
 शर्मा। ३ बरुणाभृतप्रपा-ठक्कुर सोमेश्वर। ४ बालशिक्षा व्याकरण-ठक्कुर भगामसिंह
 ५. पदार्थरत्नमञ्जूषा-प० कृष्णमिश्र। ६ काव्यप्रकाशसंकेत-भट्ट मोमेश्वर। ७ बमन्त-
 विलास फागु। ८ नृत्यरत्नकोश भाग २। ९. नन्दोपाख्यान। १० वस्तुत्नकोश।
 ११ चान्द्रव्याकरण। १२ स्वयभूछद-स्वयभू कवि। १३ प्राकृतानन्द-कवि रघुनाथ।
 १४ मुग्धाववोव आदि श्रौक्ति-सग्रह। १५ कविमोस्तुभ-प० रघुनाथ मनोहर।
 १६. दशकण्ठबंधम्-प० दुर्गाप्रसाद द्विवेदी। १७ भुवनेश्वरीस्तोत्र सभाष्य-पृथ्वीधराचार्य, भा
 पद्मनाभ। १८ इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध। १९ हम्मीरमहाकाव्यम्-नयचन्द्रमूरि। २० ठक्कुर फेरु
 रचित रत्नपरीसादि (प्रा)

राजस्थानी और हिन्दीभाषा ग्रन्थ-१ मुहता नैरासीरी रयात, भाग २-मुहता
 नैरासी। २ गोरावावल पदमिणी चरुपई-कवि हेमरतन। ३ चन्द्रवशावली-कवि मोतीराम।
 ४ सुजान सवत-कवि उदयराम। ५ राजस्थानी दूहा सग्रह। ६ बरुणा-दादी वादर।
 ७ राठोडारी वशावली। ८ सचित्र राजस्थानी भाषासाहित्य ग्रन्थ सूची। ९ राजस्थान
 पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिरके हस्तलिखित ग्रन्थोकी सूची, भाग २। १० देवजी वगडावत और
 प्रतापसिंह म्होकमसिध वार्ता। ११ बगमीराम और अन्य वार्ताएँ।

इन ग्रन्थोके अतिरिक्त अनेक संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्राचीन राजस्थानी और
 हिन्दी भाषामे रचे गये गयोका संग्रहण और सम्पादन किया जा रहा है।

सञ्चालकीय वक्तव्य

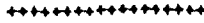
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानमे मार्च सन् १९५६ ई तक सगृहीत ४००० हस्तलिखित ग्रन्थोका त्रिपयवार सूची पत्र हम "हस्तलिखित ग्रन्थोकी सूची, भाग १" के रूपमे प्रकाशित कर चुके है और मार्च सन् १९५५ ई तक सगृहीत हस्तलिखित ग्रन्थोका विपयवार सूची पत्र मप्रति यत्रस्थ है एव शीघ्र ही प्रकाशित होगा। प्रतिष्ठानम सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिन्दीके साथ ही राजस्थानी भाषाके हस्तलिखित ग्रन्थोका भी ञडा संग्रह हो गया है, जिनके सूची-पत्रकी माग मबद्ध विद्वाना और अय जिज्ञामुधो द्वारा वरावर की जा रही ह। वस्तुतः देश विदेशमे सर्वत्र प्राप्य राजस्थानी-भाषा निबद्ध समस्त हस्तलिखित ग्रन्थोका सूची-करण एक विशेष महत्त्वपूर्ण काय है, जिसके लिये मुचाग प्रयत्न होना अपक्षित है। इसी दृष्टिमे हम राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुरम मार्च सन् १९५८ ई तक सगृहीत २१६६ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थोकी प्रस्तुत सूची प्रकाशित कर रहे ह। भविष्यम भी राजस्थानी भाषाके हस्तलिखित ग्रन्थोकी पृथक् सूचा प्रकाशित करनेका काय चालू रहगा और यथावसर वे मचियाँ विद्वानोके सामन आती रहगी। उम प्रतिष्ठानम अथवा अयत्र प्राप्त होवने वयत्कि सग्रहोकी सूचिया भी यथाक्रम उपमग्रह-सूची या पण्डितके रूपम प्रकाशित करते रहना हमारा लक्ष्य है।

प्रस्तुत सूचीके प्रकाशन-धयका अर्द्धांश केन्द्रीय भारत सरकारने प्रातोष नाषा विसास योजनाके अतगत प्रदान करना स्वीकार लिया है तदय हम आनाग प्रदर्शित करते हैं।

जिज्ञासु पाठक और अनुसंधित्सु विद्वान् हमारे इस प्रकाशनसे लाभान्वित होंगे, ऐसी आशा है ।

महाशिवरात्रि, वि स २०१६,
भारतीय विद्या-भवन,
वम्बई ।

मुनि जिनविजय
सम्मान्य मञ्चानक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर ।



राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

—

पुरातत्वाचाय मुनि जिनविजय द्वारा संपादित कतिपय ग्रंथ

- १ त्रिपुराभारती लघुस्तव्य — महाकवि लघुपण्डित-कृत
- २ गङ्गुनप्रदोष — प० लावण्यगमा कृत
- ३ करुणामतप्रपा — कवि सोमेश्वरठक्कुर कृत
- ४ बालशिक्षा ध्यावरण — ठक्कुर सग्रामसिंह कृत
- ५ पदायस्नमञ्जूषा — प० कृष्णमिश्र कृत
- ६ मुग्धावबोधोद्यादि श्रौतिक सग्रह — अत्रकविद्वयैतिरूप
- ७ प्राकृतानन्द — प० रघुनाथ कृत
- ८ ठक्कुर फेरू रचित प्रयासलि (प्राकृत)
- ९ उदितरत्नाकर — प० साधसुन्दरगण कृत
- १० राठोडारी गंगावलि — राजस्थानी भाषानिबद्ध ऐतिहासिक रचना
- ११ राजस्थानी सुभाषित सग्रह
- १२ हमीर महाकाव्य — नयचद्रसूरि कृत
- १३ मणिरत्नावि परीक्षा ग्रंथ सग्रह

विषय - सूची



विषय	पृष्ठ मग्ग्या
१ ग्रन्थ-सूची—अकारादि क्रममे	१-१०८
२ परिशिष्ट १ कतिपय ग्रन्थो का विशेष परिचय	१०९-१४३
३ परिशिष्ट २ ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका	१४४-१५२



राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान - राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-१]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कला यादि मातृका	निर्णय समय	पत्र संख्या	टिप्पणी
१	७७५३ (१-१५)	धर पाटी		१८३७	१३-२६	७ पाटी के नीचे नोति के डूहे हैं
२	४६०७(१)	होरकलाग	होरकलाग	१८७५	१८-२२	
३	४६१६(५)	होररतन	होररतन	१७वीं	७३-८३	
४	२८६३(७१)	प्रकावलि विर्णाहि मूरि कालिका		१८वीं	१३५ वा	
५	४४५२(५२)	प्रणपुरकण लखार		१७६८	१०८ वा	
६	१६२२	प्रजना चोपाई	पुण्यसागर	१९वीं	११	
७	४८१८	(सचित्र)		१७६८	२०	
८	४८६३			१९०२	४३	वि ४३, प्रारम्भ के १० डूहे पुष्पा-सागर वाली प्रति से मिलते हैं
९	१५२५	प्रजना चोपाई		१८वीं	२४	रचना १६८७ लि क नोनचय प्राम पीही, ऊदावत राय
१०	४०४०	प्रजना रास		१८४८	१७	प्रान्तिम पत्र प्रकृत
११	४१६४(१)	प्रजना सती रास		१८४६	१३	
१२	४०६३	प्रजना सतीनो रास		१६२६	२१	
१३	३५५३(३)	प्रजना मुहुरी चोपाई		१८वीं	२१	लि स्या नागोर
१४	३८६०			१८७७	१८	लि स्या होपाविसर रचना
१५	३८७६			१७४८	२७	म० १६८६ सोबोर में
१६	३६५६			१८७७	२७	लि स्या साकार प्राम
१७	३८७७			१७८६	२०	लि स्या वा(ला) रोवाली
					२१	वरा प्राम
						लि स्या उदयपुर
			भुवनकोति			

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८	३६६७	अजना सुदरी चोपाई	भुवनेकीर्ति	१८५६	२२	लि स्था बीकानेर
१९	२२२३	" "	" "	१७२२	२७	लि स्था सिखज
२०	४०३६	" "	" "	१६वीं	१८	अपर नाम पवनजयप्रिया अजना सुदरी हनुमत चरित्र
२१	४३१९	" " सचित्र	" "	१८६१	३४	चि स ४०
२२	७०४३	" "	" "	१८वी	१४	लि कत्रीं आर्या हीरा
२३	७२६१	" "	पुण्यसागर	१८५०	१२	बीकानेर मे लिखित
२४	१८२०	" भास	माल मुनि (?)	१७वी	७	
२५	३८६२	" रास	"	१७४७	१०	लि. स्था पोपाड
२६	६३६२	" "	भावविजय	१८६५	२५	लि स्था पोरबंदर
२७	१०६३	अतरिक्ष पार्श्वनाथ छंद	भावविजय	१८८२	३	मान कुआ मे लिखित
२८	२३७४ (२)	अग्ररीषी रास	माइदास	१९वी	१६-२०	
२९	३८६२	अवड विद्याधर रास	मगलमाणिक्य	१६६३	८३	* पालगजा नगर मे लिखित
३०	२२५२	अवाजीकी आरती	शिवानंद स्वामी	२०वीं	१	
३१	२२४०	" "	रघुलाल	१६०१	१	
३२	२८६३ (२२)	अविका गीत	सेवक	१७वी	१२ वां	
३३	२०४३	" भवानी छंद	जितचंद	१६२१	२	
३४	७८०	अदिका स्तोत्र	भवानीनाथ	१६वी	१	
३५	५२०२ (१)	अकवरनामा		१८८५	४-८७	जयपुर मे लिखित
३६	४६२०	अकवरनामा		१६वीं	१४	
३७	३५४६ (७)	अकल बहादरारी बात		"	४६-५६	

राजस्थान प्रान्तीय प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तशिल्प प्रव मूलो भाग-१]

क्रमांक	प्रथाक	प्रथ नाम	वर्तमान नाम	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३८	३५५ (२०)	प्रकलरी बाल	सुमति हथकरतलिय	१६वीं	१२६-१३२	* १० १६०१ में रचित
३९	११२४ (६)	प्रागडवल चोपई	सुमति हथकरतलिय	१६७६	३२-३६	* १० १६०१ में रचित
४०	६२१	प्रागसोचय तथा अक्रोचय विचार	सुमति हथकरतलिय	१६वीं	११७-१३५	* १० १६०१ में साबोर में रचित
४१	३५६२ (१५)	प्रयतदास लोचोरी चारता	सुमति हथकरतलिय	१६७०	५२	* १० १६०१ में साबोर में रचित
४२	६६४	प्रजापुत्र चोपई	सुमति हथकरतलिय	१६२६	१२	* १० १६०१ में साबोर में रचित
४३	३५०६	रास	सुमति हथकरतलिय	१६७०	१२५-१२६	* १० १६०१ में साबोर में रचित
४४	३५४६ (१८)	प्रजितसिखजोरी चारता	सुमति हथकरतलिय	१६वीं	१०६ वीं	* १० १६०१ में साबोर में रचित
४५	३५७३ (४२)	रो कवित	सुमति हथकरतलिय	१६४८	३२-३५	* १० १६०१ में साबोर में रचित
४६	३३६८ (५)	रो सोलोको	सुमति हथकरतलिय	१६वीं	६०-६१	* १० १६०१ में साबोर में रचित
४७	१०६५	प्रजित गानिसय	सुमति हथकरतलिय	२०वीं	२४-२७	* १० १६०१ में साबोर में रचित
४८	३५७१ (४६)	प्रजित गानिसय	सुमति हथकरतलिय	१६वीं	२३१-२३४	* १० १६०१ में साबोर में रचित
४९	३५७५ (६)	प्रजित गानिसय	सुमति हथकरतलिय	२०वीं	३४-३७	* १० १६०१ में साबोर में रचित
५०	३५७५ (६)	प्रजित गानिसय	सुमति हथकरतलिय	२०वीं	१६८ वीं	* १० १६०१ में साबोर में रचित
५१	२८६३ (११३)	प्रजित गानिसय	सुमति हथकरतलिय	१७वीं	६१-६४	* १० १६०१ में साबोर में रचित
५२	२८६३ (२७)	प्रजित गानिसय	सुमति हथकरतलिय	१७वीं	१-२	* १० १६०१ में साबोर में रचित
५३	३५४३ (१)	प्रजित गानिसय	सुमति हथकरतलिय	१७वीं	१६१ वीं	* १० १६०१ में साबोर में रचित
५४	२८६३ (१२७)	प्रजित गानिसय	सुमति हथकरतलिय	१७वीं	१-६	* १० १६०१ में साबोर में रचित
५५	२०४२ (१)	प्रजित गानिसय	सुमति हथकरतलिय	१७वीं	४६-७७	* १० १६०१ में साबोर में रचित
५६	४२८७ (१०)	प्रजित गानिसय	सुमति हथकरतलिय	१७वीं	४६-७७	* १० १६०१ में साबोर में रचित

भाव कवियण (?) गण गोत्रीय
प्रयत्नमस्त प्रु

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान — राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-१]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५७	५३१२	अध्यात्म गीता		१८८३	८५	अपूर्ण, प्रथम ८ पत्र अक्षरान्त, पाली में लिखित
५८	७५२४	अध्यात्मविचार		१८२७	१६	अन्त - श्रद्धेकरुण जेवतना जोपडा साथी
५९	७७४३	अध्यात्म रामायण भाषा	राजसिंह	१७८४	१-३२	* वाई सिरेकवरी लिखित, सावरमध्ये
६०	२२०३	अध्यात्म सार माला	नेमिदास	१८वीं	६	* स० १७६५ में रचित
६१	३५६७(३०)	अध्यात्म पुरा		१६वीं	१५२-१५४	
६२	२१४२(२)	अध्यात्म पुरेरा दूहा		"	५-६	
६३	५४१८(१६)	अन्तचतुर्विंशती कथा		"	१२१-१२४	
६४	४६१४(१८)	अन्त व्रत रास	ब्रह्मजिणदास	१८७१	२१२-२१८	
६५	३५४६(११)	अन्तराय साय(ल)लारी वारता		१६वीं	६३-६७	
६६	३५४६(६)	अन्तराय साय(ल)लारी वात		"	६८-७१	
६७	३८७८	अनाथी सर्षी	खेमो	१७५६	४	स० १७४५ में कल्याणपुर में रचित
६८	५१०८	अवजदी प्रश्न		२०वीं	८	अपूर्ण
६९	५४१८(३६)	अवजदी पासावली		२०वीं	१-१०	जैन धिनती सहित
७०	३७४२	" शकुनावाली		१८वीं	३	
७१	३७५८	" "	सतीदास	१८८२	२४	विक्रमपुर में लिखित
७२	२३७५(३)	अबोलानी वारता	सामलदास भट्ट	१६०६	१०४-१३१	सिंघासण बत्तीसी के प्रतर्गत
७३	११२४(७)	अभयकुमार रास		१६७५	१से४६	

भाग-१]

वर्ती आदि नातव्य

राजस्थान प्राञ्चविद्या प्रसिद्धान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग-१]

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विभाग उल्लेखनीय
७४	२८३२- (१२६)	अमरपंच सूत्रि गच्छ विणय	१६१७	१६०-१६१	१६० वें पत्र में प्राप ग्रन्थो के अवतरण है १६१ वें पत्र में प्राप ग्रन्थों के ३४ मुद्रियों की साक्षी है, पत्रान में लिखित निष्क होरकालग
७५	४४५२(१६)	प्रभिसारिका वणन गीत आदि	१८वीं	१८ वीं	प्रथम पत्र अप्राप्त सं० १६०६ में रचित
७६	११२४(१)	अमरसत राजा समवृद्धि मन्त्री रास	१६७५	२८-१८	सं० १६०६ में रचित सारण मध्य, ऋषि कचरा भास्कर शिष्य लिखित
७७	७१४१	अमरकत मित्रानव वारिय रास	१७००	२८	लि स्या दाण्या
७८	४३६१	अमरसिध्दजी को सितोको	१६१७	२७-२६	सं० १७०० में रचित, पत्रान में लिखित
७९	२३६८(२)	अमरसेन धमरसेन चौपाई	१६वीं	१-१०	सं० १६६६ में सांगानेर में रचित
८०	३२१३	अमरसेन धमरसेन चौपाई	१७७२	१५	सं० १६६७ में जासोर में रचित
८१	२०६७(१)	अमरसेन धमरसेन चौपाई	१८वीं	२०	२ ३ ४ ५ वें पत्र अप्राप्त
८२	३८६३	अमरसेन धमरसेन चौपाई	१८वीं	२३	२२८
८३	५११७	अमरसेन धमरसेन चौपाई	१८वीं	२३	२७८
८४	२०७८	अमरसेन धमरसेन चौपाई	१८वीं	२३	
८५	११२३(५)	अमरसेन धमरसेन चौपाई	१८वीं	२३	
८६	६६०२	अमरसेन धमरसेन चौपाई	१८वीं	२३	
८७	४२०६	अमरसेन धमरसेन चौपाई	१८वीं	२३	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
८८	५८३६	अश्रितसागर	सवाई प्रतापसिंह	१६वी	३३८	अपूर्ण
८९	६८३१	" "	" "	" "	४६७	
९०	३७२१	श्रयनाशकरण विधि आदि	" "	" "	३	रचना १७४१
९१	७१३७	श्रयवती सुकुमाल चौपाई	शातिहर्ष	१८६२	१६-२०	लिक धनरूप हुस, सऊपर- ग्रामे
९२	४०४८(२)	श्रयवती सुकुमाल स्वाध्याय				
९३	२८६३(४६)	श्रर्ष प्रकरण वर्णन	धरमदास	१७वी	८८वाँ	
९४	१८६०(६८)	अर्जुन गीता	रघनदास	१६वी	७६-७६	
९५	७७४४(२)	" "	मुक्तिनिधान	१७५८	३-८	
९६	२१३०	अर्जुन मातीरी चौपाई		१८६३	५	सुवाई गाम से लिखित
९७	२१५६	अरजन हमीररी वात	विनीतविमल	१६वी	५	
९८	४४६१	अर्बुदाचल श्लोक		१८वी	२	
९९	२८६३(३२)	अहेत भेद नमस्कार	जिनहर्ष सूरि	१६१६	६६वाँ	
१००	४०२४	अरहलक मुनि चरि		१६वी	६	
१०१	२८६३(७३)	अल्प बहुत्व विचार	नरहरदास बारहठ	१७वी	१३७-१३८	
१०२	८६३	अवतार गीता (चरित ?)	" "	१८११	६०४	पुनरासर में लिखित
१०३	२२१६	" "	नरहरदास बारहठ	१८२६	६१	
१०४	७७२४	अवतार चरित	" "	१७८६	२६७	
१०५	७७२६	" "	" "	१६१८	६४६	
१०६	७७३३	" "	" "	१६१४	४४५	हरिराम कबीरपथी द्वारा बदनीर से लिखित
१०७	७३८७	अवतीगज सुकुमाल चौपाई	जिनहर्ष	१६वी	६	

राजस्थान प्राथमिका प्रति ठान - राजस्थानी हस्तनिर्मित प्रथम पुस्तकें, भाग-१]

क्रमांक	संख्यांक	प्रथम नाम	हस्तनिर्मित पाठ्य	निर्मित समय	पृष्ठ संख्या	विषय उल्लेखनीय
१०८	१८३६ (१२)	प्रयती मुकुमाल चौधई	जिनहृदय	१८३१	५७-६५	रचना सं० १७४१
१०९	२१४६	,	,	१९वीं	८	
११०	२३७४ (६)	डात	धमनरेड		३१-३४	
१११	३५१० (२)		जनेय		३२	
११२	३५६७ (१६)	प्रतीस रामो		१९४३	१३३ वीं	
११३	७७४५	प्रयरीभा		१९वीं	३६	
११४	२०४१	प्रदप्रकार पुता		१८२६	२	
११५	४७८८	, राम	उदयरन		६१	
११६	५४१८ (१६)	प्रदमी कया		१९वीं	१४०-१४३	
११७	३५७४ (४८)	, स्वय	काति	२०वीं	२३६-२३८	
११८	४६१४ (२४)	प्रदानी भरतनो रात	शुभचंद्र	१८७१	२३१-२३२	
११९	३५७४ (७)	प्रदोपव तीयरराज रतवन	पद्मराज पाठक	२०वीं	३७-३८	
१२०	३५४३ (५)	वस-भाय संज्जाय		१८८२	६-१०	
१२१	१७६७	प्रसय ततोपा विचारदि	होरकला	१९वीं	१	
१२२	२८६३ (१३५)	बागमववन चौधई (कुमति विध्व सजाधिकार)		१६२१	२०२-२३६	रचना सं० १६१७
१२३	१०००	बागमसरोद्वार	देवचंद	१९३१	८१	
१२४	२०३५			१९१८	६७	
१२५	३५६२ (१६)	पाठयहोररा बूहा		२०वीं	१३७-१३८	
१२६	२१४०	बाणव सवि		१८२४	१२	
१२७	२१७७	"	श्रीसाठ	१६६६	१२	* लि स्या राजलक्षेस

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सन्ख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२८	२२२०	आणद सधि	श्रीसार	१८वीं	६	
१२९	३५७३ (३६)	"	"	१९वीं	८६-९७	लि स्या कृष्णगढ
१३०	३६७१	"	"	१७६४	७	
१३१	३८७९	"	"	१७७३	९	
१३२	५६०२	आत्मप्रकाश चौपाई	धर्ममन्दिर	१८वीं	२३	रचना १७४२
१३३	३५४८ (१०)	आत्मबोध सञ्ज्ञाय	रूपचन्द्र	१८४५	१-२	लिमरी ग्राम मे लिखित
१३४	५४१८ (४)	आत्मसबोध रास	वनारसी	१८वीं	८८-९१	
१३५	३५७५ (५२)	आत्मोपरि स्वाध्याय	नयविमल	२५०-२५१		
१३६	३५७५ (६८)	आदिजिन गृहली	शिवचन्द्र	"	२९६-३००	
१३७	३५७५ (९)	" चीनती	समयसुन्दर	"	४४-४६	
१३८	४९१४ (२०)	आदित्य व्रत कथा	सूरजी शाह	१८७१	२१२-२१९	
१३९	५३७६ (२)	" चार कथा		"	३१-४२	
१४०	५३७६ (१३)	" " (छोटी)		"	१९७-१९९	
१४१	१८१८ (२)	आदिनाथ हमचंडी	वर्धमान	१८वीं	४-५	
१४२	३५४९ (५)	आदीश्वर चीनती		"	४६-४७	
१४३	४४२०	आनदमदिर रास	ज्ञानविमल	१८वीं	२१३	उत्त ब्रह्मरत्न, भक्तिम पर अप्राप्त
१४४	७०९४	आनद आचक	श्रीसार	१८७०	२२	लि क. साव्नी रत्ना, जावडीमण्ये
१४५	४०४२	" सधि	"	१७५४	१५	लि क रूपमा
१४६	५४१८ (३२)	आनदाके दोहे		१९वीं	१७१-१७३	ब्रह्म स० ४१
१४७	११२२ (२८)	आवूजीनी छंद	रूपो कवि	"	२७वां	
१४८	३०२० (३)	आनूषरा छरीसी	महिगज	१८वीं	३-५	

राजस्थान प्रायद्विद्या मल्लिकार्जुन—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १]

[६]

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नाम	तिथि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४६	३०२०(२)	श्रावणपरा ब्योती	महाराज	१८वीं	१-३	
१४७	४६११(२)	श्रावणपरा चितावणी		१८वीं	४१-४२	
१४८	३२७३(४३)	श्रावणपरा		१८वीं	१०६-१०७	जीण प्रति
१४९	६४६	श्रावणपरा चोपाई		१७वीं	१२	
१५०	४०३४	श्रावणपरा चोपाई		१७वीं	३	
१५१	३०३०	श्रावणपरा चोपाई		१७वीं	१३	
१५२	४८२३(२)	चोपाई		१८वीं	६-११	
१५३	६४८	रास		१७वीं	३	
१५४	१००८	यकल		१७वीं	३	
१५५	२१३६	श्रावणपरा		१७वीं	१०	वीरमयूरसे रचित
१५६	६४१	गद्य		१७वीं	१०	
१५७	६०४४	स्तवन		१७वीं	६	श्रावण गद्य प्रमाण
१५८	३४६८	प्रकरण		१७वीं	६	
१५९	३४६८	श्रावणपरा चोपाई		१७वीं	१६	* स० १७०४में मुद्रित
१६०	३४६८(१०)	श्रावणपरा भाटीरा ब्रह्मा		१७वीं	७२-७३	रचित
१६१	३४७४(१२)	श्रावणपरा स्तव		२०वीं	४८-६२	
१६२	३४७४(४२)	श्रावणपरा स्तव		२०वीं	२०६-२११	
१६३	३४७४(४४)	श्रावणपरा स्तव		२२वीं	२२८-२३१	
१६४	६६४	श्रावणपरा स्तव		२३वीं	१	
१६५	४४४२(६)	श्रावणपरा स्तव		२३वीं	१३ वीं	
१६६	२१११	श्रावणपरा स्तव		२३वीं	३६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	रुर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र मस्या	विशेष उल्लेखनीय
१६६	७३४४	प्रावश्यक विधि प्रकरण	जिनवस्त्रभागि	१५वीं	६	
१७०	११२२(५८)	आशा पुरकरी माता छव	भावप्रभ	१६वीं	५१ वीं	
१७१	४०५१	आपाढाभूति चतुस्पदिका	कनकसोम	"	२	
१७२	६२७	आपाढाभूति धमाळ	"	१७७७	३	
१७३	५४१८(७)	" चौपई	"	१६वीं	६७-१०१	
१७४	६६६	" धमाळ	"	१७१४	२	
१७५	२१६७	" "	"	१८वीं	६	
१७६	३५७३(१०)	" "	"	१६वीं	३२-३३	
१७७	५१२१	" "	"	१८वीं	५	रचना १६३८
१७८	१०१२	" रास	ज्ञानसागर	१८१३	६	
१७९	२०१५	" "	"	१८वीं	१२	
१८०	२०६५	" "	"	१७६५	८	
१८१	२३७४	" "	"	१६वीं	७२-६६	
१८२	३२४५	" "	"	१८७४	६	
१८३	३६१६	" "	"	१७५१	५	
१८४	३५५३	" "	"	१६०५	१६०-१६४	
१८५	३६२०	" "	"	१६७१	३	४
१८६	३५४६(१६)	ग्रामायणजोरी वारता	हीरकलदा	१६वीं	१२२ वीं	
१८७	२३६१	आज्ञाविचार गीत	खेमराज	१७वीं	२३८ वीं	
१८८	२०७७	इयुकारो सधी	"	"	५	प्रथम पत्र अप्राप्त
१८९	२१६३	"	"	"	२	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	वर्ती श्राद्ध नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८०	३५७३	हनुकारी संगी	खमराज	१९वीं	६०-६१	किल्लगढमें लिखित
१८१	२२१७(१)	इफारासरी कथा—पद्य		१७६०	१-३	अपूर्ण
१८२	३५७३(४८)	इन्द्रिय परामर्शनात्मक		१९वीं	११९-१२०	
१८३	४५७३	इलाकुमार खोपाई	शान्तसगर	१६२८	६	
१८४	७२७३		"	१८वीं	६	रचना १७१९
१८५	४०४३			१८४३	५	
१८६	६५३०			१८वीं	७	
१८७	९०७	इसाचीकुमार राम		१७४९	१७	७ स १७१९में रचित जोगपुरमें
१८८	९४९			१७६५	५	
१८९	२०४४			१८७२	९	
२००	२०६३			१७६८	१४	
२०१	१५६६			१७९०	१७	
२२	२०९७			१७७२	१७-२२	
२०३	२३७४(३)			१९वीं	२०-२५	
२०४	३०३१			१८वीं	११	
२०५	१५२२(१६)	इस्कचमन		१८वीं	१० वीं	
२०६	७८६	ईन्दरी धाव	कुशरकुमार	१८४१	४	
२०७	७९९	ईन्दरी धाव		१९वीं	५	
२०८	११११(४६)	ईन्दरी धाव		१९वीं	६३-६४	
२०९	२०३९	ईन्दरीधारा	ईन्दर	१७वीं	२	
२१०	४९१४(२८)	उणतीसी भावना		१८७७	२४६-२४७	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-१]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२५२	६०५	श्री(उ)बा हरण -	प्रमानन्द	१६०३	७४	
२५३	३२८६	"	"	१६वीं	३७	
२५४	३८४१	श्रीवधपुराण भाषा गद्य	ईसरदास	"	१२	
२५५	२३०६(३)	कृष्णध्यान	किसनदास	"	१४-१५	
२५६	२१००	कृष्ण चारमास	पृथीराज	१८वीं	१	
२५७	१८६८(४)	कृष्णसकम्पनी बेली	"	१७६२	१-६७	
२५८	२०७०	"	"	१७६६	४६	
२५९	२०६९	"	"	१७६९	३३	
२६०	३५५७(२)	" सटीक	"	१७६१	१-६६	
२६१	३६४२	"	"	१७३८	८१	
२६२	३६४३	"	"	१७६८	३५	
२६३	३५४८(४)	"	"	१८वीं	१-७३	लि.क. भाग्यविजय
२६४	४८३८	"	"	१७४५	२४	लि.क. प्रीतसौभाग्य
२६५	४४५२(४७)	"	"	१८१७	८५-१००	चित्र १
२६६	७७६६(४)	कृष्णलीला वर्णन		१८५६	२-७	
२६७	६४२५	कृष्णजीरो व्याहलो		१६वीं	४	
२६८	३४७०	"	पदमकवि	१८वीं	८	
२६९	७०३०	"	श्रुतुनजी	"	६४	
२७०	२८२९	कृष्णस्मरण तथा श्रकलवेल	जीवो ऋषि	"	२	
२७१	२०५६	कवकाबत्तीसी		१६वीं	२	
२७२	२३६८(१६)	"		"	६०-६३	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२७३	३५७३ (५७)	वृषकाभास	विद्यावितास	१६वीं	१५४वीं	
२७४	७४४४ (२०)	कश्मलास-श्याम	श्रावक योगी	१८८५	३२४-३२६	
२७५	५२११	कण्ठवाहीकी बगवतसौ		१८८४	११४	*
२७६	२०४७	कयसौ	ज्ञानविस्तार	१८८४	२	अन्तिम पत्र अप्राप्त
२७७	४०४६	बनकावत, चौपाई	जिगह्व	१६वीं	२३	*
२७८	७७३० (२२)	कण्ठकुतूहल		१८वीं	६वीं	
२७९	४०४७	कपोत कपोतणीरी वारता		१८४४	१२	लिक रामदास
२८०	६६३७ (२)	कबीरजीकी वाणी	कबीर	१८११-	१०६-१८७	
२८१	३५५७ (१)	सात्वी		१८१६		
२८२	२०३२	बयवसा चौपाई	जयराम	१६वीं	१-११	
२८३	२०६०			१८२३	३१	
२८४	२१८४			१७७६	३६	
२८५	२२०६			१८वीं	२१	
२८६	३८७४			१७६८	१४	
२८७	३६२१			१८५५	१६	
२८८	४०४८ (१)	कयवसा चौपाई	जयराम	१८वीं	१८	
२८९	६७३६		गणसागर	१८६२	२२	रचना १७४१
२९०	३८७५	रास		१७१६	१०	लिक भरथ
२९१	४०४९			१८वीं	१५	प्रथम पत्र अप्राप्त
२९२	२०६२	करण्ड चौपाई	मतिनाबर	१७वीं	५	लिक श्याम हीर

क्रमां.सं.	गयां.सं.	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२६२	३७६७	करणकुतूहल सार		१८वी	६	भाषामें महासाधन प्रकार वर्णित हे
२६४	३७४६	"		"	२६	
२६५	५६७६	कार्यप्रणयपंचक	मतिचंद्र	"	११२	
२६६	१४०३	कर्मविपाक		१६वी	७	भाषामें फलादेश वर्णित हे
२६७	१४४४	"		१६१६	५	
२६८	३८१०	"		१८१६	५	
२६९	४६१४ (३३)	" काण्ड	गुणकीर्ति	१८७७	२५१-२५५	
३००	२०८८	" रास	वीरचंद	१८२०	६	
३०१	३५७५ (१६)	करमच्छतीसी	समयसुन्दर	२०वी	८८-९१	मुलतानमें रचित
३०२	११२३ (१२)	करसावाढ	लावण्यसमय	१७वी	६६-७१	*
३०३	४४२५	करावती चरित्र	विजयभद्र	१६७६	४	२२२ पत्र अप्राप्त
३०४	३८७२	कलावती चोपाई	रायचंद	१८७३	५	
३०५	६३३	कलियुगमाहात्म्य		१८६८	२	
३०६	४०२०	कविकल्पलता	श्रीसार	१८७८	६	*
३०७	२३१४	कवित्त		१८वी	१	
३०८	३४३०	"		१८वीं	३	
३०९	३५६२ (११)	"		२०वी	६७ वां	
३१०	३५६७ (१०)	"		१६वीं	११२ वां	
३११	४४५२ (५४)	"		१८वी	१०६-११०	
३१२	४४५२ (७३)	" गीत आदि		"	१२२ वां	
३१३	४४५२ (६५)	"	उदेराज	"	१३१ वां	

क्रमांक	क्रमांक	ग्रन्थ नाम	रत्नों काि भातय	निधि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
३१४	४६१५(२)	कवित्त गीत प्रादि	केसरसिन्धु	१८८७	२०-४१	
३१५	११२२(६६)	सुन्दर गृह्या		१८८८	८८ वी	
३१६	३५४६(३)	जेठवारा गृह्य प्रादि		१९वीं	३१-३६	
३१७	३६२७(८)	गृह्या सयट		१८वीं	६८-१०१	
३१८	४४४२(१०३)	गृह्या प्रादि		१९वीं	१३६-१४१	
३१९	३६६७(१४)	पद्य गृह्या	जिनहृद्य	१८५७	१०	
३२०	२०८५	भाष्येती	जवरान	१८वीं	२४-२६	
३२१	४४५२(२६)	"		,	६१ वी	
३२२	४४५२(४५)	संख्या प्रादि		,	१२६ वी	
३२३	४४५२(६६)	दृष्टावलीयक		१७वीं	१४३ वी	
३२४	४४५२(८१)	कवित्तसम्प		१८८७	३६८-४०६	*
३२५	४६१४(१६)	काण्वरी सखल		१८८२	१४	
३२६	२१८३	कान्त कठिवारा घोषाई	सालसागर	१८८२	६५-६७	
३२७	३४५५(५)	,		१९वीं	६	
३२८	३८७३	,		१८४१	८	
३२९	४०५१	,		१८वीं	८	
३३०	४०५०	विवाहसो		१७०२	८	
३३१	३४६२(२)	कामा नगरको काण्व		२०वीं	१२-१६	*
३३२	१८२१	कालक कथा		१८वीं	६	
३३३	२१६५(१)	कालकापाय कथा		१९वीं	१-७	
३३४	७३७७	कालसाग भाषा	सकमीपदसभाणि	"	७	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३३६	२७८४	कालिका स्तोत्र	जयसाल	१६२७	२	
३३७	३५४७ (८)	कालिकाजी रा बृहदा-सोरठा	तघी	१६वी	८६-८७	
३३८	२३२६	" स्तव	चन्द्रवत्स	१८६४	१	
३३९	२७८५	" स्तोत्र तथा श्रारती	जयसाल	२०वी	२	
३४०	२२४६	" की श्रारती		"	१	
३४०	४०५२	कालीनाग वसण पवाडो		१८वी	७	
३४१	५४३०	काव्यविधान		१६वीं	३३-४०	जैन श्लोकको मत्र मान कर उसके प्रयोग का वर्णन किया गया है
३४२	२३७५ (२)	काळ घोडा विक्रमजीतनी वारता	सासल भट्ट	२०वी	६१-१०४	*
३४३	३८८०	किसनजीरी डाला		१६वी	८	
३४४	११३१	कुडलियाबावानी	धर्मवर्द्धन	१८०७	६	
३४५	११५२	कुतुबशाह		१६७०	६	*
३४६	७७५२ (७)	" री वात		१७२०	६६-१०४	लि.क माधो
३४७	२१४६	कुतुबुद्दीन शाहजादारी वारता		१६०२	१२	
३४८	७७२१ (१०)	"		१८२५	१६६-१७७	
३४९	३५६७ (२७)	कुयति रासो	हीरकलश	१६वी	१४७-१४८	रचना १६७७
३५०	५६६१	कुमति विध्वंसण चौपाई	ऋषभदास	१८८०	१०८	
३५१	६६३	कुमारपाल रास	हीरकुशल	१७वी	१८	रचना १६४०
३५२	१५६४	"		१८६१	१-३४	लि.क कल्याणसौभाग्य
३५३	४६०४ (१)	केरडावाली चौथमाताजीरी कथा				

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान- राजस्थानी हस्तलिखित एवं मुद्रित ग्रन्थों का विवरण-१]

क्रमांक	पृ.पा.अंक	ग्रन्थ नाम	कर्ता या लिखित	विवरण	पत्र संख्या	विषय
३४४	७१७२ (१)	देवाट राजाकी कथा	विशाराम (?)	१६३६	२७	
३४५	३५७३ (४२)	केदारपुर कादि बरक		१६वीं	१३५ वीं	
३४६	११३३ (१४)	केपी मोक्षम सोच		१७वीं	७५-७६	
३४७	३५७५ (७७)	प्राच्यनाथ		२०वीं	३१६-३२६	
३४८	११२२ (४६)	पट्टेसानी छंद		१६वीं	८२ वीं	
३४९	७३६	कोष्णान भाषा (काम विलास)		१६१२	११	ग्रन्थ में 'काम समूह' नाम है
३५०	७३८			१८१५	१२	
३५१	१८३४		नरयण	१८वीं	५	
३५२	२८२३ (४५)	परतरंगनाम सतसवन	हीरकान्त	१७वीं	४ वीं	
३५३	२८२३ (६०)	परतरंगिणी-द्योसति छंद	हीरकान्त		११४ वीं	
३५४	२८२३ (६)	माल-क्यादि विचार	हीरकान्त		१३२ वीं	
३५५	४४१८ (३०)	विष्णु की रासा		१६वीं	१६८-१७०	
३५६	४०६०	लोधी मधु-वलाहरी यात		१८वीं	६	स. ३३ के समान
३५७	२१४३ (२)	वो(सो)क विजरी यात		१८६०	४-७	
३५८	४४१२ (१३)	सज्जला माताजीरो मोसणो	मान बघोसर	१८०८	१६ वीं	
३५९	४६८८	पट्टेसति		१८४८	६	लि. क. चतुर्दशज्योतिष
३६०	४६८९			१८४८	६	लि. क. सामानिनाम
३६१	६४५२ (८४)	तेतरवालापीरो छंद	महिमोदय	१८४८	१२५ वीं	
३६२	३४५० (५)	सा-माजीरो छंद	कवि देव	१८वीं	३६-४०	
३६३	२३७४ (१२)	सममानो रात	सखीराम	१६वीं	४३-४७	
३६४	१८३६ (५)	पडरमान चौमालीय		१८५७	२३-२७	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
३७५	३५७५ (१४)	खडकमुनि चौढालीयु	जिनचन्द्र	२०वी	६६-७७	
३७६	३५७३ (३८)	गडढी पारुखं स्तवन		१६वीं	१०१ वी	
३७७	४६१४ (१४)	गजमुनि वीनती		१८७१	२०८ वी	अपूर्ण
३७८	६४३७ (२)	गर्जासिंहकुप्रर कथा	नलसूरि	१८वी	२४-४८	
३७९	३५७३ (११)	गजमुकुमाल गीत	केसव	१ वी	३३-३४	
३८०	३६२३	" छढालीयो	शुभवर्द्धन	१८वी	३	
३८१	१८१६	" डाल			१-४	
३८२	६४७	" विवाह		१७८०	७	
३८३	२०८२	" सधि	मूलान्दधि	१६६५	८	
३८४	३५७५ (२२)	" स्वाध्याय		२०वी	६७-१००	अपूर्ण
३८५	४०५६	गजमुकुमाल चरित्र		१८वी	१८	लि.क. सरूपचद
३८६	६५४१	" रास		१८८७	८	
३८७	६७५	गणधरवाद बालाबोध भाषा	हीरकलश	१६वीं	११	
३८८	२८६३ (२३)	गणविचार चोपाई	महिमोदय	१७वीं	१३वां	
३८९	३४४०	गणित ग्रंथ साठीसो दोहा		१७५७	६	
३९०	४४५२ (६६)	गणेशजीछन्द श्रमृत्ध्वनि		१८वीं	१२० वी	
३९१	३८११	गतेष्टकरण विधि	रामचरन	१६वीं	२	
३९२	३५६२ (१)	गरव चिन्तामणी	श्रीसार	१६५६	१-११	
३९३	६०४१	गर्भोत्पत्ति स्तवन		१८वी	३	
३९४	२२६६	गामातेलीरी वात	विनंचद	१६वी	२	
३९५	३५५३ (५)	गाफल लावणी		"	१५७-१५६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नात्वव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
३६६	३५५६(५)	मि तोरी क्या		१६वीं	६६-७०	
३६७	३५५८(२)	वात		१८५६	१-११	
३६८	५४५८(४)	भारता		२०वीं	१-२७	जगमाल भारता
३६९	३५६२(१८)	गणेशकी भारता	कल्याण	१८८८	१४६-१५१	
४००	८८४	मिरनारकी गजल		१८८८	३	
४०१	४६१५(५)	गीत		१८८७	१३४-१३५	
४०२	४८१५(१५)	कवित्त		१८८७	३६५-३६७	
४०३	४१३६	भोलशोवि-च भागो	टी चत-पदास	१८वीं	४७	अथ पत्र प्रभास
४०४	७४५६	स-भाय			४	
४०५	४४५२(६०)	गीत सवया प्रादि	जयानसिंह प्रादि	१२८ वीं	१२८ वीं	
४०६	२२६०	सग्रह		१२	१२	
४०७	४६०४(३)	गीता माहात्म्य		६५ वीं	६५ वीं	
४०८	२८६३(१०३)	गुजरांत सवाव		१६३ वीं	१६३ वीं	
४०९	११२३(२३)	गडी पारसनाय छ-व	कु-गल्लाम	१७वीं	८२-८३	
४१०	११४३(२)	गुण एकावती माहात्म्य	सांगा मडू	१६वीं	३८-६८	
४११	४०२२	गुणकरु गुणावली घोषाई	अपि दीप (?)	१८२१	२२	लिक प्राप्ता सायो
४१२	४०५३			१६वीं	२७	
४१३	४८२०	रास		१८७४	२०	
४१४	६०२७	"		१८३६	१५	स १८५७ में रचना
४१५	६५४२	"		१८३३	३६	लिक तबनिधिबिजय
४१६	२१०३	गणरत्नाकर छ-व	सहजसुंदर	१७४६	१६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
४१७	२०२३ (३)	गुणसागर भास		१७३४	३-६	
४१८	३५६२ (५)	"		१६६७	२१-३४	
४१९	४०१३	गुणहरिरस		१७६६	७	
४२०	३५१४	गुणावली कथा चौपाई	ज्ञानमेख	१८वीं	८	
४२१	२०३३	"	"	१७४३	७	
४२२	३८८१	"		१८४८	२४	स १७५७ से रक्षित
४२३	३६६८	"	दीपो	१८७१	२६	
४२४	६५०	गुणावली गुणकरडरी वात		१८वीं	२-४	
४२५	४०५५	" चरित्र चौपाई	ज्ञानिहर्ष	१८७४	२१	रचना स १५१३
४२६	६०६	गुणावली बुद्धिप्रकाश रास	श्रुतसागर	१७वीं	१०	
४२७	३६२४	गुणावली रास	गजकुशल	१७१८	१८	
४२८	५०६४	"	"	१६वीं	२६	
४२९	३५६४ (५)	गुरुवार		१८६१	२३-३२	
४३०	१६८४	" विचार		१७वीं	३	चुटित पत्र
४३१	५१०३	गुरुचेलारी कथा		"	२	
४३२	३५७५ (७३)	गुरुजी गृहली		२०वीं	३०७ वाँ	
४३३	२८६३ (१२१)	गुरुपरम्परा गुर्वावली	हीरकलश	१७वीं	१७६-१७७	
४३४	७१८०	" डाल	ज्ञानविमल	१६वीं	१२	
४३५	३५७५ (२५)	गोडीजिन स्वधन	प्रीतिविमल	२०वीं	१०४-१०६	
४३६	१०६२	गोडीजीरो छन्द		१८६४	५	
४३७	३५७५ (१०)	गोडी पाठवँ जिन चौवा स्वधनस्वधन	समयराग	२०वीं	४६-४६	

राजस्थान प्रायश्चित्त प्रतिक्रान्त-राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ सूची भाग-१]

क्रमांक	प्र.पा.क्र.	ग्रंथ नाम	कर्ता/श्राद्धि/मातृव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विभाग उल्लेखनीय
४३८	११२२(४६)	गोपीनाथ छद्म	रूपसेवक	१९वीं	७४-७५	
४३९	२०५१		प्रतिविमल	१८वीं	९	
४४०	२२११(१)	बद्ध स्तवन	नमविजय	१८३८	१-२	
४४१	२०४२			१८२९	४	
४४२	५४५८(३)	गोतम रामा	जिनसूरि	१८३८	४	
४४३	७४६७	गोतमपद्मना बोपाई	समयसुन्दर	१७५६	१३	लि.क. मुनि गणजी
४४४	६१२८	, बालाबोय	उदयवत	१८८३	६८	
४४५	५४३६(७)	गोतम लघुस्तवन				
४४६	५०६९(२)	स्वामी राम				
४४७	५४३६(३)					
४४८	७४४४(११)	गोतम रासो		१९०६	२८-४०	
४४९	३४९९				३-८	
४५०	३४५६(३)	गोपीचंद राजापद		१८८५	१७-२६	
४५१	३०२७	गोरलनाथजीरो छद्म		१९वीं	२०५-२१२	
४५२	४४५२(५)	गारलप्रमोव भाया			१	
४५३	३४४६(५)	पतवा			१० वीं	
४५४	२१६९	गोरभजीरो छद्म			२	
४५५	२३६०(३)	गोरामातल कथा	जटमल	१८वीं		
४५६	३४५५(२५)	को वात	"	१९वीं	१० वीं	
४५७	३३८४	रो वात	भाम्यविजय	१८२८	११ वीं	
४५८	३३८५	बोपाई	हेमरतन	१९वीं	९	
					११-१७	
					१५१-१५६	
					३१	
					२९	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सत्या	विशेष उल्लेखनीय
४५६	३०२६	गोरावावल चौपाई	लढ्योदय	१७६५	२५	स १७०७मे रचित
४६०	३३२६	" "	"	१७५६	४१	१४ कृतियोंका संग्रह
४६१	४१५१	कथा आदि गुटका	हेमरतन	१२वीं	६०	सादहीमे रचित
४६२	७७५२(६)	" "	जटमल	"	५७-६५	लिक जयसोभागय
४६३	४६२४(२)	" "	माधो	१७२७	६-१५	
४६४	२३७७(५)	गोरावणो वीरनो सपवरो तथा घोडावर्णन	शुभ श्रावक	१६वीं	३०-३१	
४६५	३५७५(४१)	गौतम प्रवर्णोत्तर स्तवन	शुभ श्रावक	२०वीं	१६६-२०६	
४६६	१२३६(१६)	गौतमरास आदि	लावण्यसमय	१२३३	११५-१४३	
४६७	१२३६(२)	गौतमाष्टक		१६वीं	४०-४१	
४६८	६१२	ग्रहण विचार		"	३	
४६९	१७७७	" "		"	२	
४७०	२५७४	" "		"	२	
४७१	६४२	साधन		"	२	
४७२	६७४	अनेक विचार		"	२	
४७३	२२६३(१४)	ग्रहभाव फल		१७वीं	६	
४७४	३२१४	ग्रहलाघवसारिणी विधि		१७वीं	६	
४७५	३२४२	ग्रहस्पष्टकरण विधि		१६२२	६	
४७६	५२७६	ग्रहणविचार टीका		१६वीं	३	
४७७	४७२६	घटीज्ञान		"	१	
४७८	४४५२(७६)	घूसूचक		"	१२३	

उत्तक सच्यनी शकुन-विचार,
अन्तमे नाहरयान राजसिधोतरो
धरु है

राजस्थान प्रायद्विधा प्रतिष्ठान - राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग-१]

क्रमांक	प्रथांक	ग्रन्थ नाम	वर्तमान आदि भातव्य	निधि समय	पत्र मस्या	विशेष उल्लेखनीय
४७६	३५७३ (८)	पौडावपान तथा वयाविणन दूहा		१६वीं	३०-३१	
४८०	४६२४ (१०)	घोडारा बलाण		१७६३	११-१२	
४८१	४४५२ (६३)	वणाय		१८वीं	१३० वां	
४८२	१८१७	चउपरवीचउणई	सामयसुवर	१६वीं	२०	
४८३	७७५	चउसठी (योगिनी) छ द तथा		१६वीं	१	
४८४	४१२३ (२)	जावस्था छूब		१८वीं	२-११	
४८५	३५७५ (७४)	चफकैवली		२०वीं	३०७-३०८	
४८६	७१५४	चकचरी सावन		१८७७	३१	
४८७	२८६३ (३६)	चमुम कुटच उकिरण		१६१६	८४ वां	
४८८	२८०३ (३३)	चमुविनाति जिनगणधर सख्या बीनती	श्रीरक्षण	१७वीं	६६-६८	
४८९	५३७६ (२१)	चमुनिशति जिनपचकल्याणक स्तोत्र		२४३-२४८		
४९०	६६१२	चर्चा समाधान		१६वीं	२३६	
४९१	४६१४ (५७)	चरित्ररत्नत्रय गीत		१८७७	३१२-३१३	
४९२	६५६	चातुर्मासिक श्याख्यान बालाचकीय	सूरचन्द्र	१६वीं	२८	लिंक टक्कच
४९३	३३८३			१८वीं	१२	
४९४	६३६३	व्याख्यान पद्धति		२८		
४९५	५१०५	चार जणारी बात		१७वीं	१२	
४९६	७२३१	चार भावना (गद्य)		१६११	२८	
४९७	६२६२	चारिण्यक मुडचरित्र		१६वीं	३	
४९८	३५६५ (१०)	चावडारो छूब	सामयसुवर चुनोलाल	१७वीं	११	
				१६७६	२७	प्रथम पत्र धयात
				२०वीं	६६-६७	रखनाथल-सोभन

क्रमा क्र.	ग्रंथा क्र.	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
४९९	३२०५	चित्तोडकी गजस	खेतल	१८वी	२	स. १७४८में रचना
५००	३५५०(४)	"	"	१९वीं	३७-३९	
५०१	४४५३(३)	"	"	१८वीं	६	
५०२	४८०६	"	"	१९वीं	२	
५०३	४८२२	"	"	१७८३	५	३रा पत्र अप्राप्त
५०४	३५४६(१७)	चित्तोड, जोधपुर, अजमेर आदिकी ऐतिहासिक हकीकत	"	१९वीं	१२३-१२५	
५०५	४४५२(१०)	चित्रवन्ध काव्य	रामविजय उपाध्याय	१८वीं	१३४-१३५	
५०६	३८८६	चित्रसेन पद्मावती चोपाई	जीवराज	१९वीं	१५	
५०७	३५७३(५३)	" सभूत चोढालीयो	ज्ञानसागर	"	१३६ वां	
५०८	४७९७	" चौपाई	ज्ञानसागर	१८वीं	३५	
५०९	२८९३(७८)	चिहुत्तरजत्र विधि	हीरकलश	१७वीं	१४१ वां	
५१०	४२८७(१४)	चेतन गीत	मनराम	१८वीं	११५-११६	
५११	७८१०(३)	चेतनवासकी वाणी	चेतनदास	"	२३०-२९८	
५१२	२३६८(११)	चैत्यवदन	कमलविजय	१८४८	४० वां	
५१३	४४५२(६१)	चोवोली राणीरी कथा	जिनहर्ष	१८वीं	११८	
५१४	७४४४(१३)	चोढालियो (दानशील तपसवाद)	समयमुन्दर	१८८५	२४५-२५३	
५१५	३१५८	चौथकी कथा		१८३३	४	
५१६	२१३४	" मातारी वात		१९वीं	२	
५१७	३२७७	" " कथा		१९वीं	४	
५१८	३५४७(१४)	" " "		"	९२-९३	

राजस्थान प्रायश्चिदा प्रतिष्ठा—राजस्थानो हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग-१ }

क्रम ।	पृष्ठासू.	ग्रन्थ नाम	वर्ती भाषा/जातव्य	लिखित समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
५२६	३५६७(३२)	घोषको श्या		१६वीं	१३८-१४१	विलासार्थे लिखित
५२७	४०६१			१८वीं	३	
५२१	३५६३(१)	घोषोप एकादशी कथाएँ		१७८६	१-६०	
५२२	२८६३(५३)	, गति प्राणति विवरण		१७वीं	८६-६०	
५२३	६०६७	घोषोप चौक	प्रमत्त कवि	१८५३	७	लि. क. भायुकोति, जयपुर
५२४	६६१८	घोषोप तीयकरोकी पूजाविधि		१६वीं	६६	
५२५	१८३६(११)	दंडक स्तवन	ग्रामविजय	,	४८-४२	
५२६	३२०४	घोषोती स्तवन	जिनराज	१७६२	६	लि. श्या काजू
५२७	३५७५(१)		देवचंद्र	२०वीं	१-२४	
५२८	३५७५(३३)		जिनराजसूरि	,	१४२-१४४	
५२९	११२२(२६)	घोषोप सातना कवित		१६वीं	२८ वीं	
५३०	२३६८(८)	घोराली सोल प्रास्ताविक आदि		,	५१-४२	
५३१	७४२५	घोसठ मागणा विचार		,	१३	
५३२	२३६०(७)	चंद्रकवररी घात		,	४४-६१	
५३३	३५५५(२६)			,	१५६-१५६	
५३४	३५६२(१२)		हंस कवि	१६७०	६८-८१	
५३५	३५७३(५४)	, चारता		१८८	१०७-१०८	
५३६	४१४८			१८१६	१८	
५३७	४६१५(१०)			१८८७	३४८-३६०	
५३८	४६११(३)		कविराय	१८३०-	१-६	
				१८३२		
५३९	५३४१(२)	तथा एकट कवित		१६वीं	५८-६७	

क्रमांक	प्रपाठक	ग्रंथ नाम	वर्तनी श्राद्धि नासक्य	निधि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५६१	३८८२	चवरागा रास	सुधिशरवि	१८२७	६१	
५६२	३६७०	,	,	१८६६	१३०	
५६३	३६२५(१)	,	,	१७७०	५३	अतने पाखनाय मौताके ३६ पद्य लिखे हैं
५६४	३६६६	,	सोहनविजय	१८२१	७६	
५६५	४०५६	,	,	१८१०	८२	
५६६	६३४६(२)	" नो रास	,	१६०६	७०-३५४	लिक हरकचन्द पाड
५६७	१२४६	,	,	१८४७	६८	स० १७८ में रचना
५६८	७४२०	,	विदमजी	१८४६	१२३	लिक पथीराज
५६९	११४३(१)	चदरायरी वात		१६वीं	२०-३५	
५७०	६६१	चमृहणाधिकार	होरकल्प	१७वीं	५	
५७१	२८६३	चमृगुण सोल स्वग सलनाय		१७वीं	२४३-२४४	स० १६२२में राजलवेसरमें रचित
	(१३८)					
५७२	३४७५(६४)	चद्रप्रभाजितसुवन	गव्यद्व	२०वीं	२६६-२६७	
५७३	७४०७	चद्रलया चौपाई	मतिकुणल	१७७८	१८	
५७४	६५५	चद्रलहा चौपाई	हयसूति	१७वीं	५	
५७५	१८२६		मतिकुणल	१६७५	२६	
५७६	२२२६		,	१७६५	२६	
५७७	३४०३		,	१८३०	२३	
५७८	३४३७		,	१६वीं	१२-३६	लि स्या नापासर
५७९	३४५०(३)		,	१६वीं		

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
५८०	३८८४	चद्रलेहा चौपई	मतिकुशल	१७६१	२७	लि स्या गोपाड
५८१	३६२६	"	"	१७७७	१६	लि स्या बं(लै)रवा
५८२	३६७१	"	"	१७७४	१३	
५८३	४०६०	" चरित्र चौपई	"	१८०५	१६	स १७२८ने रचना
५८४	४७८६	" रास	"	१६वीं	२४	
५८५	४७६५	"	"	१८वीं	२६	
५८६	२२११	चपक श्रेष्ठि चौपई	समयसुन्दर	१७वी	१०	
५८७	५०६६	चद्रायणा कथा	करमचन्द	१८वी	२	
५८८	५३७६ (१८)	"	मलयकीति	"	२११-२१३	
५८९	४७४६	चद्रार्का	सागरचन्द्र	"	११	
५९०	५०६१	छत्तीस अघ्ययत गान	"	१६४२	१५	लि क हर्ष
५९१	३५४६ (१९)	छत्तीस राजकुल नाम	"	१६वीं	७४ वां	
५९२	२८२३ (१०८)	छाया ज्ञान	हीरकलरा	१७वीं	१६५	दौरकलराद्वारा लिखित
५९३	२८६३ (११६)	छिन्नप्रवइ जिन नमस्कार	"	"	१७४-१७५	
५९४	२८६३ (४३)	"	"	"	८६-८७	
५९५	४४५२ (७८)	छोक चक्र	द्योतरदास	१८वीं	१२३ वां	
५९६	४३०८ (३)	द्योतरदासजीका सवैया	"	१६वीं	४४७-४५५	
५९७	३६७०	छूटक दूहा	मेघराज	१६वीं	३	
५९८	६३२	ज्योतिष (सार दूहा)	"	१८६६	४	
५९९	३५४७ (३)	" दूहा	"	"	१ ता	
६००	३५४७ (११)	"	"	"	८६-९०	

राजस्थान प्रायविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १]

विशेष उल्लेखनीय

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जानक्य	निधि समय	पत्र संख्या	लिंक
६०१	४८४७	ज्योतिष वार्ताएँ	कवि कूपाराम	१८४३	३०	लिंक रामकुमार
६०२	१४२८	, सार		१९०७	४७	*
६०३	३४४६(१३)	जलरौ मुलरारी वारता	लीलो	१९४०	२ रा	*
६०४	११२२(३)	पगडूरी छन्द		१९४०	१० वीं	*
६०५	११२२(१८)	साहसो जस		१९२४	३२-४६	
६०६	३४४४(२१)	जादेव परमाररी वात	कमाली भाटण(?)	१९४०	१-३५	
६०७	४४४२(६४)	जादेव पमाररा कवित्त		१९३६	७१-८८	अपूर्ण
६०८	७१७२(२)	री वात		१९३७	४४	
६०९	७७५३(१४)			१९७५	४४	
६१०	४९१६(१)	, (कमग्रन्थालय)		१९४०	१२१ वीं	गारवाणके यखतसिंह श्रीर
६११	४४४२(७१)	जड भरथरा कहरा श्लोक आदि		१९४०	६	जयपुरके राणाका यदु वणत
६१२	६२०	जमकुण्डली विचारवि		१९४०		
६१३	४८४८	गणपती गणित			२६	
६१४	४४२४	, प्रकार		१७५६	२५	
६१५	६४३४	जम्बू अजन्मण		१८८०	५८	प्रथम पत्र अप्राप्त
६१६	७४२७	, गुण रत्नमाल		१९४०	३३	
६१७	४२७३	"	प्राणव जैठमल	२०४०	३६	
६१८	६२६८	चरित्र रास	पदमचन्द्र मनि	१९४०	३३	लिंक परताबाई तथा अजमेर
६१९	४१५७	,		१९७२	५५	
६२०	७०४६					

क्रमसूचक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता प्रादि ज्ञातव्य	तिथि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
६२१	७५३३	जम्बू चरित्र रास	वीरमुनि	१७९६	६०	
६२२	७६०३	"	"	१८९१	११३	
६२३	९२४	जम्बू पृच्छा रास		१८८९	१३	स १७८८में पाठ्यमे रचित
६२४	१०१०	"		१८१९	१२	स १७२८में पाठ्यमे रचित
६२५	५३७६(३)	जम्बू स्वामी कथा			४२-८०	लि. क विहारी, बूरुसध्वे लिखित
६२६	७३५२	"		१८६६	२०	लि. क. माणकचंद
६२७	६७३५	"		१८५६	७	
६२८	६७८१	"		१९वीं	४	
६२९	३३७९	चरित्र		१७वीं	१२	
६३०	३४७१	"		१८वीं	१६	ति स्था चाटसू
६३१	२२३१	चोपाई	चंद्रभाण	१८९३	३६	मुवाई ग्राममें लिखित
६३२	३४७२	"	देपाल	१५४८	८	स १५२२में रचित
६३३	३५७३(१४)	"	"	१९वीं	३८-४२	जीर्ण प्रति
६३४	२१३१	"	पद्मचंद्र	"	५३	१५ से २३ पत्र अप्राप्त
६३५	३२८८	"	नयविमल	१९४९	४९	स १७५४में लिखित
६३६	३४७३	रास	राजपाल	१६५९	३४	स १६४२में रचित
६३७	३५६४(७)	जमानारा दूरा महाभाईवायक		१८६१	३५-४३	
६३८	३९२८	जयविजय चोपाई	धर्मरत्न	१७वीं	२८	स १५५१में अप्राप्तमें रचित
६३९	६८८४	जयसुख वैद्यक		१७३३	८	लि. क मतिविमल
६४०	५४१८(१३)	जलमालण विधि		१९वीं	११४-११६	
६४१	३५७३(५५)	जलान गहाणीरी वारता		१८१२	१३९-१५१	ति स्था ऊबरी

राष्ट्रिय प्रत्यभिधा प्रतिक्रम—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग-१]

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	वर्ता आदि जातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
६४२	३५४६ (८)	जनास गृहणीयारी भारता		१६वीं	६०-६७	
६४३	४४५२ (३२)			१८०७	३५-४०	
६४४	४०६२	"		१८६०	२०	लि क शेषवद
६४५	७७६६ (५)	"		१८५६	२-४२	
६४६	५८६५	जनास वृचना भारता शिवर	काति	१८वीं	३२	वि स १२
६४७	४२२	शरतो धृ ३		१८३८	१	
६४८	२३६२ (७)	जसपतिसिंहजीरा कवित्त		१८वीं	७	
६४९	३५४८ (६)	तथा भजोतीसिंहजीरा कवित्त		"	१	
६५०	११२२ (४६)	जनासखारी नोसाणी		१६वीं	६२-६३	
६५१	४०६४	जामयती चोपाई	सुरसागर (?)	१८४७	७	लि स्वा बोक्लेर
६५२	३४७४	जानोर पाच विविध टाल स्तव	गुणनदि	१७वीं	५	
६५३	६४६	जानधरपुराण	हरवास	२०वीं	४३	
६५४	४८१७	जिणरस	शेणीराम	१८४१	१७	
६५५	३५७५ (३१)	"	"	१६वीं	१७०-१७४	स १७-६३ रचित
६५६	२८६३ (१२३)	जिनकमणकस्तवन	हीरकलण	१६२१	१६५-१६७	
६५७	२८६३ (१२२)	जिनवदसूर गीत	"	१७वीं	१७७	
६५८	२८६३ (१२४)	"	"		१८२-१८६	
६५९	२८६३ (१२५)	"	"		१८६-१८८	
६६०	२८६३ (६४)	स्तुति	विह		१६०	वी
६६१	२८६३ (३)	जिनप्रतिमाधिकार चोपाई	हीरकलण		२-३	स १६२४में रचित

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६६२	३५५५ (३१)	जिनरस	जिनहर्ष	१६वी	१७०-१७४	
६६३	३५७५ (५०)	जिनप्रतिष्ठा स्थापन स्तवन	जिनरग	२०वी	२४१-२४८	
६६४	३६८५	जिनरग बहुत्तरी	उदयरत्न	१८वी	२	
६६५	३५७५ (५४)	जिनरक्षित जिनपाल चोढालियो	शिवचंद्र	२०वी	२५२-२६०	
६६६	३५७५ (६२)	जिनवाणी स्तुति	कनककीर्ति	"	२६४-२६५	
६६७	२३६८ (१६)	जिनवीनती	शिवचंद्र	१६वी	५०-५१	
६६८	३५७५ (७१)	जिनहर्षसूरि भास	शिवचंद्र	२०वी	३०५-३०६	
६६९	३५७५ (६६)	"	शिवचंद्र	"	२६८-२६९	
६७०	२८६३ (३५)	जिनहर्षसूरि गीत	नेमिसागर	१७वी	६६ वाँ	
६७१	२१२५	जिनाज्ञा स्तवन सविवरण	नेमिसागर	१८वी	५	
६७२	५०७३	जिनेश्वर पूजा पद्धति	सोमविजय	"	१६८	
६७३	७४४४ (३)	जीव विचार	प्रभुचंद्र	१८५५	१२१-१२६	
६७४	३१००	जीराउला पार्ष्वनाथ स्तवन	सोमविजय	१८७७	३	
६७५	४६१४ (२६)	जीवसिखामण रास	प्रभुचंद्र	२४२-२४४	स १८५८से रचित	
६७६	४६०५ (७-६)	जुवानीरा हूहा आदि		३१-३६		
६७७	३५५५ (१३)	जैतसी उवाचतरी वारता		६०-६५		
६७८	५४५६	जैन बोल सग्रह	गोरखनाथ	"	५३	
६७९	३५४३ (६)	जोग पावडी	सोम	१८८५	१०-१४	
६८०	२५८३	जोग बत्रीसी	जिनवास	१८वी	१	#
६८१	४६१४ (५४)	जोगीरासा	"	१८७७	३००-३०२	
६८२	५४१८ (२०)	"	"	१६वी	१४३-१४५	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि भाग	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
६८३	५५१८(२५)	नोगोरामा	भगोतीदास	१७वीं	१५२-१५४	लि क रामचन्द्र
६८४	५२८७(५)	जोगी रामो	विणदास	१७२६	१४-१८	"
६८५	२३०८(१)	भाडो		१६वीं	१-६	"
६८६	५४१८(३१)	टडाणा गीत			१७०-१७१	"
६८७	११२२(१२)	टाकरपचीसो		१६५६	७ वीं	
६८८	३५६२(५)	डोकरोरो वात रो वटकसो		१६वीं	१८-२०	रचना स १८५६
६८९	६८४१	टापट्ट आदि	चोयमल	१६वीं	६६	स १६७६ से रचना
६९०	४०६७	डालमार	गुणसागर		१६	
६९१	३८८७	डालसागर	"		१३१	
६९२	३६७२		केदारज		६६	
६९३	६१२२			१८वीं	१०१	
६९४	६७३७		गुणसागर	१८६७	११६	लि क खुरानचव
६९५	७२२४			१८वीं	७७	
६९६	७३७५			१७६८	७६	
६९७	४०३३	प्रबन्ध		१७७०	१०४	लि क जोयमजी
६९८	४०६६			१७५६	८६	
६९९	६१३	दुदुक प्याडो	अविच्छ (?)	१८७४	६	
७००	११२२(२३)	दुदियानो छव तथा सवया	प्रेमस्थि	१६वीं	१६ वीं	
७०१	११४४(१)	डोलामारवणी चोपई			१-२८	
७०२	२२०७	डोलामारु रो वाता		१८२८	८	
७०३	१८८१(२)	डोलानीकी वात		१६वीं	२४-६६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७०४	५०८४(१)	डोलामारू सचित्र	कुशललाम	१८३६	१४	चि स ३६
७०५	७७२०(१)	डोलामारू चौपाई	"	१७५६	१-२३	स. १६७३ में रचना, लि स्था.-जेसलमेर
७०६	६४३८	डोला मरवणी "	"	१८वी	२४	स १५३०में रचित, चि सं ३३
७०७	५८६६	डोला " रा डूहा सचित्र	कुशललाम	"	६१-११४	
७०८	७७४७	" मारूनी वात	"	१६वी	५६	
७०९	६७२०	" " रा डूहा	"	१७७०	४७	
७१०	४६२४(१३)	" " री चौपाई	जिनहर्ष	१६वी	१-३४	
७११	३५७३(२)	ढहणस्वाध्याय	सरूपराम	१६वी	१७ वां	
७१२	७७४८	तर्कप्रबन्ध	"	"	५७	
७१३	७००७	ताजिकसार भाषा	"	१८२०	२६	
७१४	३५६७(२५)	तारादे लोचनारी सञ्ज्ञाय	हर्षकुशल	१६वी	१४६-१४७	
७१५	२३६८(५)	तारातबोलरी वार्ता	"	"	३७-४०	*
७१६	२५८१	तिथ्यालयन टीका	सीताराम	१८वी	१	
७१७	१७४६	तिब्ब सहावी फारसीकी भाषा	"	१८३०	५२	
७१८	४८७५	तुरक शकुनावली	"	१८५०	२६	
७१९	११४४(६)	तेजपाल व्ययवर्णन तथा नामोर चित्तीडादिके ऐतिहासिक सवत्	"	१६वी	४८ वां	*
७२०	७५३५	तेजसिंहजीका सबंधा	"	१७४३	१७	प्रथम पत्र अप्राप्त
७२१	४६१४(५०)	तेरह काठिया	"	१८७७	२७६ वां	
७२२	७६०४	तडुल वेयालिय पहल	पाशचद	१८३३	४१	लि क मोतीचद डूगरसी

राजस्थान प्रायश्चित्ताधीन- राजस्थानी हस्तनिहित प्रथम सूची, भाग-१]

क्रमांक	प्रमाणक	प्रथम नाम	कर्ता आदि पातक्य	निधि समय	पत्र संख्या	विधिप उल्लेखनीय
७२३	२३६२ (१२)	तवावली कथा	हरली जोगी	१८वीं	७	
७२४	७२६४	यावचा चौपाई	समयसुंदर	२०वीं	१८	
७२५	३५७५ (७६)	पावचा मलि चौदाछियो	समाकल्याण	१८वीं	३११-३१६	
७२६	२२२८	, मुत चौपाई	राजहरय	१८वीं	१७	
७२७	३८८८	यावर देवतांगी वात	समयसुंदर	१८६१	२५-६५	स १६६१में रचित
७२८	४०६८	यूसभद्र नवरसो	उदयरतन	१८४६	५	सि क कल्याणसोभाग्य
७३०	४८३२	,	,	१८५२	८	स १७५६में रचित
७३१	६२५५	,	,	१८वीं	२	सि क राजविजय
७३२	७४४४ (१४)	यमण पाचनाय स्वतन्त्र	कुणालनाथ	१८८५	२५३-२६०	
७३३	३५७३ (२४)	रडकसस्तबक		१६वीं	६६-७०	
७३४	७४२१	प्रकरण	पवत धर्मायाँ	१८८५	१३६-१४३	सि क नमधियय
७३५	७४४४ (५)	द्रव्यसंग्रह आतायबोय	कनककौलि	१६८६	४५	
७३६	१६२१	द्रीपती चौपाई		१७०७	२०	स १६६३ में जसलमेरमें रचित
७३७	१८२६	,		१७२६	२६	
७३८	२१३२			१७१८	३६	डोल ग्राममें लिखित भाउवगढ़ पाठ
७३९	३४७५			१८वीं	३१	
७४०	३५३८	द्रीपती रास	समयसुंदर	१८५६	२०	स १७००में ग्रहमवावाडमें रचित
७४१	६६६		कनककौलि	१८वीं	८१	जसलमेरमें रचना
७४२	६५३१					

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-१]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जातव्य	लिपि समय	पृ. सख्या	विशेष उल्लेखनीय
७४३	६३५६	द्वीपवी रास	कनककौत्ति	१८१५	४०	
७४४	६४१६	द्वादश भावफल		१६वीं	४	
७४५	१६६४	द्वादश भावफल		१७वीं	४	
७४६	२१६५(१)	दत्त आह्वान कथा	दत्तलाल	१६वीं	७ वां	
७४७	६४४६(५)	दत्तलालाकी कवकी	रामचंद्र	"	५-११	
७४८	१८३६(१०)	दशपञ्चबलाण वर्णन		"	४४-४७	
७४९	४६१४	दशानवतीसी	रामचंद्र	१८७७	२७७-२७८	स. १८५४में रचित
७५०	२१७५	दशार्वाकालिक भास	राममूर्ति	१७वीं	२४	
७५१	६८६	" स्वाध्याय	वृद्धविजय	१६वीं	७	
७५२	२८६३(८७)	दशाविचार कोष्ठक	हीरकलश	१७वीं	१४६ वां	
७५३	२८६३(११)	दशानामद गीत	दीपो	"	६-८	६, दशों पत्र अर्ध-द्रुहित लि. स्था. आहिपुर
७५४	६५४४	" चौबालियो		१६वीं	३	लि. क. उपाध्याय पञ्जदयमणि
७५५	६३६६	दशावली		"	१८-२२	स २२०के समान
७५६	३५७३(५)	दाढाला एकलमल बराहरी वारता		"	१-१०	"
७५७	३५५६(६)	" री वारता		१८१७	२३	"
७५८	४१४६	" री वारता		१८८८	८७-८८	
७५९	११२२(६८)	दातार सूरनी स्याद		१८वीं	४१०	विभिन्न सतोंके ४४४० पदों का संग्रह
७६०	४३०८	दाहू वाणी आदि गुटका				
७६१	६६२६	"		१७८७	२६८	
७६२	६६३७(१)	"		१८११	१०६	लि. क. रामदास

क्रमांक	प्र.पा.क्र.	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि पात०य	विधि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
७६३	६६४८	दासूजी का ग्रन्थ		१८००	७८	प्राद्यन्त शोधन
७६४	६६४४(१)	,		१६वीं	६५	
७६५	६६४६	दासूजीकी साखी		१८६६	६६	वि. क. लक्ष्मणदास
७६६	६६५०			१८वीं	६७	
७६७	२१०१	दान तोला		१६वीं	१ला	
७६८	८५२	वालगील तपभक्तना सखाद	समयसुन्दर	१८वीं	४	स १६६२में सांगानेरमें रचित
७७०	६६५	,	,	१६वीं	४	
७७१	६६५	,	,	१७वीं	६	
७७२	६६२६(७)			१८२६	३२-४०	
७७३	२०४२(२)			१७८३	६-१२	
७७४	२०८६			१७०५	६	
७७५	२३७४(११)			१६वीं	३६-४२	कृष्णगुरुमें लिखित
७७६	३२४६			१८४१	५	
७७७	३२७१			२०वीं	१८	
७७८	३५७३(५४)			१८१०	१३७-१३६	
७७९	३५७५(३६)			२०वीं	१७३-१८१	
७८०	३८६१			१८वीं	४	
७८१	३६५७			१६वीं	४	
७८२	५४३६(६)				४४वीं	
७८३	५४३६(११)		रमाण भद्रराज		४६-४६	
७८४	६८४५				४५	

क्रमाङ्क	ग्रथाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
८२६	६५०(३)	धर्मबुद्धि पापबुद्धिरी कथा	धर्मबुद्धि	१८वीं	५-६	
८२७	३५५५(२३)	धर्मसिध बावनी		१६वीं	१४६-१४६	
८२८	५२२३	धर्मोपदेश		"	१३	प्रथम पत्र अप्राप्त
८२९	३५४६(१४)	धरातीर्थ गीत आदि		"	७५-७७	
८३०	१८८२(१३६)	ध्रुव चरित्र		"	७२-७५	
८३१	२३६०(१०)	ध्रु चरित्र		१८४७	३७-४६	
८३२	४६०८	धामना वणन		१६वीं	६	
८३३	५४३६(१२)	नरकरो चौडालियो		१८५३	३	
८३४	८७७	नरसी मामेरू		१८६१	१५	
८३५	६६५४(२)	नरसी माहेरो		१८८८	६५-६६	६८वा पत्र अप्राप्त
८३६	५२०२(२)	"		१८८५	८७-६१	
८३७	६५२	नलदववती चोपई		१७७४	२८	म १६७३में रत्नना आणमगर मध्ये
८३८	११२३(२५)	"		१७वीं	८६-६४	
८३९	३८८६	"		१७७६	७२	
८४०	३६३१	"		१६८६	२७	
८४१	४०७०	"		१८३६	२५	
८४२	१८८०(१)	नल राजाकी बात		१६वीं	१-२५	
८४३	२०५६	नलायनीद्वार		१६८५	६७	
८४४	३५६६(२)	नव आण्यान (नवरत्न)		१६वीं	१-११	
८४५	६३१	नवकार बालावचोद्य		१७वीं	४	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता क्रांति ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विषय उल्लेखनीय
८४६	२६७	नवकार बालाव्योष		१८वीं	११	
८४७	२१५२			१७वीं	१०	
८४८	३४६६	नवकार मन्त्र दंगल	राजसोम	१६वीं	२	
८४९	६९१३	नवकार बाली स्तयन	सिधिविद्या	२०वीं	१३५ १६१-१६५	
८५०	३५७५ (३६)	वागीनी सञ्ज्ञाय		१६वीं	१	
८५१	७६६७	नवकार सञ्ज्ञाय		१६वीं	२६	
८५२	३५५४ (१५)	नवग्रह छत्र	गकर	१७वीं	५	
८५३	३५१६	नवग्रह छत्र		१७वीं	१७	
८५४	६७०	नवग्रह बालाव्योष		१६०२	६६	
८५५	२११९	विचार		१८७५	६८	
८५६	३२६३	सग्रह बालाव्योष		१७वीं	५६-६०	
८५७	२८६३ (२५)	नवनिदान कुलक चौपाई	हीरकल्ला	१८८५	१४	
८५८	६४१२	नवपद पूजा	जिनलाम	२०वीं	१०६-११३	
८५९	३५७५ (२६)	, स्तयन	बिनहृय	१६वीं	५	
८६०	२०४९	नववाड सञ्ज्ञाय		१७वीं	४५	
८६१	२०६०			१६८७	४-१०	
८६२	३५६६ (१)	नवरत्न नव श्रास्थान	नारायणदास भरुचो	१७वीं	१८-२६	
८६३	३५६६ (३)	नवरत्न काव्य		१८८७	१८	
८६४	३६५५	नवाण पद्धति		१६वीं	स्फुट पत्र	
८६५	५४६१	नसोहलामा और देवीदास के कवित्त		१७वीं	६	
८६६	१६८७	नटजन्म विचार				

राजस्थान प्रादेश्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-१]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता यादि ज्ञातव्य	निधि ममग	पा मस्या	मिगप उल्लेखनीय
८६७	११२३ (६)	नक्षत्रशकुनावली		१७वीं	५६-६०	
८६८	३७७४			१६वीं	१	
८६९	२३७७ (४)	नामदमण चौपाई		१८०७	१६-२६	चोवारी गाममें लिखित
८७०	३५५५ (१६)	नामदमण		"	१२१-१२३	
८७१	३५७३ (३३)	"		"	८२-८६	
८७२	३६३२	"		१६वीं	४	
८७३	४४५२ (४)	" चौपाई		१८वीं	७-६	
८७४	७०७३	" छव (मटपत्तिपाडी)	साईदास	१८२४	६	
८७५	२१६६	"		१८५२	४	
८७६	८१८	"		१७७६	७	
८७७	६२८	"		१६वीं	५	
७७८	६३६०	"		१८वीं	४	
८७९	४६२४ (३)	नामदमण कथा		१७८७	१५-१८	
८८०	३०३६	नाममाता चौपाई		१८वीं	६	
८८१	३५५० (११)	"		१६वीं	८५-८७	
८८२	१८३०	नाम मनु		१७वीं	४	
८८३	४४५२ (२२)	नाममतर		१८वीं	२३ वीं	सर्व-मिग उतारनेके मग है
८८४	३८४२	नाडी परीक्षा		१६वीं	२	
८८५	५०६६	नाडीता भवदेव रास	समयसुन्दर	१७५१	५	
८८६	४३१२	नाथियाका सोरठा		१६वीं	११	
८८७	२३७५ (५)	नाथिकनी मारता	गामगायग	१६०६	१७६-१६६	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	वर्णन आदि मातृव्य	निधि समय	पत्र संख्या	विभाग उल्लेखनीय
८८८	६६३७ (३)	नामधेयश्रीका सबद		१८११	१८७-२०१	लि. क. रामदास नारायण मध्ये
८८९	४८३१	नामप्रताप	रामचरण	१९वीं	१२	
८९०	७८१६ (३)	नारायण सीता	मोचोदास	१८३१		
८९१	४४५२ (५०)	नासिका विचार		१८वीं	१०७ वा	
८९२	२१४१	नासकेतु प्राख्यान	जगन्नाथ	१८६४	१५	
८९३	३४५५ (७)	नासकेत कथा बालावबोध		१८२७	१-६	
८९४	३५७३ (४१)			१ वीं	१०२-१०६	
८९५	३५६३ (२)	नासकेतरसेखीरी कथा		१७८६	६४-७३	
८९६	६७४६ (१)	नासकेतपुराण कथा	नददास	१९वीं	८८	
८९७	४२६३	भाषा	,	१८३७	४४	
८९८	६११०			१९वीं	५१	
८९९	३५७५ (४०)	निगोद विचार स्तवन	क्षमाप्रसोद	२०वीं	१६५-१६६	
९००	३२६४	निष्पत्तिद्वय भाषा		१९वीं	१४	
९०१	५४१८ (३३)	निर्वाणराष्ट्र				
९०२	३५५७ (१)	नीमाणी	केसोदास गाडण			
९०३	३५४६ (१३)	नीमाणी कवित		१७३-१७५	१४	
९०४	४४५२ (२२)			१८वीं	१०२ वा	
९०५	१८३६ (६)	नमस्कीका चारहमास	सूरज	१९वीं	७४-७५	
९०६	३५०८	नमराजुन चतुडी	श्यामगोलाब	१८वीं	२४ वा	
९०७	५३३०	" का सबया	कानिबिजय	१९वीं	४१-४४	
९०८	३५२०	चारमास	उदयरत्न	,	२	
				१८वीं	२५	
					४	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिलिखन—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-१]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
६०६	७३०३	नेमराजुल का वारमास		१६वीं	१	
६१०	५०७७(२)	नेमराजीमती सज्जाय		१८०२	१ ला	
६११	२३६८(१२)	नेमनाथजी की वीनती वारमास		१६वीं	४०-४२	
६१२	२८६३(६)	नेमि गीत	हीरकलश	१७वीं	४ था	
६१३	११२३(२२)	नेमिनाथ चवाइण गीत	भाकड मुनि	"	८१-८२	
६१४	३५५४(४)	" चोक	अमृत	१६वीं	६२-६४	
६१५	६८२	" चौगीस चौक	"	१८६३	८	
६१६	३६३३	" धवल	नयसुन्दर	१६६१	८	
६१७	२१७०	" रास	कनककीर्ति	१७वीं	१०	
६१८	३८६३	" "	पुण्यरत्न	१७३५	२	
६१९	३६३६	" "	"	१७१६	४	
६२०	६७८	" विवाहलो	वीरविजय	१८६४	७	
६२१	६४०	नेमिजिन फाग	रत्नसागर	१६वीं	८	वीसतनगरमे लिखित
६२२	३६३५	नेमिनाथ फाग	राजहर्ष	१८वीं	२	
६२३	२३७४(५)	नेमिनाथ वारमास	रूपचंद	१६वीं	२६-२७	
६२४	२३७४(६)	"	देवविजय	"	२७-२८	
६२५	२३७४(७)	"	फगियण	"	२८ वां	
६२६	३२०३	"	विनयविजय	१८वीं	२	
६२७	२३६८(१७)	नेमिनाथ स्तवन	मनरूप	१६वीं	५२-५४	
६२८	४६१४(३४)	नेमिनाथनी साली		१८७७	२५५-२५६	स १६७०में रचना
६२९	२८६३(५६)	नेमिनाथ हींडोलणा	हीरकलश	१६२५	१११-११४	स १६२५में रचना

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	तिथि समग	पत्र संख्या	विवेक उल्लेखनीय
६५१	२८६३ (४१)	पचपरमेष्ठि नमस्कार	हीरकलश	१७वी	८५ वॉ	
६५२	३५७५ (६१)	पचमंग सज्जाय	शिवचक्र	२०वी	२६३-२६४	
६५३	२०३१	पचमी कथानगद्य		१७८०	७	
६५४	१८६३	पचमेरु पूजा		१६वी	४	
६५५	२०५४	पचराघु तीर्थमाला स्तवन		१६१८	५	
६५६	३५५४ (१)	पचाख्यान बाराबबोध		१८८५	१-५४	
६५७	११२२ (१३)	पचागुली देवी छव		१६वी	८ वॉ	
६५८	३५७५ (४४)	पचेन्द्रिय चोपाई		१८वी	२१६-२२८	
६५९	३६३६	"		"	४	
६६०	५२६५	पचेन्द्रिय चोपाई	गेह (?)	१८७२	५	
६६१	३६४०	पचेन्द्रिय वेली	ठाकुरसी	१७वी	१	
६६२	४६१४ (५८)	"	मीरा	१८७७	३१३-३३५	
६६३	१८८२ (१२८)	पद		१६वी	६७ वॉ	
६६४	१८८२ (२०६)	पद	"	"	१३२ वॉ	
६६५	१८६० (६३)	"	"	"	५३-५४	
६६६	१८६० (७४)	"	"	"	६१-६२	
६६७	१८६० (८२)	"	"	"	६८ वॉ	
६६८	१८६० (८७)	"	"	"	७०-७१	
६६९	१८६० (८८)	"	नरसी	"	७१ वॉ	
६७०	१८६० (८९)	"	"	"	"	
६७१	१८६० (९०)	"	मीरा	"	७१-७२	

राजस्थान प्राकृतिक विद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग-१]

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१७२	१८६०(६६)	पत्र	मीरा	१६वीं	७६ वीं	
१७३	१८६०(१०५)	"	"	"	८२-८३	
१७४	१८६०(११६)	"	"	"	८६-९०	
१७५	१८८२(६६)	"	नरसी	"	४८ वीं	
१७६	१८८२(११०)	"	कबीर	"	६१ वीं	
१७७	१८८२(१३४)	"	मीरा	"	६८ वीं	
१७८	१८८२(१३५)	"	मुस्तीबात	"	६८-६९	
१७९	१८६०(५२)	"	नरसी	"	४८ वीं	
१८०	१८६०(१४४)	"	मीरा	"	१२६ वीं	
१८१	१८६०(१४७)	"	"	"	१२७ वीं	
१८२	१८६०(१८०)	"	नरसी	"	१४३ वीं	
१८३	१८६०(१६८)	"	"	"	१५६ वीं	
१८४	१८६०(२०४)	"	मीरा	"	१५८-१५९	
१८५	१८६०(२०६)	"	"	"	१५९-१६०	
१८६	१८६०(२२३)	"	"	"	१७०-१७१	
१८७	१८६०(२२७)	"	मीरा	"	१७३ वीं	
१८८	१८७५(६३)	"	शिवचंद्र	२०वीं	२६५-२६६	
१८९	१८१४(१०)	"	सकलकीर्ति	१८७१	२०७ वीं	
१९०	१८१४(३१)	"	"	१८७७	२४८-२४९	
१९१	१८८२(१२७)	"	नरसी	१६वीं	६६-६७	
१९२	१८६०(६५)	"	"	"	७५-७६	

क्र. सं.	क्र. सं.	ग्रन्थ नाम	कर्ता यादि जतस्य	दिनांक	पुग मल्या	विशेष उल्लेखनीय
२२३	१२२०(१६०)	पद	नीरों	१६वीं	६४-६५	
२२४	१२२०(२२)	"	"	"	३४-३५	
२२५	३२३३(१३)	पत्रावली चालोचना	समयगुप्तर	२०वीं	७६-६९	
२२६	११२२(१४)	" छेव	दुर्गसागर	१६वीं	६-६	
२२७	४००३	पत्रिनी चौपई	हेमरतन	१२२७	५१	
२२८	४६१०	"	"	१६वीं	३१	
२२९	४०७२	पदमती पदमवती चौरस	मुत्तमाल	१६वीं	२२	
२३०	७७२१(५)	पतर बावकाहे चौरस	वीरचंद	१२२५	१६-१६	
२३१	२३०८(१)	पतरसो चिन्		१२६१	१-१७	
२३२	२२१२	"		१६वीं	१३	
२३३	३६२२(१७)	"		"	१०३-११४	
२३४	४२१६(३)	"		१२६१	६४-६६	
२३५	४२२२(६)	राजाजी चौरस	ज्ञानचंद	१२०५	१०३-१०७	
२३६	४२२२(६)	"	"	१७६१	२०	
२३७	४२२२	"	सहजगुप्तर	१२४८	३१	
२३८	४२२२	"	"	१७वीं	६	
२३९	४२२३(६)	"	"	१६३६	३४-३६	
२४०	४२४६	"	"	१२२२	१६	
२४१	७४१२	"	ज्ञानचंद	१२४८	३१	
२४२	४२२७	"	"	१२२५	२६	
२४३	३५४६(१२)	परमार जगदेवरी वारता		१६वीं	६७-१०७	लि स्या बडली सं. ५५१ के समान

लि. क. प्रीतिसौभाग्य गणि

लि स्या बडली

सं. ५५१ के समान

क्रमांक	प्रश्नांक	प्रश्न नाम	वर्तमान प्राप्ति प्राप्त	विषय	निधि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१०१४	५४१८(२६)	परम्पारि (प्रपाद)		गोपालदास	१६वीं	१६७-१६८	
१०१५	३५४६(५)	परमेस्वरजीरो छब		हररूप सेका	१८१६	१०-११	
१०१६	३२४६	परगोलम गुराण			१८८१	११३	
१०१७	३७७६	प्रकीर्ण कथा		समयसुन्दर	१६वीं	५	
१०१८	६२०४	नयक बुद्ध चौपई		"	१८६७	२४	
१०१९	१००३	"		"	१८९७	३१	
१०२०	२१७८	"		"	१७वीं	१०	
१०२१	६५२९	प्रतिभाधिकार बलि		सामंत	१८२५	२८	लि क जतसी
१०२२	११२४(५)	प्रद्युम्नप्रथम		कामरूप	१६७५	२	
१०२३	५२७०	"		समयसुन्दर	१८१३	२०	प्रथम पत्र प्रपात
१०२४	५२७४	प्रदे-गौराय चौपाई			१७३९	२९	
१०२५	५०६८	प्रयोग विज्ञानिणी चौपाई		समभक्ति गण	१८९०	७७	
१०२६	६०३३	प्रयातनास दिनकल			१८५८	५७	
१०२७	११२३(२१)	प्रज्ञोत्तरसायगतक भाषा			१७वीं	८०	वा
१०२८	५१३७	प्रज्ञोत्तरसायगतक भाषा			१६वीं	५७	
१०२९	१०४८	"			१८६८	१५	
१०३०	२१६६	"			१६वीं	४६	
१०३१	६३४९(१)	प्रज्ञोत्तर रत्नमाला			१८०६	७०	लि क हरकचव
१०३२	५६१५(१४)	प्रद्वैतिका प्रादि		संगतीराय	१६वीं	३८६-३९५	
१०३३	११४४(५)	प्रद्वैतो				३२-३५	
१०३४	५१०१	प्रद्वैतो		निगह्य		५	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान--राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-१]

क्रमांक	संस्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता यादि ज्ञातव्य	तिथि समय	पग नम्बरा	विशेष उल्लेखनीय
१०३५	२३६८ (१५)	प्रह्लिका	हीरकलना	१६वीं	४६-५०	
१०३६	२८६३ (६७)	"		१७वीं	४ या	
१०३७	५३२६	प्रश्नशकुनायली		"	१२	
१०३८	६८५४	प्राकृतप्रत्यघराग्रह	मोहनविजय	१८६८	११६	लि. क. चान्दावर
१०३९	१८५२	प्रास्ताविक गीत		१६वीं	?	
१०४०	११२२ (३०)	"		"	२८ वीं	
१०४१	२८६३ (६८)	"		१७वीं	१६२ पं	
१०४२	२८६३ (१००)	"		"	१६३ पं	
१०४३	३६७३	"		१८वीं	६	
१०४४	२८६३ (६)	"		१७वीं	५ वीं	
१०४५	३०२६	"		"	७	
१०४६	३५५० (८)	" कुडलिया	धर्मवर्धन	१६वीं	७०-७४	
१०४७	२८३२ (५)	" इला		१७७४	८८-८९	
१०४८	३५६२ (१७)	"		२५वीं	११६-१४५	
१०४९	३५७३ (४०)	"		१६वीं	१०१ पं	
१०५०	३५७३ (५०)	"		"	१२८ पं	
१०५१	३५५० (१०)	प्रास्ताविक यावनी	धर्मनी	"	७६-८३	
१०५२	११२२ (२४)	" सुभाषित		"	१७-२०	
१०५३	४७६२	प्रास्ताविक सुरा		१८वीं	३	
१०५४	४८०६	प्रास्ताविक सुरा		१८वीं	३	
१०५५	४८१५	"		१८३६	३	वि. एम. रामपुर

राजस्थान प्राञ्चविद्या प्रतिकूल—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ सूची भाग-१ ।

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	वर्तमान भाग-नाम	वर्तमान भाग-नाम	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१०५६	५३६५	प्रास्ताविक ग्रंथ			१८वीं	१३२-१३४	
१०५७	५३६६	प्रास्ताविक भाग			१९वीं	८	
१०५८	५३६७	प्रास्ताविक पत्र			१७वीं	४	
१०५९	६५८	शिवमेलक चौपाई			१७५५	६	
१०६०	६७४				१७५४	७	
१०६१	१८१२				१७७२	१०-१७	
१०६२	२०६७(२)				१८६०	७	
१०६३	२२०१				१८वीं	७	
१०६४	४७६३	शिवमेलक चौपाई		समग्रपुस्तक	१७वीं	६	लि क ल-वकीलगणि
१०६५	४८२१				१६वीं	८	लि क भावुजी
१०६६	६८७५				१८वीं	३६	स १७६७में रचित
१०६७	१८६६(१)	प्रम-यौतिप		महिमोदय	१८१८	१-१५	लि क जीताराम
१०६८	४०७३	पलकवरियावरी यात			१७८५	५६	
१०६९	४०७४	पाण्डवचरित्र चौपाई		सामवहन	१६२६	३७७	
१०७०	७७२३	पांडवविजय		मल्लकदास	१८३१	६५-६७	
१०७१	१८३६(१३)	पांडवकी सन्ध्या		काठ सेवक	१६०८	२	
१०७२	२५६६	पातसाह नामोपरि गजुनावली			१७६१	७५-७७	
१०७३	३५५७(६)	पातसाह भोगवी तिएरी विगत			१९वीं	१-६	
१०७४	३५५०(१)	पांडुजीरी नीसाणी			१८वीं	१-५	
१०७५	३५६०(४)	पांडुधा षोडोतरा ग्रंथ			१८वीं	३०२-३११	*
१०७६	४६१४(५५)	पातसाह आदित्यचार कथा			१८७७		

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१०७७	३२६५	पाराशरी भाषा टीका	परमसुख	१६वीं	८	
१०७८	३५५४ (१७)	पाशा केवली भाषा		"	२७-२८	
१०७९	२३६८ (६)	"		१८४९	४१-४९	
१०८०	६४३३	"		१९६९	७	लि क रूपा साध्वी
१०८१	७६७०	"		१६वीं	५	
१०८२	५१२३ (३)	"		१८वीं	१२-१९	
१०८३	६२८२	"	दीपो	१६वीं	१६	
१०८४	२०४०	पार्वजित स्तवन	"	१८वीं	३	
१०८५	९७६ (२)	"	रूपसेवक	१९११	२-४	
१०८६	३५५० (२)	"	जितहर्ष	१६वीं	९-१२	
१०८७	३५७५ (२८)	पार्वनाथ घण्टरनिसाणी छद		२०वीं	११७-१२२	
१०८८	११२२ (९)	पार्वनाथ छद		,	५-६	
१०८९	३५५५ (३२)	"		"	१७४ वीं	
१०९०	३५४८ (८)	" रो छद	राज कवि	"	१३-१४	
१०९१	२१०५	पार्वनाथ देसतरी छद		१८वीं	१	
१०९२	२३२७ (१)	"	"	१८६५	२-९	
१०९३	३५२२	"	"	१८वीं	२	
१०९४	३५७३ (३४)	"	"	१९वीं	८६-८८	
१०९५	३५४६ (६)	"	"	१८वीं	११-१२	
१०९६	३१९४	पार्वनाथ रागमालासगस्तवन	जयविजय	१८वीं	३	
१०९७	३९२५ (२)	पार्वनाथराज गीत	उदयविजय	१७७०	५३ वीं	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	वर्तनी श्राद्धि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१०८८	३५५६ (४)	पादवनाथ स्तवन	समयसुंदर	१९वीं	६५-६६	
१०८९	२३६४ (१)	विगत सटीक	मुनि हय	१८७१	४७	
११००	४४५५	विगल नास्र टीका	समयसुंदर	२०वीं	२३	
११०१	७१४३	पडरीक कुडरीकनी डाल	सोभायसेखर	२०वीं	५	स १६६९में सिद्धपुरमें रचित
११०२	३५७५ (१७)	पुण्यधृतीसी	विनायकविजय	१७वीं	८२-६६	स १६४१में रचित
११०३	११२३ (११)	पुण्यपाल राजनिरियि चडपई	हयचंद गणि	२०वीं	१२२-१३०	स १६६२में सागानेरमें रचित
११०४	३५७५ (२६)	पुण्यप्रकाश स्तवन	विमलमूर्ति	१८७५	३	
११०५	५११९	पुण्यसारचरित्र	पुण्यकीर्ति	१६३६	४६-५८	
११०६	११२३ (७)	पुण्यसार चौपाई		१७५१	६	
११०७	३५३५			१८वीं	६	
११०८	३९३७			१७६५	४	
११०९	३९६५			१७५४	७	
१११०	३८६४			१८वीं	५	
११११	७५३०	चौपाई				*
१११२	६४३७	पुरंदर कुवर कथा	रतनविमल	१७वीं	४८	
१११३	१८२२	चौपाई	मालदेव	१९वीं	१०	
१११४	३८२६	चौपाई	मालदेव	१९वीं	२१	
१११५	३९४१	चौपाई		१७वीं	७	
१११६	४६७६	पूणिमा विचार				
१११७	२५५४	पूणिमा विचार		१९वीं	४६	
१११८	२५६०			१८६४	२४	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१११६	५३३२	पूर्वदेश चैत्य प्रवाडो		१८६४	३	
११२०	११२२(६३)	पुरुषता कुवलाण छंद		"	८४ वाँ	
११२१	१८३७	पुरुषनी ७२ तथा स्त्रीनी ६४ कला		१७वी	१	
११२२	२३००(४)	पुरुषप्रतिस्त्रीका प्रीति लेख		१८७६	१६-३४	
११२३	२३७५(१)	पुष्पलेन पद्मावतीनी वारता	सामलदास	१६०६	१-६०	
११२४	११४२(२)	"	"	१८वी	१७-१०२	
११२५	३५७५(३१)	पेंतालीस आगस सङ्काय	धरमसी पाठक	२०वी	१३८-१४१	
११२६	३५४७(१)	पोथी प्रेम डूहा		१६वीं	१	
११२७	३५५५(४)	"		१८२६	१५ वाँ	
११२८	३५७५(३८)	पौषवस्तवन	समयसुन्दर	२०वी	१८६-१६१	
११२९	४६१४(१६)	पोस्तीनी रास		१८७१	२१८-२२२	
११३०	४०७५	"		१८८२	४	
११३१	३५७३(३६)	फलवर्धि पाश्र्वस्तवन		१६वीं	१०१ वाँ	
११३२	३६२	फरासीस हकीमवैद्यक फुटकर शौषध	बलतो	"	७२	
११३३	७७५२(१२)	फुटकर शौषध		१८वीं	११६-१२५	
११३४	२३७१(३)	फुटकर कवित्त		"	५२	
११३५	३५६७(३१)	"		"	१५५-१७६	
११३६	३५५७(४)	"		"	७२ वाँ	
११३७	४६२४(१८)	"		"	२७-२६	
११३८	३५६७(२)	" डूहा		१६वीं	७२-६६	
११३९	३५५७(७)	" "		१७६१	७८-८१	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता/प्राप्ति मातृव्य	निधि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
११४०	४६२४(७)	पटकर ज्योतिष		१७६३	१४-१५	
११४१	२३६८(१४)	फटकर मंत्र		१६वीं	४४-४५	
११४२	२३६८(२०)	कुलकर्णकुलकर्णरीरो वात		,	६३-६७	स १८५२से रचित वि स ४५
११४३	५२७२	कुलकर्णकुलकर्णरीरो वात		१६१२	* १४	
११४४	५०८१	कुलकर्णकुलकर्णरीरो वात		१८६०	७२	
११४५	५५००	कुलकर्णकुलकर्णरीरो वात		१८४६	२६	
११४६	३५६७(१५)	कुलकर्णकुलकर्णरीरो वात		१६वीं	१३१-१३३	
११४७	३५६७(१७)	कुलकर्णकुलकर्णरीरो वात	जडेय	१६वीं	१३३-१३४	#
११४८	३५६७(२६)	"			१४७वीं	
११४९	३५७५(३)	बृहत्सामोचनमंत्रवचन	राजसम्राट	२०वीं	२७-३०	
११५०	३५४६(२२)	बराटोवात्री पतिव्रतिका हकीकत		१६वीं	१-२	
११५१	३५७५(११)	ब्रह्मवचनववाडसम्भाय	जिनहय	२०वीं	४६-४८	
११५२	२८६२	ब्रह्मिडपुराण भाषा तथा पंचपुराण भाषा		१८०६	२-११७	
११५३	४६१४(३७)	ब्रह्मजिणवतनी योन्ती		१८७७	२५-२५६	
११५४	७७४३(३)	ब्रह्मसिन्धु	राजसिंघ	१७८४	४६-४३	लि क बाई सिकरेकर्वेरी
११५५	५८६७	बागसोरामप्रोहितहीराबीवात	कवितेज	१६वीं	६५	#
११५६	६७६(३)	बायीसमभयवतीसभासकाय सम्भाय	सम्भोरत	१६११	४-५	
११५७	७७५३(७)	बीभट्टवाड रो स्तवण	कमल	१८३७	३६-४१	
११५८	१७५४	वारमासकल बहीपट्टकत आदि		१८७२	१८	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पृ. संख्या	विशेष उल्लेखनीय
११५६	१८०६	वारव्रतकथा		१६५७	११	
११६०	३५६७(६)	बावनश्रृंगरो	कानडवासवारठ	१६वी	१०६-११२	
११६१	३५७५(१३)	वारहृभावना सज्जाय	जयसोम	२०वी	६२-६६	
११६२	३५६७(२८)	वारहृमासो		१६वी	१४६-१५०	
११६३	४६१४(६२)	बाईजतननेलीलवणनीविगत	रामचन्द्र	१८७१	३२१ वाँ	
११६४	७१३६	बाईसपरीक्षाफीचोपाई		१८२२	४	
११६५	४३३०	वातसग्रह		२०वी		
११६६	७८१७	वावशाहीहाल		१६वी	८-५०	
११६७	४६१४(२७)	वारहृश्रुप्रेक्षा	चन्द्रकीर्ति	१८७७	२४४-२४६	
११६८	४७२१	वारहृपूतमरो विचार		१६वी	१	
११६९	४७३७	वारहृभाव फल		१८४०	५	
११७०	७४४४	वारहृभाव		१८८५	२६०-२७०	
११७१	७७५४-	वारहृमासासग्रह		१६२२	१५	
	(१,२,३)					
११७२	४२८७(१५)	वारहृमासो	रामचन्द्र	१८वी	११६-१२७	
११७३	७६२१	वालजन्द्रवत्तीसो	बालचन्द्र	१०वी	७	
११७४	२१०१(२)	बालतीला		१६वी	१-३	
११७५	२२५	वाततन्त्रभाषावचनिका	कल्याण पण्डित	१८६५	८२	
११७६	२८६३(१०१)	विद्यधिया	हीरकलवा	१७वी	१६३ वाँ	
११७७	११४१	विस्वणपचाक्षिका चोपई	ज्ञानसागर	१८०७	२०	
११७८	२२०२	बीबीरोख्याल		१६२३	३	

चौबीस वार्ताश्रीका सग्रह

१,२ पत्र अग्रस्त

क्रमांक	प्र.या.क्र.	ग्रंथ नाम	वर्ता श्रादि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
११७६	२०५२(३)	वृद्धिरास	नालिनभद्र	१७८३	१२-१४	
११८०	२०६८	,		१८वीं	३	
११८१	३१६५	,		१७वीं	२	
११८२	३४८०	वदितेज घोषई	तिरकसूरि	१८वीं	८	
११८३	५१४२	सोत्रविकरण		१६वीं	६६	
११८४	७५४२	भंगीपुराण	हुरवास	१७वीं	६२	
११८५	७७२१(१)	भद्रारी भानोरामजीरो गीत		१८२५	१-२५	
११८६	२२५७	सिवचरबीरो गीत		२०वीं	१	
११८७	२२५६	भक्तसिद्धबाली	मणूरवास	"	१	
११८८	३५६७(१३)	भक्तसार	नालिनभद्र	१६वीं	१२६	
११८९	५८८५	भगवद्गीता भाषा (गीतासार)		"	२२	
११९०	२८६१(१)	महुली डूहा			७५	
११९१	३७४०	, पुराण			८	अनुप
११९२	३५६४(८)	, विचार			१-३३	
११९३	१८७७	महुली वासय			६	
११९४	३७५७	, विचार			१५	
११९५	५६८	महुली वासय		१८वीं	४	
११९६	५१२३(७)	डूहा पचीसी			२६-४१	
११९७	४४५२(१७)	महुलीपुराण			१६वीं	
११९८	६७२८	" रा डूहा		१८८१	१२	
११९९	५१२२			१८२८	३	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२००	४४५२ (६८)	भट्टलीवाक्य	विनयविजय	१८वी	१३२ वॉ	लि. क. ब्रजवासी
१२०१	५८००	"		१६१३	१४	
१२०२	२०२३ (१)	भररगीता		१७३४	१-२	
१२०३	३२०६	"		१७६८	५	
१२०४	२३६८ (१३)	भरर की सज्जाय		१८४८	४२-४४	
१२०५	७६३०	भरताधिकार		१७६३	५३	
१२०६	३५४६ (७)	भवानीजीरो छन्द	उबो	१६वी	१२-१३	लि. क. त्रिकमजी
१२०७	२३२६ (२)	भवानीदासजीरो गीत आदि	साधूराम सेवक	"	३-४	
१२०८	२५३३	भवानीवाक्य		१८६३	६	
१२०९	२२०६	"		१८७७	३	
१२१०	१२५	भागवतदशमस्कध भाषा	हीरकलश	१८२७	७५	
१२११	२८६३ (३७)	भावनागीत	लालचन्द	१८२७	७० वॉ	
१२१२	४७६६ (२)	भाषालीलावती		१७वी	१-१५	वीकानेरके महाराजा रायसिंह के अमराय कोठारी नंणसीके पुत्र जंतसीकी प्रार्थना पर उनके गुरु द्वारा प्रणीत
१२१३	७४१०	भुवनद्वारविचार		१७७५		
१२१४	७७२२ (१०)	भैरव आदिकी बोलीविचार		१६वीं	२०	
१२१५	३२५६	भोगलशास्त्र (भूगोल)		१८वीं	१०७-११४	
१२१६	६७०२	भोगलपुराण		१८८७	१६	लि. क. डोकूदास
१२१७	३४७७	भोजचरित्रचोपाई		१७७२	३०	पत्र १४, १५, १६ अग्रान्त
				१७४०	३५	

क्रमांक	पन्नांक	ग्रन्थ नाम	वर्तों आदि मातृक्य	त्रिपि समय	पत्र सख्या	विशय उल्लेखनीय
१२१८	११२३(४)	मंगलकन्याचरित्र	सर्वाणदसूत्र	१७वर्ष	३०-३४	सं० १५२५में रचित
१२१९	३५१६	चोपाई	मंगलधम	, १८८०	१२	
१२२०	३५५४(७)	,	लक्ष्मीहय	१८६६	१-१२	
१२२१	३६७४	,	लक्ष्मीकीर्ति	१७वर्ष	३०	
१२२२	३५३३	काग	कनकसोम	१८७४	७	
१२२३	२०२९	रास	दीप्तिविजय	१८६६	३३	
१२२४	२०८६	"	,	१७वर्ष	४९	
१२२५	२८६३(११३)	मग्य आदि देशके नगर तथा ग्रामों की सख्या			१६८वर्ष	
१२२६	३४८८	मत्स्योदरकुमाररास	पुण्यकीर्ति	१८४८	१५	
१२२७	४८२५	मत्स्योदर चोपाई	गातिहय	१८४८	२३	सि क क्षमासोभाग्य
१२२८	४७६८	मत्स्यवार्ता	खुशियालचन्द जालधरी	१८४०	१०	
१२२९	४४५२(१)	मदन शत	दान ?	२	२	अभूण
१२३०	२१४३(१)	मदनगतकरीवार्ता		१८६०	१-४	
१२३१	११४२(३)	मधुमालतीचोपाई	धनुभू अदास	१८वर्ष	१०२-२११	
१२३२	२३६०(११)	,		१६वर्ष	४७-५७	अभूण
१२३३	३५४७(४)	,		१८२८	१-३३	
१२३४	३५५५(१२)	,		१८२६	५८-८९	
१२३५	३५५६(१)	,		१८४६	१-७७	
१२३६	५३५८(१)	,		१६वर्ष	१-९३	
१२३७	३८६१	,		१८५६	३२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१२७७	१०८६	माणिक्य छन्द	शातिसूरि	१८७०	४	
१२७८	१०८१	"	गुलाल	१९वी	३	
१२७९	२०६७	"	उदयविजय	"	२	
१२८०	३५४७(६)	माताजीरो छन्द	नरसिंह चारण	"	८७ वाँ	
१२८१	३३४७(१०)	"	भगवान भोजग	"	८८-८९	
१२८२	३५४७(१२)	"	सारग कवि	१९वीं	६१ वाँ	
१२८३	३५४७(१३)	"	आढो दूरसोजी	"	"	
१२८४	४४५२(१२)	माताजीरो गीत		"	१६ वाँ	लिक प्रीतिसोभाग्य
१२८५	४४५२(१०)	" रो चरचा	वीकाजी	१८०८	१३ वाँ	
१२८६	४४५२(११)	" रो छन्द	कवि सारग	१८०७	१४-१६	
१२८७	४४५२(८५)	" "	चानणखिडिया	१८वी	१२६ वाँ	
१२८८	७७२१(११)	" "	कुशलनाभ	१९३१	१७७-१७९	लिक अमरसिंह
१२८९	६०४	माधवानलकामकदलाचोपाई		१९४३	१९	१६१६मे जसलमेरमे रचित
१२९०	६१५	"	"	१९वी	२५	
१२९१	६१६	"	"	१८६६	२०	
१२९२	२०६१	"	"	१८वी	२०	
१२९३	२२२२	"	"	१८२४	१२	
१२९४	२३६०(६)	"	"	१९वीं	१४-३७	
१२९५	३५३०	"	"	१७३०	१४	
१२९६	३५५५(१)	"	"	१८३१	१-११	
१२९७	३५६१(१)	"	"	१७२५	गुटका	

राजस्थान प्रायश्चिता प्रतिष्ठान--राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-१]

प्रमांक	प्रमांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि पाठ्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशय उल्लेखनीय
१२६८	३८६५	मायवातल कामकदसा चौपाई	कुणालताभ	१७१६	१४	
१२६९	३६४५	'	'	१६३८	३०	
१३००	४६११ (४)	"	'	१८३०	६	
१३०१	४६२४ (१६)			१७६२	१-२२	
१३०२	६७१	मानतुणमातवतो चौपाई	अभयसोम	१७७८	११	५ स १७२७में रचित, विक्रमपुर में लिखित
१३०३	३६४७	'	'	१८६५	१०	
१३०४	३६७६	"	"	१८३१	२१	
१३०५	३६७५	'	'	१६वीं	१४	
१३०६	५११८	"	"	१८वीं	२१	
१३०७	१००५	'	'	१८१३	२६	
१३०८	२०३७	'	'	१७६४	२५	
१३०९	२०४६	"	"	१७८०	३३	
१३१०	३२४१	'	'	१६वीं	४१	
१३११	३२६१	"	"	१८४५	३५	
१३१२	३४४४ (१०)	'	"	१८८३	१३-२५	
१३१३	३६४६	'	"	१७७६	२२	लि स्या राजनगर
१३१४	६१३८	'	'	१८०६	४४	सं १७१०में रचित
१३१५	६१३६ (१)	'	'	१८७८	६५	चित्र सं ८८
१३१६	६२६७	'	'	१८१४	३६	लि क आतसचर
१३१७	६३३५	'	'	१८२४	५०	

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३१८	६५३४	मानतुगमानवती चोपाई	मोहनविजय	१८७६	७६	
१३१९	७३६६	"	अभयसोम	१८२८	११	
१३२०	७५२८	"	मोहनविजय	१८६२	८४	
१३२१	७५५७	"	"	१७६७	३५	
१३२२	३२२२	सामेरू	प्रेमानन्द	१८७४	१६	
१३२३	२८६३ (४७)	साख्देशनिंदा गीत	?	१७वीं	८८ वीं	
१३२४	४४५२ (८०)	मासधि चक्र ?		१८वीं	१२३ वीं	
१३२५	३६७७	मीया बीबीरी वात		१६वीं	२	
१३२६	३४६८	मीरा कबीर आदिके अनेक पद-संग्रह		१८६०	२०	
१३२७	२८६३ (२६)	मुखवस्त्रिका विचार चोपाई	हीरकलत्र	१७वीं	६४-६५	
१३२८	३४८२	मुजु सबध		१६वीं	२	
१३२९	२०२१	मुनिपतिचरित्र चोपाई	धर्ममन्दिर	१८४१	२६	
१३३०	२१२६	"	'	१८१८	३१	
१३३१	२८६३ (२४)	"	हीरकलत्र	१६१८	१३-५८	
१३३२	६५२६	"		१६वीं	२१	
१३३३	६३५५	"		१७६६	३१	
१३३४	३४८१	चोपाई		१५६६	३८	
१३३५	३४६४	"		१७वीं	३५	
१३३६	३६७८	"	धर्ममन्दिर	१८८६	५४	
१३३७	३५७५ (३७)	मुनिमालिका	चारित्र सध	२०वीं	१८१-१८६	

सं १५५०में रचित

राजस्थान प्राध्यापिका प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-१]

क्रमांक	प्र.चा.क्र.	ग्रंथ नाम	कर्ता प्रा.ि जात्य	विविध समय	पत्र संख्या	विवरण उल्लेखनीय
१३३८	३६७६	मनिमालिका	चारित्र सय	१६वीं	२	
१३३९	५४३६(४)	,	व्यायण	२०वीं	२६-३३	सं १६३६में रचित
१३४०	६२७२	,		'	५	
१३४१	८७३	मुमनाकृतिकी घमनी दवा		१७वीं	६१ वीं	
१३४२	११२३(१०)	मूटिकाल			१-१००	पत्र सं १६५३ ५४ ५५ ६८, ६९ ८५, ८६ ८६ १०० अप्राप्त
१३४३	२५३१	,	महती नेगती			
१३४४	३३४१(१)	महता नणसोरी स्यात प्रथम भाग				
१३४५	३३४१(२)	,	"		१०१-१६६	पत्र सं १०१ १०७, ११० १११ ११५ ११६ १२१ १२३, १२५ १६२ १६७ १६८, १७० १६४ पत्र अप्राप्त
१३४६	३३४१(३)	,	"			
१३४७	३३४१(४)	ततीयभाग	,		२००-३००	पत्र सं ३०८, ३१६, ३३६ ३४१, ३६० ३६४ ३६६ अप्राप्त
१३४८	३३४१(५)	चतुर्थभाग	,		३०६-४०	जीण प्रति
१३४९	३३४१(६)	,	"		४०१-५००	पत्र ४१५ ४३५ ४६१ ४६३
१३५०	३३४१(७)	पंचमभाग	"		५०१-६००	तथा ४६६ वीं अप्राप्त
		षष्ठभाग	"		६०८-७००	पत्र सं ५५५ ५६६ ५७६ अप्राप्त
		सप्तमभाग	"		६०८-७००	पत्र सं ६६१से ६६८ अप्राप्त

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि गानव्य	लिपि समय	पत्र मत्स्या	मिशेष उल्लेखनीय
१३५१	३३४१(८)	मुहता नेणसीरी रयात अट्टसभाग	मुहता नेणसी		७०१-७६५	पत्र सं ७३०, ७३६, ७५४, ७५५, ७५७, ७५६, ७६६, ७६६, तथा ७७१ वीं अप्राप्त
१३५२	३३४१(९)	" नवमभाग	"			भाग १, ८ तकके स्फुट पत्र
१३५३	३२५५	मुहता बाकीवासजीरो गीत ?			१	याजीदासजी रचित मुहता विषयक गीत
१३५४	३५२०	मुहते		२०वीं	२	
१३५५	३५२१	"		१६वीं	२	
१३५६	३५३७	"		"	१	
१३५७	३५५६	"		१८वीं	२	
१३५८	३२६५	मुहतीनि		१८वीं	१	
१३५९	११४४(३)	सूखेंगहूसरी		१८वीं	२०-३२	
१३६०	२८६३(६४)	सूलनक्षत्र विचार आदि		१६वीं	१३१ वीं	
१३६१	२८६३(१०६)	सूतपरीक्षा तथा कालज्ञान		१७वीं	१६५ वीं	चित्र सं ४८
१३६२	५८६१	सुंगलेला चौपाई सचित्र		"	५३	
१३६३	३५७३(२२)	सुंगपुत्रसधि	सुनि सागरचन्द्र	१८वीं	६७-६८	
१३६४	३६४४	"	अत्याणतिल	१६४७	४	
१३६५	६६१	सुंगावती चौपाई	समयसुन्दर	१६६०	२८	
१३६६	३८६६	"	"	१८वीं	२५	
१३६७	३६४८	"	"	१७वीं	३४	
१३६८	३६८०	"	"	"	६०	

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि नातय	लिपि समय	पत्र सख्या	विगण उल्लेखनीय
१३६६	७०५७	मागावती चरित	समयसुन्दर	१८वीं	३८	
१३७०	४०८६		,	,	२४	
१३७१	६४३३		,	,	२३	
१३७२	६२५०	चोपाई			१३	
१३७३	२३१७(२)	मुगापुत्र सभाय	खेमसुनि	१६वीं	३ रा	
१३७४	३५७३(१२)	मेघकुमार चौदालियो	कनककवि	१६६१	३४-३५	
१३७५	३६४६		,	१८६१	७	
१३७६	३६८१		यादव	१८८१	३	लिखा प्राणदपुर
१३७७	६८३८			१७३८-४६	५३	१२ कृतियोंका संग्रह
१३७८	१७६८	मयमाला		१६वीं	३३	
१३७९	१७८६	"		१८४६	५	
१३८०	२२०८	मेघमाला		१६वीं	२	
१३८१	४२८२				५	
१३८२	३५५०(१५)	मेडता आदिकी ऐतिहासिक हकीकत	जिनेंद्र	१८७१	६१-६२	*
१३८३	२-२६(१)	मेवाडको छंद		१-३		
१३८४	४६१४(१६)	मेरजयमाला		२०६वां		
१३८५	४४५२(६०)	मेरसज्जति आदि विचार		११७वां		
१३८६	६६२२	मणरेहा चोपाई	श्रीसार	१८४६	७	लिक केसरीचंद
१३८७	३१६६		,	१८वीं	६	
१३८८	३२०८	मोती कवासिया सबाद चोपाई		१७२५	२	
१३८९	३८६७	"		१६६५	४	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-१]

क्रमांक	ग्रंथाङ्क	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि शतव्य	लिपि समय	पृ. सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१३६०	३६५०	मोतीकपासिया सवाव चोपाई	श्रीसार	१७वीं	७	लि.क. नित्यसागर
१३६१	५१०२	"	"	१८वीं	५	स० १७४१में रचित
१३६२	८३	मोह विवेकरास	धर्ममन्दिर	"	७७	लि.क. भीमविजय
१३६३	५६०१	"	"	१७६६	६६	
१३६४	६७६२	मोहसरद राजाकी कथा (गोतम- महावीर सखाव)	"	१६५३	१३	
१३६५	६६०	मीन एकावशी व्याख्यान	रतनु हुमीर	१७वीं	४	
१३६६	७०७७	"	नयसुन्दर	१८२४	५	
१३६७	६२३	यवुवशा यशावली	रतनु हुमीर	१८१५	१६	
१३६८	१५६८	यशोधर रास	नयसुन्दर	१७वीं	२१	
१३६९	२०२५	"	उदपरत्न	१८०३	५४	
१४००	२१३७	"	जागद	१६वीं	२०	
१४०१	१८२८	यावव रास	पुण्यरतन	१६६०	३	
१४०२	२८६३(७६)	युद्धवर्षादि विचार	नयविजय	१७वीं	१४२ वीं	जोषं पत्र
१४०३	६४००	योगवृष्टि स्वाध्याय	नयविजय	१६वीं	५	
१४०४	७२७	योगरत्नाकर चोपाई	नयनशेखर	१८१४	१२८	स० १७३६में रचित
१४०५	६४१	योग बालावबोध	भेरुसुन्दर	१६वीं	६७	
१४०६	६४२	"	"	"	५६	
१४०७	३०३२	"	"	"	४८	
१४०८	५४१८(१८)	योगसारके दोहे	योगसच	"	१३४-१४०	
१४०९	५४५०	योगसतन माला सचिन	योगसच	१८४६	११०	लि.क. शोभाराम

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि भातव्य	विविध समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१४१०	८८६	रघुनाथरूपक	मद्याराम सेवक	१६वीं	७६	
१४११	१८३३	रतिप्रभोद	जगन्नाथ	१८५७	१२	स० १८२२में जसलमेरमें रचित
१४१२	६०३८	रत्नकुमाररास	सहजसु वर	१८वीं	११	
१४१३	११२३ (२४)	रत्नचूड़कुमार चउपई	सेवक	१७वीं	८४-८६	
१४१४	११२४ (६)	"	कनकनिधान	१६७५	१-२२	
१४१५	३५५४ (८)	"	"	१८७६	१-१२	
१४१६	३६८२	"	"	१८४१	२४	
१४१७	३६६२	"	"	१६वीं	१८	
१४१८	४ ८७	"	"	१८१४	१२	
१४१९	२१८०	रत्नरास चौपाई	रघुपति	१८२४	१४	
१४२०	२२३०	"	"	१८६४	३३	
१४२१	३८६४	"	कनकसुन्दर	१८२१	१३	
१४२२	३८६५	"	मोहनविजय	१८१२	५४	
१४२३	३८६६	"	हृदयनिधान	१८७३	२७	
१४२४	६३६	"	सुरविजय	१७७६	३२	तिस्था धोलका
१४२५	६८८	"	"	१८३०	२४	स १७३२में रचित
१४२६	४८१६	"	मोहनविजय	१८६७	५४	त्रिक हिलसोभाग्य
१४२७	६०५७	"	सुरविजय	१६००	७६	
१४२८	६५३१	"	सेवक सुंदर	१८२७	३२	प्रथम पत्र अप्राप्त, स० १७३२में रचित
१४२९	४८३३	रत्नमहेगादासोत्तरी वचनिका	खिडियो जगो	१७४१	७	त्रिक प्रमोदननि

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि जातव्य	निधि नाम	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४३०	८६२	रतन रासो	पिंडिप्रो जगो	१८७६	१४	
१४३१	२३१०	"	"	१८२५	३८	लि स्या मेडता
१४३२	२३६० (४)	"	"	१८४१	१-१३	पत्र सं ५, ६ अप्राप्त
१४३३	३५४८ (३)	"	"	१८वीं	२१-२८	
१४३४	३५४६ (२)	"	"	१६वीं	२४-३१	
१४३५	३५६० (१)	"	"	१८वीं	१-३१	
१४३६	३५७३ (५१)	"	"	१८०६	१२६-१३५	
१४३७	११२३ (६)	रत्नसार राम	सहजसुरार	१७वीं	३६-४६	
१४३८	३६८३	"	"	१८वीं	१५	सं० १५८६में रचित
१४३९	४६१४ (३०)	रत्नप्रथ	"	१८७७	२४८ वीं	
१४४०	४६१५ (३)	रतना हमीररी यात	कवियग ?	१८८७	४२-७५	लि क प्रभुमान
१४४१	१७८०	रमलप्रथ भाषा		१८८५	३०	
१४४२	३७३१	"		१८६७	१५	
१४४३	३७२२	"		१६वीं	१७	
१४४४	१७७४	रमलशकुनविचार		१८७६	३	
१४४५	६७१	रमलशकुनावली	प्रधानन्द	१८०१	४	
१४४६	१८३६	रसिकसुस्तीमास		१७४५	२	
१४४७	५४१८ (२६)	रथिकथा	भानुशक्ति	१६वीं	१५५-१६३	लि.क. रामसागर
१४४८	५४१८ (२७)	"		"	१६५-१६५	
१४४९	८४७	रामसागर		"	६	
१४५०	७४४४ (१६)	रामचबहीसरो	प्रायथन	१८८५	२७०-२८४	लि क नेमविशय

क्रमाङ्क	संख्याङ्क	संघ नाम	वर्ता प्रादि नातथ्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४४१	४२८७(६)	राग वदतपठ		१८वीं	३८-६	
१४४२	४१००			१९वीं	३	
१४४३	४४१८(३४)	रागरामाष्टक		, १७६५	१७५-१७६	
१४४४	७७२०(२३)	रागनामोपरिविग्रह सुभाषित		१७७४	६-११	
१४४५	२८३२(६)	राजकीय हिमावली विगत	प्रभुदास	१९वीं	८६-६८	*
१४४६	२०३६	राजसिंह रत्नवती पवकया रास	शौरकला	१९वीं	७१-८४	
१४४७	२८६३(३८)	, सधि		१९वीं	४-१५	
१४४८	१८३२(२)	राजानराजावतरी वातवगाव	भवानीदास व्यास	१९वीं	१५६-१६६	
१४४९	३५७३(५८)	राजा भोजरी पत्तरमी विद्यारो वास्ता				
१४६०	२३६०(२)	राजा भोजरी वात		१७६८	१-११	
१४६१	४६०६(२)	राजसभारजन	रत्निक ?	१८८७	१-२५	* र का १७५६
१४६२	४६१५(१७)	राजा चवरी वातरा डूहा		१८८७	४०६-४१०	
१४६३	४६१६(२)	राजा भोज माघ पंडित न डोकरीरो वास्ता		१८७५	४५-४६	लि क सीभायगणि
१४६४	७७२१(६)	राजा रत्नरी वचनिका	लिखियो जतो	१८२५	११६-१४१	
१४६५	७७२०(२१)	राजावनी		१८वीं	७	सं १२ ७ से सं १७७० तक के सीसोदिया राणाश्रीका वग परिचय
१४६६	४७६६	राणारी बाणवनी		१८वीं	१	नाणवरा नरेगते अमरसिंह-पुत्र सयामसिंह तक
१४६७	३६८६	राजोपनि मात	जिनवास	१९वीं	२	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-१]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४६८	३६८७	राजुलपचीसी	सालचव	१६वी	८	
१४६९	४६१४ (८)	" बारहमासी	राजुल	१८७१	१६७-१६८	
१४७०	५४१८ (३५)	"	पानवर्चव	१८०६	१-६	लि क क्यानिधि
१४७१	७१४४	"	राजचव	१८५८	४	लि क सख्या
१४७२	७२४३	"	"	१९वीं	२	प्रथम पत्र अप्राप्त
१४७३	५१०४	राठोड रतन म्हेशावासोतरी	सिडियो जगो	१८०२	३७	लि क. धर्मसुंदर
		वचनिका				
१४७४	३५४६ (६)	राठोडारी वसावली	माडण माधोवास	१९वीं	१४-८५	
१४७५	४४५२ (६१)	"		१८वीं	१२६ वीं	
१४७६	४८३४	राठोड नाहरयानरो छव		१९वीं	१	
१४७७	६४४६ (७)	राधाजीकी बाग्रहलडो		"	१४-१६	
१४७८	१००६	राधाविलाप बारमास	प्रेमानव	१८२०	११	
१४७९	७७४४ (३)	राधाविलास		१७५८	८-१७	
१४८०	११२२ (१६)	राधिका कुणतवाव		१९वीं	११-१३	
१४८१	४४५२ (१६)	रामकेशनजीरो छव		१८वीं	१६ वीं	
१४८२	५६०३	रामकुण चौपाई	सावण्णीति	१७११	३०	रत्ना त० १६७७
१४८३	३३८७	रामगुण रासो	माधोवास	१७८३	३७	
१४८४	३३८८	"	"	१८२६	४४	
१४८५	३५४८ (५)	"	"	१७६१	७३-१३६	
१४८६	३५४६ (१)	"	"	१९वीं	१-२३	
१४८७	३५६७ (१)	"	"	१८०६	१-७१	

क्रमांक	ग्रामांक	ग्राम नाम	वर्तमान प्रादि गातव्य	निवि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१४८८	४६२४(५)	रामगणरातो	माधोदास	१७८८	१-३२	नि क जयसोनायकगणि
१४८९	७७२१(२)			१८२४	२५-६६	
१४९०	७७३५			१८८०	८१	
१४९१	३४५३(२)	राम चरिय		१८७६	१६-१०१	
१४९२	३४५७(७)	रामचंजीरो गणवरो		१९८०	८५ या	
१४९३	६४६७	रामचंद्र गणवरो	रामनाथ		६	
१४९४	७८१०(२)	रामचरणदासजीमण्ड	रामचरणदास	१८८०	२६-२३०	
१४९५	६८४३	रामजसरसायन		१८६४	११४	
१४९६	३४५५(३)	रामदासजीरी बात		१९८०	१६८-१७०	
१४९७	७७४४(१)	राममन्वरी	गोविंददास	१७५८	१-२	
१४९८	३८६७	रामयनोरसायन	के. ग. राज	१८७१	६५	७ म० १६८०में रचित
१४९९	३६८८			१८४७	१००	
१५००	६३५७			१७६४	८६	
१५०१	८०२	रामरक्षा नावा		१८६४	१	
१५०२	२३०६(२)			१८५६	६-१३	
१५०३	१७५६(२)		रामावली	१९८०	८८-६२	
१५०४	७६०६	मत्र			३	
१५०५	४४६	रामविनोद नापा यचनिका	रामचंद्रमति	१९३०	१५१	पत्र १०० से १०५ तथा ११७ से ११९ मसगत
१५०६	२६२०			१९८०	२६	
१५०७	११२२(१५)	रामाभरण लुर	जैस बयि	२०८०	६ या	
१५०८	७१४०	रामप्रबन्धनिगमय ग्यारह प्रान			७	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५०६	३४८४	रावणसंवाद	लक्ष्मणसमय	१८वीं	२	
१५१०	११२२ (२०)	"		१९वीं	१३-१४	
१५११	७७२२ (८)	राव सन्नसालरो गीत		१८वीं	१०५ वाँ	
१५१२	४४५२ (७५)	रासभचक्र		"	१२३ वाँ	
१५१३	२५३६	राहुविचार		१९वीं	१	
१५१४	२२१५	रात्रीभोजन चोपाई	धर्मसमुद्र	१६७७	६	
१५१५	३४८३	"	"	१७५४	७	
१५१६	३५७३ (१७)	"	"	१९वीं	५१-५७	लि. क. भक्तिविद्याल
१५१७	४४५७	"	"	१७२३	७	
१५१८	४६१४ (४३)	" रास		१८७७	२६८-२७२	
१५१९	४६१४ (४१)	" सत्भाय	कवियण ?	"	२६६ वाँ	
१५२०	४६१४ (४२)	" "		"	२६७-२६८	
१५२१	६२६	रोसालू कुवरी चारता		१८६०	७	
१५२२	३५५३ (४)	"		१९वीं	१२७-१५६	
१५२३	३५७३ (६०)	"		"	१७१-१७५	
१५२४	३६६०	"		१८१०	१५	लि. क. अनूपविजय
१५२५	४६०५ (१-२)	"		१८७५	१-२५	
१५२६	३५७३ (४५)	रोसालूरा ङ्हा	नरवदो चारण	१९वीं	१०६ वाँ	
१५२७	७१२२	रुमिणीमंगल (कृष्णजीको व्याहलो)		"	१२-४२	अपूर्ण
१५२८	६६७५	रुमिणी व्याहलो		१८६७		गुटका, सं० ४८ से ६४ तकके पत्र अप्राप्त

क्रमांक	ग्रन्थनाम	वर्तमानादि ज्ञातव्य	लिखित समय	पत्र संख्या	विंगय उल्लेखनीय
१५२८	शनिमणी बली सवालवाद्योप	पद्मवीराज	१८२६	४३	त्रिक जीवणदास टी कुगलधीरगण
१५२९	वनी सटीक	टो ली धविज्ञान गिवनिधान	१७८६	२८	जीण
१५३१	नागवमण श्रादि	विजराज	२०वीं	मुद्रका	
१५३२	" राजस्थानी श्रयसहित	भवानीदास पुष्करणा	१८वीं	२७	
१५३३	शनिमणीहरण		१६०४	१२	
१५३४	,			६	
१५३५	रास		१६वीं	७	
१५३६	रूपदीपक विपाल			१५	पत्र सं० १ १२ अर्प्राप्त
१५३७	रूपसंगुमार रास संचित		१८५८	७	# सं० १७७६में रचित
१५३८	रूपसोमरी कथा		१८वीं	१३	त्रिक साध्वी मेरुक्षी
१५४०	रटिया सञ्भाव			८-६	
१५४१	रवासके पद	रतनबाई	१८८२	२-३	
१५४२	रोहिणी तपमहिमास्तव्य	रदास	१८११	२०१-२०६	त्रिक रामदास
१५४३	,	भीसार	१६वीं	१६६ वीं	
१५४४	,		२०वीं	२६०-२६४	
१५४५	सामदोषावली		१८वीं	२२	
१५४६	साक्षा फुलाणोरी वात		१८८१	३	
१५४७	कविस	हेमरतन	१८२६	१५६-१६१	#
१५४८	सीतावती घोषाई	नाभयवदन	१६वीं	८३ वीं	#
१५४९	"		१७वीं	१६	सं० १७७३में पात्रीमें रचना
			१७४२	१४	पत्र १ ३ अर्प्राप्त

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पग सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५५०	६३७८	लीलावती चोपाई	लाभयद्धन	१६वीं	३६	
१५५१	३५६४ (२)	लीलावती भाषा	लाताचव	१८६१	११-३५	स० १७३६में बीकानेर में रचित
१५५२	३७१८	"	"	१८४५	२१	
१५५३	३७२३	"	"	१६वीं	१५	
१५५४	६०५६	"	"	१७८३		
१५५५	४८३६	" रास	उदयरतन	१८०७	१६	लि.क. जेठा
१५५६	५२८६	" "	"	१६वीं	१२	स० १७६७में रचित
१५५७	६८७	लीलावती मुमतिवितास रास	"	१८४२	१४	
१५५८	२०५०	"	"	१८१७	१३	
१५५९	३२२७	"	"	१८७१	११	
१५६०	३५१५	"	"	१८वीं	१५	
१५६१	३५६७ (८)	लेखा	मुमतिकीति	१६वीं	१०७-१०८	
१५६२	४६१४ (२५)	लकायत निराकरण प्रतिमा स्थापन रास	मुमतिकीति	१८७७	२३४-२४२	
१५६३	३५५५ (१०)	वृ वबहुतरी	वृ द	१६वीं	१-२	
१५६४	२८६३ (१२३)	युद्धगुर्वाविली	हीरकलभा	१६१९	१७८-१८२	
१५६५	३५१३	युद्धसागर निवाण-रास	दीपो	१८०५	१०	
१५६६	४४५२ (६२)	युद्ध जवानको भागडो	आनदविधान	१८वीं	११८ वां	लि.क. प्रीतिसीभाग्य
१५६७	३४८६	यच्छराज चोपाई	जिनोदय	"	२१	
१५६८	४०८८	"		१८६१	३३	लि.क. रूपविजय
१५६९	२१५८	चकचूल कथा		१६वीं	१८	

क्रमांक	प्रमाण	ग्रन्थ नाम	कर्ता यादि नातथ्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१५७०	४७८१	यथ्याकल्प	सुपमल	१८१४	४	
१५७१	७७२६	वगभास्कर		१८४३	१८४	लिक वा रूठ बालाबकसजी
१५७२	७७२७	वचनामृत	सहजानंद स्वामी	१८४०	१०२	
१५७३	१६८०	मणिकथण		१८वीं	८४ वीं	
१५७४	११२२ (६६)	व्याख्यानपद्धति			२	
१५७५	१०१४	वचनिका		१६वीं	एत ३६	कोटी कापी
१५७६	२८४६	वदमानादि चौबीसीनमस्कार	होरकलन	१७वीं	४-५	
१५७७	२८८३ (८)	शमक धाररी निमाणी	केपवदास	१८२४	२६-११०	लिक जयसौभाग्य
१५७८	७७२१ (३)	वदोरथति		१७६३	१-१४	
१५७९	४८२४ (६)	वदोरथति		१६वीं	२	
१५८०	४७१६	वदोरथति		१८७६	७४	लिक भद्रवास
१५८१	७१४१	वदोरथति		२०वीं	१	
१५८२	२६४६	वदोरथति		१६वीं	१६-२३	
१५८३	१८३६ (४)	वदोरथति	समयपुर	१८३८	४-५	
१५८४	२२१३ (३)	वदोरथति		१८वीं	८	
१५८५	३४८४	वदोरथति	रूपकुल	१८५०	१७६	
१५८६	३३३५	वदोरथति		२२६-२४२	८६ वीं	
१५८७	४३७६ (२०)	वदोरथति	होरकलन	१७वीं	२६	
१५८८	२८८३ (४६)	वदोरथति	सकलचंद्र	१७४१	४७-६३	
१५८९	२१२४	वदोरथति		१८२७		
१५९०	२३७४ (१३)	वदोरथति				

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-१]

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५६१	३८६६	विक्रम लापरा चौपाई	अभयसोम	१७६७	६	
१५६२	६७३८	"	"	१६वी	१६	
१५६३	१८१५	विक्रमचरित प्रबंध	उदयभानु	१५६७	२०	
१५६४	६४१४	"	हेमानंद	१६वीं	२७	
१५६५	६६१५	चौबोलीसतीचौपाई	अभयसोम	१८६५	११	
१५६६	३५५५ (२८)	विक्रम चौबोली चौपाई	जिनहर्ष	१६वीं	१६२ वॉ	सं १७२४में रचित
१५६७	२१२७	"	अभयसोम	१८६६	८	
१५६८	२१४३ (३)	विक्रम चौबोलीरी वात		१८६०	७-८	अस्य २३वां पत्र अप्राप्त
१५६९	२८६०	" चौपाई	"	१६वीं	२२	
१६००	२२५५	" "	"	१७६८	११	
१६०१	३६००	"	"	१७८२	१२	
१६०२	१०११	विक्रम चौबोली तथा प्रहेलिका	जिनहर्ष	१६वी	२	
१६०३	२३७५ (४)	विक्रम पंचवड कथा	सामलदास	१६०६	१४०-१७६	
१६०४	२२०५	" चौपाई	लक्ष्मीवल्लभ	१८५३	११६	
१६०५	३८६८	" "	"	१८वी	७२	
१६०६	३६५१	" "	"	"	७१	
१६०७	३६०२	" "	"	१८८१	८४	
१६०८	३६६४	" "	" कीर्ति	१६वी	१०६	
१६०९	२०८०	" रास	नरपति	१७६२	३४	
१६१०	२१२८	विक्रम रास	लाभबंधन	१८६६	२३	
१६११	१८२५	विक्रमसेन चौपाई	पदमसागर (?)	१८१६	४५	

क्रमांक	प्रमाणक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि मातृव्य	त्रिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१६१२	२०१६	विष्णुमत्स्यचोपाई	परमसागर	१६३५	६१	र का १७२४
१६१३	३८६८	'	मानसागर	१८२८	३६	
१६१४	३८६८	'		१७८४	४८	
१६१५	३६६१	'		१७६८	३३	
१६१६	३५७३ (४६)	विष्णुमत्स्य गीता	सहस्रनामस्य गीता	१६३०	५५-१५३	खण्ड
१६१७	७०१४	विष्णुमत्स्य भूपाल पद्यक वरिण	सहस्रनामस्य गीता	१७६२	५५	र का सं १७२४
१६१८	६४१५	विष्णुमत्स्यसौख्यी	घनदेवी (?)	१६७७	६	ति स्या देवगङ्गा
१६१९	१०१६	वरिण चोपाई	नरपति कवि	१७०६	३२	
१६२०	३६०१	नवसौत क-या चोपाई	सामर्थयन	१८४८	१६	
१६२१	२०६२	विचारबासायस्योप		१७३०	१७	
१६२२	११२३ (१६)	विचारस्तवम	सेवक	१७३०	७७ वां	
१६२३	११२२ (६)	विष्णुमत्स्यसूत्रि नीताणी छ-द	वद्वि	१६३०	४ या	
१६२४	३५७४ (२१)	विष्णुमत्स्य विष्णुमत्स्येणो चोडातियो	चंद्रकोतिसूरि	२०३०	६५-६७	
१६२५	७६२	सावणी	साविक-द		३	
१६२६	२२२७	विष्णुमत्स्यचोपाई	राजसिंह	१७३०	६	
१६२७	३६५२		"	१६६३	१३	
१६२८	३६६७		विष्णुमत्स्य	१८५०	२१	
१६२९	६१११			१८२६	१८	
१६३०	११२३ (१)	पयाडक	हीराणवसूरि	१६३१	२-५	सं १४८५ में रचित
१६३१	१८२४ (२)			१६३०	४-८	
१६३२	१८२७			१६७६	६	

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पग सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६३३	२०१३	विद्यावितास पवाउक	हीराणवसूरि	१६वी	५	सं १८१०में रचित
१६३४	३५४४	"	हीराणव	१७वी	६	
१६३५	१००४	विनयचटरास	अपभसागर	१८७६	५३	
१६३६	४०६६	विनयचट श्रेष्ठिपुत्र कथा	"	१६वीं	७०	
१६३७	२१२३	विमलमत्री रास	लावण्यसमय	१८वीं	२६	
१६३८	२३७४ (१७)	"	"	१८५७	८३-१४१	
१६३९	३५३४	"	"	१७वीं	६५	
१६४०	४४५२ (४१)	विमलसाहजरीरो सिलोको	शांतिविमल	१८वी	४५-४८	
१६४१	४१४५	"	"	१४	१४	
१६४२	३५४६ (१)	विमलसाहजरी नीसाणी	केसोवास	१८०६	१-५	
१६४३	३५५५ (१८)	"	"	१६वी	११४-१२१	
१६४४	३५५५ (२२)	"	"	"	१४५ वीं	
१६४५	३५७३ (७)	"	"	"	३० वीं	
१६४६	३६६६	"	"	"	११	
१६४७	३५५५ (२६)	विमलसे सोनगारी वात	अभयकुशल	१६वी	१६३-१६८	
१६४८	२५१७	विवाह दोष	अभयकुशल	१६वी	६	
१६४९	६८२	" पटल चोपाई	अमरसाधु सोमसुन्दरशिष्य	"	६	
१६५०	३७३४	विवाह दोष वालावबोध सहित	अमरसाधु सोमसुन्दरशिष्य	१८१६	३२	
१६५१	३७७२	विवाहपटलभाषा	मत्स्यकुशल	१८६०	४	
१६५२	२८६३ (११८)	विविधकृत गीत	"	१७वीं	१७३ वीं	
१६५३	२८६३ (१०५)	" महर्तनशा विचार	"	"	१६४-१६५	

क्रमांक	प्र.पांक	प्र.प नाम	वर्ता भादि नातव्य	निधि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१६१७	३५७३(२५)	विषयस्तवन	प्रचलकोति	१६वीं	७० वीं	
१६१८	४५५२(५३)	विषयरा विचार ?		१८वीं	१०६ वीं	
१६१९	४६१४(५)	विषयधर स्तोत्र		१८७१	१६०-१६१	
१६२०	६३३४			२०वीं	१३	
१६२१	२२६५	विहारभजन	गिबवान	२०वीं	२	
१६२६	३५७५(८३)	विहरमान स्तवन	प्रमसी	२०वीं	३६१-३६५	
१६२७	३५७५(९७)	वीरभार मठन आदि जन स्तुति	हीरकलन	१७वीं	६६ वीं	
१६२८	३५५६(३)	वीरका सोरठरी वात		१६वीं	५१-६५	
१६२९	३५६२(१३)			१६७०	८२-११६	
१६३३	३५७५(६७)	वीरजिन गृहलो	विद्यारंग	२०वीं	२६६ वीं	
१६६४	३५७५(८१)	वीरजिन पचकस्याणक स्तवन	सकलचद		३५६-३५२	
१६६५	४१६	वीरजिनस्तवन	पनीविजय	१८७६	८६	
१६६६	३५७५(७८)	वीरजिनस्तुति		२०वीं	३२७-३४०	
१६६७	३५७५(६५)	वीरदेगना स्तवन	गिबवर पाठक		२६७-२६८	
१६६८	३५७५(७२)			१८वीं	१५२-१५६	
१६६९	२१४८	वीरभाण उवभाण चौपाई	कुंगलसागर	१८४२	४८	कृ तिक आणदराम
१६७०	७७२२(१४)	वीरमे ईरिया आदिके कवित्त			३०६ वीं	
१६७१	७७६६(१)	वीरमे वनारी वाता सचित्र		१८५६	१-३७	चित्र सं० १८
१६७२	४१३६	वीरसेत राजकथा आदि		१६२४	८	सं० १७४५में रचित लिक जोबो
१६७३	२१४३(४)	वीरसेतव सुपर सिमाररी वात		१८६०	६-१३	*

पयविजयकृत बालायबोध सहित

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६७४	३५७५ (२३)	वीसस्थानकस्तवन	वसतो मुनि	२०वी	१००-१०२	
१६७५	३६६८	वीसस्थानक रास	जिनहर्ष	१८२५	१८१	
१६७६	३६७४ (१४)	" पद पूजा तथा विधि	लक्ष्मीसूरि	१६वी	६३-७१	
१६७७	११२३ (१५)	वीसायत्र चतुर्वि	अमरमुन्दर	१७वी	७६ वां	
१६७८	६३४	वेतालपचीसी		१८८०	६५	
१६७९	२१४४ (१)	"		१६वी	१-१५	
१६८०	२१४३ (५)	"	देवसील ?	१८६०	१३-३५	
१६८१	२३६० (६)	"	देवीदान नाइता	१८४६	२६-५४	
१६८२	३२४३	"	"	१८५४	१६	
१६८३	२८३०	"	"	१६वी	१३	
१६८४	३५५४ (६)	"		१८८०	१-१३	
१६८५	३५७३ (१)	" चोपाई	हेमाणव, हीरकनशा शिष्य	१८१२	१-१७	
१६८६	५३६८	"		१६वी	४०	
१६८७	६४४३	"	म. श्रनूपसिंह	१८६१	४४	
१६८८	७०४४	"	शिवदास	१७२६	५२	लि.क. पुरुषोत्तम
१६८९	७७२२ (२)	" रा कवित		१७८४	३७-४५	* लि. क. सिरिकवरी
१६९०	७७४३	वेदस्तुति भाषा	राजसिध	१६वी	३३-४६	कवित ६१
१६९१	३६०३	वैदर्भी चोपाई	प्रेमराज	१८वी	७	*
१६९२	३६६५	"		१८५६	६	
१६९३	३८५३	वैद्यकगुणसार		"	१०८	१,३ पत्र यप्राप्त
१६९४	२४०६	" नुलसा		२०वी	६	

सं १६१६में रचित । दृढावध

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-१]

क्रमाङ्क	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७१४	४६८६	शतसत्सरी		१८वी	६	
१७१५	४७२५	"		१६वी	४६	
१७१६	३५६४ (६)	शनिचार		१८६१	३३-३४	
१७१७	१७७८	शनिपुस्तक विचारादि		१८वीं	२	
१७१८	४४५२ (६५)	शनीसररो गुण छन्द	हेमकवि	"	११६ वां	लि.क. प्रीतिसौभाग्य
१७१९	४१६९	शनीसरकथा		१८४०	२१	लि.क. गोपाल मिश्र
१७२०	४७८८	"		१६वी	६	
१७२१	४८२४	"		१८३६	२	
१७२२	६३०७	" छन्द		१६वी	२	
१७२३	२३०६	श्यामाजीकी आरती	मगनीराम	२०वी	१	
१७२४	२३०७	"	"	"	१	
१७२५	२३१७	"	"	१६१६	२	अजमेरसे लिखित
१७२६	१०५३ (२)	श्राद्धविधिप्रकाश	श्यामाकल्याण	१८४१	१७-२७	
१७२७	३५६७ (१८)	श्रावकारी चोरासी न्यातरो छन्द		१६वी	१३५ वां	
१७२८	७४४४ (८)	श्रावक प्रतिचार		१८८५	१८०-१९०	
१७२९	७१२२	" कथा कोष भाषा	जितहर्ष	१६वी	२१	अपूर्ण
१७३०	७७५३ (८)	" रो सज्जाय		१८३७	४२-४४	
१७३१	२०२८	श्रीश्रानी कथा	देवविजय	१६वी	७	
१७३२	१५६७	श्रीचन्द्रकेवली रास		१७१७	६२	
१७३३	६५० (१)	श्रीवत्त श्रीमतीरी कथा		१८वीं	१-२	
१७३४	७८१६ (१)	श्रीधरलीला		१८३१	४८	

क्रमांक	प्रत्यांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि नातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१७३४	६०२४	श्रीपातकथा	रत्नदीक्षर	१७२७	२६	
१७३६	६१४१	," चरिय भाषा	सुजसविजय	१६१७	१०२	लिंक मागूसल प्रथम पत्र अष्टास
१७३७	६६१६	,"	साहिबीबय	१६२८	७८	
१७३८	३६०५	श्रीपात चौपाई	विनहृय	१८५१	४३	
१७३९	४००२	,"	,"	१८२३	२५	
१७४०	४१३८	,"	,"	१८६४	३४	
१७४१	६५२७	,"	प्यातसागर	१७६१	३४	
१७४२	७०८६	श्रीपात नरेंद्र कथा	हेमचव	१८८३	१३७	लिंक गोडीचव
१७४३	७२४८	,"	,"	१६४०	३१	
१७४४	६८०	श्रीपात रास	विनयविजय	१६२३	७८	
१७४५	६८५	,"	आनसागर	१८४०	८	
१७४६	६६१	,"	विनहृय	१८१४	२७	
१७४७	१००१	,"	विनयविजय	१६१७	८४	
१७४८	११२४(२)	,"	आनसागर	१६७५	२१-३७	
१७४९	२०५८	,"	विनयविजय	१७८५	४६	
१७५०	२१३८	,"	विनहृय	१८३०	३३	
१७५१	२१५४	,"	विनहृय	१८७८	४३	
१७५२	३४८६	,"	गुणरत्न	१७४०	२२	
१७५३	३६०६	,"	विनहृय	१८३३	२८	
१७५४	३६०७	,"	विनयविजय	१८४२	४६	
१७५५	३६५७	,"	आनसागर	१७५२	११	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-१]

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७५६	४४६३	श्रीपाल रास	ज्ञानसागर	१७३२	१३	
१७५७	६५२८	"	वित्तयविजय	१८५७	५५	
१७५८	६७४६	"		१८७७	गुटका	
१७५९	५३७३ (५)	"	धर्मशाल	१८०९	१०९-११८	
१७६०	२१५०	श्रेणिक चौपाई	जिनहर्ष	१८३५	२३	
१७६१	२१५१	"	सोमविमल	१९वी	१३	
१७६२	२०३०	"		१६२०	२१	
१७६३	४४५२ (७७)	श्वानसूक्त		१८वी	१२३ वाँ	
१७६४	२८९३ (८२)	श्वानचोष्टा विचार		१७वी	१४३-१४४	
१७६५	२८९३ (७५)	" शकुन विचार		"	१४०-१४१	
१७६६	२८९३ (४४)	शत्रु जय इगतालीस नाम गभित- नमस्कार		"	८७-८८	
१७६७	६३८९	शत्रु जय उद्धार	भानुभेह	१६६७	६	*
१७६८	१००२	" , रास	समयसुन्दर	१८३६	८	
१७६९	१८३९	" "	"	१८२९	१०-१९	स १६८२में नागोरसे रचित
१७७०	२२२६	" "	"	१८वी	२३	
१७७१	३५५४ (३)	" "	नयसुन्दर	१९वी	६०-६२	
१७७२	३९५३	" "	"	१६६५	६	
१७७३	६५३८	" "	"	१८वी	६	लि क. दानविजय
१७७४	५४३६ (२)	" रास				
१७७५	३५७५ (५७)	शत्रु जयवीनती	देवचन्द्र	२०वी	५-१७	
						२७७-२८०

क्रमांक	प्रमाणिक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१७७६	२८६३(४)	गणजय स्तवन	रगकसन	१७वीं	३ रा	
१७७७	३५७८(२७)	शांतिविन्द स्तवन	मयमुनि	२०वीं	११३-११७	
१७७८	३५३६	नातिनाथ चौपाई	नालसागर	१८वीं	५०	
१७७९	३६०४		युगसागर	१८८७	२२	
१७८०	२३६८(३)	शांतिनाथ स्तवन	गणिकुशल	१९वीं	२६-३१	
१७८१	२३६८(१०)	' ,	हयधम	'	३६ वां	
१७८२	३५७३(२३)	' ,	गणिकुशल	१८२४	२२०	पत्र सं० १०४ १०५ अत्राप्त
१७८३	५८६०	रास	हयधम		६८-६९	
१७८४	२०७१	गारवरा छन्द	गणिकुशल	१९वीं	३	
१७८५	२०७४	"	'	१८७०	२	
१७८६	२१०२	'	'	१९वीं	२	
१७८७	७७२०(७)	गारवाटक	'	१८वीं	४५ वां	
१७८८	४०२४	चरित्र	मतिसार		१२	सं० १६७८में रचित
१७८९	६५३	नातिनाथचौपाई	"	१७७५	१९	
१७९०	६८३	'	'	१८१३	१५	
१७९१	१००७	'	"	१८वीं	१७	
१७९२	१८३९(१५)	'	'	१८३१	६७-११०	
१७९३	२०२०	'	"	१८२१	१७	
१७९४	२१८६	'	"	१७वीं	२५	
१७९५	२३७४(१)	'	"	१८५७	१६	
१७९६	३४८७	'	"	१७वीं	२४	

क्रमांक	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१७६७	३५५४ (६)	शालिभद्रचोपाई	मत्तिसार	१८७६	१-८	
१७६८	३८७०	" "	"	१६८६	१८	
१७६९	३६५५	" "	"	१७वी	१८	
१८००	३४६५	" "	"	"	६	
१८०१	३५५० (७)	" "	मत्तिकुशल	१६वीं	५०-६६	
१८०२	४८०४	" "	"	"	१२	
१८०३	५०६५	" "	"	१८४३	१८	लि. रूथा सवाई जयपुर
१८०४	६१४०	" "	"	१८१८	४८	
१८०५	६५४३	" "	"	१८५१	२६	
१८०६	६८४६	" "	"	१८२८	१७	
१८०७	७५६३	" "	"	१७७२	१३	
१८०८	७५६४	" "	"	१८०६	२६	लि. क. खुशातचव
१८०९	५४५८ (२)	" श्लोक	"	१८५६	१-१०	
१८१०	६४१३	शालिहोत्र	"	१८५१	८	
१८११	३५४६ (४)	" "	"	१६वी	४०-४५	
१८१२	३५५० (६)	" "	"	"	४१-५०	
१८१३	४७७७	" "	"	२०वी	६०	
१८१४	६८२६	" गूटका	"	१६१५	१०५	१,३ पत्र अग्रान्त
१८१५	७७३०	" गूटका	"	१६४३	३४	लि. क. राव जयसिंह, वदनोर फतेबुर्जमध्ये
१८१६	७७६७	" सचित्र गूटका	"	१६वी	१३६	चित्र सं० ११८

क्रमांक	प्र.पा.क्र.	प्रथम नाम	वर्तमान प्रादि नाम	वर्तमान समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१८१७	७८३७	गातिहोत्र सचित्र		१६वीं	६-७२	विद्यमान सं० ५८
१८१८	३५७५ (३०)	गायत्रीजितवरास्त्रवत		२०वीं	१३०-१३८	
१८१९	२८६३ (११७)	गायत्रीय विचार	केनयवास	१७वीं	२३६-२४२	
१८२०	११३८	गणितसंस्कृत		१६वीं	१६	
१८२१	३५७५ (५३)	गणितसंस्कृत		२०वीं	२५१-२५२	
१८२२	२८५३	गणितसंस्कृत		१८६६	१४	
१८२३	३५७६ (२१)	गणितसंस्कृत		१८१६	१४२-१४३	
१८२४	३२७	गणितसंस्कृत	जायक ?	१७८६	२४	
१८२५	७७२२ (१३)	गणितसंस्कृत		१७२७	१२५-१५२	
१८२६	३६५६	गणितसंस्कृत		१७वीं	४	
१८२७	३५७६ (१५)	गणितसंस्कृत		१८०५	११३-११५	
१८२८	३५५५ (१४)	गणितसंस्कृत		१६वीं	६५-६६	
१८२९	४००१	गणितसंस्कृत		१८वीं	५	
१८३०	५२६६	गणितसंस्कृत	समयसुन्दर	२०वीं	३२-३४	
१८३१	३५७५ (५)	गणितसंस्कृत		१६वीं	२	
१८३२	२०५७	गणितसंस्कृत	विजयदेवसूरि	१७वीं	७	
१८३३	२१६५	गणितसंस्कृत	नयसुन्दर	१६७३	६	
१८३४	३५७३ (३७)	गणितसंस्कृत	विजयदेवसूरि	१६वीं	६७-१०१	
१८३५	३८६०	गणितसंस्कृत		१७वीं	६	
१८३६	३५७८	गणितसंस्कृत		१६४४	१०	
१८३७	४०७१	गणितसंस्कृत		१७६२	७	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-१]

क्रमांक	ग्रंथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१५५०	२०२३(२)	स्थूलभद्रकोश्याभास	नयसुन्दर	१७३४	२-३	
१५५१	६२५	" गुणरत्नाकर छंद	सहजसुन्दर	१५५१	२५	
१५५२	३५७५(५६)	" रास	उपयारतन	२०वीं	२६४-२७७	
१५५३	१५६५	" शीलय वेली	बीरविजय	१५७१	११	
१५५४	३५५०(१४)	" सज्जाय	सिद्धिविजय	१६वीं	५६-६०	
१५५५	४६२४(१४)	" "	"	"	३५-३६	
१५५६	७२४७	" स्वाध्याय	"	"	१	
१५५७	५५५	सदैवच्छसावलिगारी वाल	कविजन	१७५२	५	
१५५८	६२१	"	"	१६वीं	१२	
१५५९	११४४(५)	"	"	"	३५-४७	
१५६०	२१२६	"	"	१५६१	४	
१५६१	३५१७	"	"	१५वीं	११	
१५६२	३५५५(२१)	"	"	१६वीं	१३३-१४५	
१५६३	३५५६	"	"	१५२०	१-३५	
१५६४	३५७३(६)	"	"	१६वीं	२२-२६	
१५६५	४६१५(२)	"	"	१७६६	२१-५२	लि.क प्रोहित जोधा मनोहरसुरका
१५६६	७१७३	"	"	१५७६	२७	लि.क. मयुरालाल
१५६७	७७२२(५)	"	"	१६वीं	५३-५६	
१५६८	५४५५(२)	" सचित्र	"	१५३५	५४	चित्र स. ७
१५६९	४६२४(१)	"	"	१७५७	१-५	लि.क मोभायगणि
१६००	४६१६(४)	"	"	१५७५	५४-७२	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग-१]

क्रमांक	पृ.पा.सं.	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि पातथ्य	विधि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६०१	५१५७	सबब-धुताबलिगारी वात		१८१६	३६	लि.क. राधाकृष्ण
१६०२	६६८६	"		१८५६	१६-१०८	लि. स. ७७
१६०३	७७६८	" , सचिन गुटका		१८वीं	१-७ तथा १६-२५	लि. स. १४
१६०४	७८४५	" , शृणुण		१७वीं	७-८४	
१६०५	५२०२ (७)	" , सतकुमारकत्री रास	सिन्धुविजय	१८८५	१२३-१४१	
१६०६	२०१५	प्रथमचोपाई		१६वीं	१०२	
१६०७	५११६	सतीधरधर		१८००	२०	प्रथम पत्र समाप्त
१६०८	१०१३	"		१८वीं	१	
१६०९	२१०४	"		१६वीं	१	
१६१०	२३०६ (४)	"	हेम	"	१५-२०	
१६११	३०२० (१)	"	"	१८वीं	१	
१६१२	३५४८ (२)	"	"	"	१६-२०	
१६१३	३५५५ (३०)	"		१६वीं	३१ वीं	
१६१४	३५६२ (७)	सतीसरधर	हेम	२०वीं	५६-४६	
१६१५	३६५४	"	"	१७४४	१	
१६१६	२१८५	सतीसरजोरी कयाचोपई	जोरावरमल्ल	१८८०	८	
१६१७	३५६२ (८)	" , जी रो स्तोत्र		२०वीं	५६-६०	
१६१८	३५५५ (१६)	सतीसरकथा		१६वीं	३१ वीं	
१६१९	१८८४	"		"	२	
१६२०	२३२७	"	जोरो	१८६५	१-२४	

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथ सूची, भाग-१]

क्रमांक	गन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्त्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१९२१	२९२२	सनीचरकथा	जोरो	१८८३	३०	
१९२२	३५६२ (६)	"		१९७०	३४-५६	
१९२३	३५६२ (९)	" वारता	देववद्व	१९७०	६०-६६	
१९२४	७४४४ (१२)	स्नात्रविधि	भीम	१८८५	२१२-२४५	
१९२५	२२१७ (४)	सत्त्व्यसन ब्रूहा कुजलिया		१८वीं	३ रा	
१९२६	११२२ (५३)	सपाईनीजातिसबद		१९वीं	७२ वाँ	
१९२७	२२७६	"	मगनीराम	१९२०	४	
१९२८	५१२३ (८)	स्फुट ज्योतिषचक्रावि		१८८५	४१-४९	
१९२९	७७५३ (१५)	स्फुट पद्य	वीरसन्व	१८३७	८६-१०६	
१९३०	४९१४ (५१)	सबोधसत्तानू ब्रूहा		१८७७	२७९-२८३	
१९३१	३९०८	सम्बद्धकौमुदी कथा चोपाई	रूपन्वयि	१८८६	४२	
१९३२	३९०९	" भाषा		१८३४	३०	
१९३३	२०६३	समकितकुलकचोपाई		१७वीं	१९	
१९३४	३५४३ (४)	" सत्भाष्य	लक्ष्मीसुन्दर	१८८२	७-९	
१९३५	४९१४ (३)	सम्मोदशिलरनिर्वाणकाण्ड		१८७१	१५८-१६०	
१९३६	४७२४	समयरे राजारो फल (वर्षपति फल)		१९वीं	१	
१९३७	२३७४ (४)	समरासारगणकडलो	देपाल कधि	"	२५-२६	*
१९३८	३५७५ (६९)	समवसरणदेशाना	शिवसुन्दर	२०वीं	३००-३०३	
१९३९	३५७५ (७५)	" स्तवन	धर्मयज्ञन	"	३०८-३११	
१९४०	१११५	" स्तव बालावबोध		१९वीं	६	
१९४१	३५०७	समाधिस्तव बालावबोध	पवंतधर्मार्थी	१७६५	८५	

क्रमांक	प्र.पा.क्र.	ग्रन्थ नाम	कर्ता भ्रांति ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
१६४२	४३७६ (१४)	समाधिदास	श्रीसार	२०वीं	२०२-२०३	
१६४३	४४७४ (४६)	स्यामलनयातवन	गातिहुसल	१८०४	२३६-२४०	
१६४४	४४२३	सरस्वती ध्वज	हेम	१६वीं	१	
१६४५	६६७		दयासूर	१६वीं	२	
१६४६	२३१२		सायण्यसमय	,	१६-१७	
१६४७	२३२७		भतिसुन्दर	१७वीं	१२ वीं	
१६४८	२८६३ (२०)		सहजसुन्दर	१६वीं	२	
१६४९	२८६३ (२१)		हेम	,	१४-१६	
१६५०	३२४४			"	३	
१६५१	३४४८ (६)			१८वीं	१२७-१३०	*
१६५२	४८०२					
१६५३	४२८७ (१६)	सवाई नरसिंहाजी जीधपुर पर चण्डीका कवित्त	धमती	२०वीं	२	
१६५४	२२००	सवा सो सोल	चरनदास	१६०२	१४	
१६५५	१७४६	स्वरोदय	चिदानन्द	१६११	२१	
१६५६	२४१०	"	गोवडदास	१८११	२०	
१६५७	३२३४	स्वातहण चौपाई		१६वीं	१४६-१५०	
१६५८	३४४४ (२४)	सवया ऋता	बनारसीदास	१८३७	७० वीं	
१६५९	७७४३ (१३)	"		१७२६	१२-१३	बनारसीदासके स्वाकार लिखित ५ पृष्ठ हैं
१६६०	४२८७ (३)	इकतीसा	राजती	१६वीं	५	
१६६१	४०८१	मायनो				

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६६२	४६०६(४)	सर्वया बावनी	राज कवि	१७६८	२५-३४	लि.क केवलसौभाग्य
१६६३	४४५२(२०)	" , सपखरो आदि	प्रताप, बहुर गुलाल आदि	१८वीं	२० वां	
१६६४	४४५२(१४)	" सग्रह	श्याम, काशीराम आदि	"	१७ वां	लि.क प्रीतिसौभाग्य
१६६५	४४५२(८३)	" "	साधुकीर्ति	"	१२४ वां	
१६६६	५५२४	सत्रहमेदी पूजा		१८६४	६	
१६६७	६३३	सहमफल स्पष्टाध्याय		१६वीं	१	
१६६८	५६१	साठ सवच्छरी		१७वी	५	
१६६९	२५५६	साठ सवच्छर दोहा		१६०६	१२	
१६७०	२८३७	साठी सवच्छर फल		१८६०	४५	
१६७१	३५६४(४)	"		१८६१	१-२२	
१६७२	५४१०	"		१८वीं	८३	प्रज्ञावती और मोहरंमके चांद आविका फल है
१६७३	३५५५(६)	सात वाररा हूहा	हीरकलश	१६वीं	१६ वां	
१६७४	४६२४(१२)	" विघडिया		१७६०	१३-१४	
१६७५	२८६३(३६)	सात विसन गीत		१६२२	७० वां	
१६७६	४६२४(११)	सात सखीरो सवाद		१७६३	१२-१३	
१६७७	४४५२(६४)	" (प्रहली)		१८वी	१३० वां	
१६७८	२१०८	साधुप्रतिक्रमण बालावबोध	पासचद	१७वी	१८	
१६७९	२१७६	साधुववना	समयसुंदर	१७३५	६	
१६८०	२२०४	साबप्रथुम्न चोपाई	"	१८३८	२४	
१६८१	२८८६	"	"	१६६४	२२	

राज्यात प्राथमिक प्रतिष्ठान—राजस्थानी हुतात्मिनिष्ठ प्रथम सूची, भाग-१]

क्रमांक	संस्थांक	प्रथम नाम	कर्ता प्रादि नातव्य	निधि समय	पत्र संख्या	विशेष उल्लेखनीय
१६८२	४०००	सावप्रद्युम्न चौपार्डे	समयसुंदर	१८वीं	१५	
१६८३	२८६३ (३०)	सामाजिक बन्नीस दीर्घविषरण कुलक चौपार्डे	हीरकलसा	१७वीं	६५-६६	
१६८४	२५७२	सामुद्रिकानन्द भाषा	सवेसुंदर	१७७४	४	
१६८५	८६५	सारंगलामणि रास	मासवेव	१८वीं	६	
१६८६	१८६८ (५)	साषण		१७६३	१-१३	
१६८७	११२२ (४३)	सासबहू गो स्याब		१६वीं	५३ वीं	
१६८८	११२४ (४)	साहाराजल नीलकण भास	वानसागर	१६७५	१	
१६८९	३७५१	साहाकाळणरा डूहा	मोतीराम	१६वीं	३	
१६९०	३५४८ (७)	साहिजाबा कुलसुशील साहबरो भारता		१७६६	२-१३	
१६९१	३४१२	गिदुचकरास	सानसागर	१६८५	१६	
१६९२	३५७५ (५८)	सिद्धधाम चतुस्यपरिवाटी	देवचंद्र	००वीं	२८४-२६१	
१६९३	३५११	सिद्धांतचौपार्डे		१७वीं	१	
१६९४	२८६ (५५)	बोल		६०-६३	१	
१६९५	७३०५	, ,		१६१०	५७	
१६९६	७५४६	सिद्धांतसारोडार		१७७६	५६	प्रथम ३ पत्र मुद्रित
१६९७	६३८३	सिद्धांततणो भास	छावण्यसमय	१८वीं	२	
१६९८	३५५५ (१६)	सिद्धोदी मोडबो चौकानरी भोवपुरी धोल्मि		१०२ वीं	४	
१६९९	४००६	सिद्धांतचौपार्डे	समयसुंदर	१७६४	६	लिक कुनासहय

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	निधि समय	पत्र संख्या	विवरण उल्लेखनीय
२०००	४८२८	सिंहलसुत चौपाई	समयसुन्दर	१७वीं	६	
२००१	६११	सिंहासनवत्सी	क्षेमकर ?	१७६०	१३	
२००२	२१४४ (२)	"	वेदवान	१८३३	१५-३५	
२००३	२१६८	"		१७८२	२६	
२००४	२८३३ (१)	" द्वात्रिंशिका	हीरकराज	१६२६	३	अत्यन्त ३ पत्र हैं
२००५	३१३४ (१)	" चौपाई	जेराल कवि	१६वीं	१-८५	
२००६	३२६०	सिंहासनवत्सी	हीरकराज	१८७८	७६	
२००७	३४६०	" चौपाई	हीरकराज	१७वीं	१४२	
२००८	३५५६ (२)	" कथा	माधव	१८८७	७८-११३	
२००९	३५६७ (७)	सोकोतरी छव		१६वीं	७६-१०७	
२०१०	११४४ (२)	सोमवहुत्तरी		"	२८-३०	
२०११	२०७५	सोलासण डाल		१७वीं	३	
२०१२	८६	सोताराम चौपाई	समयसुन्दर	१७८३	१०२	
२०१३	१८०८	"	"	१७३५	६६	
२०१४	६५३६	सोताराम चौपाई	"	१८वीं	६२	
२०१५	२०३८	"	"	"	८०	प्रथम पत्र यत्राप्त
२०१६	३६५८	"	"	"	८२	संज्ञातो रचित
२०१७	७७५३ (२)	सोतासज्जाय	जिनहूँ	१८३७	३०-३१	
२०१८	३५७३ (२८)	सोमधर जिन वीनती	भक्तिताम	१६वीं	७६-८०	
२०१९	३५७५ (४)	"	"	२०वीं	३०-३२	
२०२०	२३२७ (२)	"	"	१६वीं	१०-१५	

क्रमांक	पृथांक	ग्रंथ नाम	कर्ता यादि चालक्य	लिपि समय	पृा संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०२१	२३७४ (१६)	सौम्यभूमिनात्मन		१६वीं	६०-६३	
२०२२	३४७५ (३५)	सौम्यभूमिनात्मन		२०वीं	१६७-१७३	
२०२३	३६११	सुवर्णचरित्र चोपाई	शंकराचार्य	१६वीं	१६	
२०२४	५३७५ (१)	सुवर्ण सेठकी कथा	नर ?	१७वीं	१-३१	
२०२५	४००७	, रा कवित्त	दीवी	१८वीं	२१	लिक इद्रभाण
२०२६	४०६६	, रा कवित्त	"	१८वीं	२०	लिक वाई चपा
२०२७	३६१०	, रा कवित्त	"	१८वीं	१६	
२०२८	२०६३	, शीतप्रबंध		१९वीं	१३	स १५०१में रचित
२०२९	१६२३	" सभाय		१७वीं	३	
२०३०	३५५० (१३)	, मुवामाकी मारालडी	दृषकोति	१६वीं	६६-६६	
२०३१	२६३२ (४)	, सुवर्णचरित्र चोपाई	ज्ञानशील	१७वीं	६५-६६	
२०३२	२५७५ (२)	, सुवर्णचरित्र		१८वीं	१२-१३	स १५६०में रचित
२०३३	६२७४	, सुवर्णचरित्र		१६वीं	६	
२०३४	६३६६	, सुवर्णचरित्र	माणिक्यसूरि	१८वीं	६	
२०३५	११२३ (१३)	, सुवर्णचरित्र	सुवर्णसार	१७वीं	७१-७४	
२०३६	३५७३ (१६)	, सुवर्णचरित्र		१६वीं	५७-६०	
२०३७	६६१	, सुवर्णचरित्र	विनयकुण्डल	११	११	
२०३८	२०६६	, सुवर्णचरित्र	भायप्रस	१३	१३	
२०३९	४००६	, सुवर्णचरित्र	मानसगार	१८वीं	५	लिक चतराम
२०४०	११५२ (१)	, सुवर्णचरित्र		१८वीं	१-१७	
२०४१	४६१२	, सुवर्णचरित्र		१६वीं	४	

क्रमसूचि	ग्रन्थाङ्क	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	रिति समय	पग सङ्ख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०४२	२१५३	सुभाषित बोधा फक्त्त प्रादि		१७वीं	२०	
२०४३	२८६३ (१६)	सुभिक्षादि वर्णन	खेम मुनि	"	१० वीं	
२०४४	२२१७ (३)	सुमतिजिनस्तवन	वनधारीवास	१८वीं	३ रा	
२०४५	२०६१	सुमतिनागिल चोपाई	लक्ष्मीरान	१७६०	३२	
२०४६	५४१८ (३)	सुरतर्पचमीकथा	धर्मवर्धन	१६वीं	१-८७	
२०४७	३५१० (३)	सुरप्रियवृष्टिसञ्जाय	धिनयसुवर	१७६१	३-४	
२०४८	६६३	सुरसुन्दरी चोपाई	धर्मशील	१७वीं	१६	
२०४९	६१०	" चरित रास	धर्मशील	१८५०	२५	
२०५०	३६१२	" चोपाई	नयसुवर	१७वीं	१६	
२०५१	३६५६	" "	धर्मवर्धन	१८४२	१६	पत्र २० से २३ तक अप्राप्त
२०५२	५६३०	" "	शुभशील	१६वीं	१७	
२०५३	४००६	" "	धर्मवर्धन	१८४८	२१	
२०५४	७२४४	" " "	नयसुवर	१६८८	२६	लि.फ. राघवकैमाव
२०५५	४८०१	" रास	वीरो	१८१६	१-८७	
२०५६	३२८४ (५)	सुरेखाहरण	देववत्त भट्ट	१८१६	१-५८	
२०५७	२८६३ (१२८)	सुवर्णसिद्धि प्रयोग	केशरविमलगणि	१७वीं	१६१ वीं	
२०५८	३५५५ (११)	सुवायवृत्तरीकथा		१६वीं	१-५८	
२०५९	३६६७	सुक्तिमाला		१६१२	१५	
२०६०	७३७४	सुक्तिमुक्तावली		१६वीं	२५	लि.फ. इष्टहंस
२०६१	११६५	सुवर्णजोरो सिलोको		१८५३	१-३	
२०६२	६४१८	सुरजजीरो सिलोको		"	२	

क्रमांक	प्रमाण	ग्रंथ नाम	वर्ता प्रादि पातव्य	निधि समय	पत्र संख्या	विषय उल्लेखनीय
२०६३	२३६८(६)	सूरजजीरो सिलोको	सेवा	१६वीं	३७-३६	
२०६४	३२५५			१८०१	१	
२०६५	३५५७(३)	सूरजप्रकाश	करणीदान	१८वीं	७२ वीं	
२०६६	७७२५			१८५१	३००	
२०६७	३५६२(३)	सूरजजीरो सिलोको	देवीदान	१६५६	१७-१८	
२०६८	२२६०(१)	सूरजहस्तरी वात		१६वीं	१५	
२०६९	२०४४	सूरपासकरिय रास	सकलवज	१८वीं	१५	
२०७०	७५१	सुमपुराण (कथा)	मुक्तसोवास	१८८७	७	
२०७१	६७५२	सेजसमनको परघो	गोविन्दवास ?	१६२६	३	
२०७२	३५४६(२)	सेरसिंह भेडडिया प्रादि अन्नक		१६वीं	६-१०	*
		राजासोका सपथरा				
२०७३	३५४६(१०)	सोनीगरा विरमठेरी बारता			८६-६३	* स १४८५के समान
२०७४	२८६१(२)	सोमवती अमावसरी कथा		१८३४	१-१४	
२०७५	४०११	, बारता		१८४३	२	निक जीवणराम
२०७६	७७२२(३)	सोरठरा डूहा		१८वीं	४६-४८	
२०७७	२१४२(१)	सोरठबीभरी वात		१६वीं	१-५	
२०७८	५४१८(२२)	सोतहकारणका रासा		१६वीं	१४७-१४६	
२०७९	४६१४(४५)	सोतह स्वप्न बीनती	जिनरग	१८७७	२७४ वीं	
२०८०	२२२४	सोभाप्यवमी धोपाई		१८वीं	१७	
२०८१	६३५८				२५	
२०८२	२३७१(१)	सफ्टचतुर्पुत्रिकया		२०वीं	१२	

क्रमांक	ग्रन्थांक	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखनीय
२०८३	२५४३	सक्रान्ति फल		१७५४	१	
२०८४	२५४०	" तथा पूनमविचार		१९वी	२	
२०८५	११२२ (६४)	सखणीस्त्रीनो छंद		"	८४-८५	
२०८६	२८८३ (८६)	सख्याताविचार		१७वी	१४९ वीं	
२०८७	९८४	सग्रहणीचौपाई	मत्तिसागर	१८३१	१७	
२०८८	३९१४	" बालावबोध	शिवनिधान	१८११	७३	
२०९०	३९६१	" चौपाई	"	१५	१५	
२०९०	३९१५	" बालावबोध	दयार्सिंह	"	६२	
२०९१	३५७५ (१८)	सतोषछत्तीसी	समयसुन्दर	२०वीं	८५-८८	
२०९२	९८९	सवेगरसायनबावनी	कान्तिविजय	१९वीं	६	
२०९३	२१९३	हसरानजवच्छराजचौपाई	जिनोदय	१९०९	२५	
२०९४	३९६२	"	"	१७वीं	२६	
२०९५	३९९३	"	"	१८२९	२४	
२०९६	५८९२	" सचित्र	"	१८३५	४४	स १६८०से रचित, चिसं. १०३
२०९७	५४३१ (२)	" अर्पण	"	१६१०	६४ से	
२०९८	७४०२	"	"	१८६६	३४	लि.क. बृद्धिचंद्र
२०९९	६५३५	"	"	१९वी	४२	
२१००	९४३	" " रास	"	१७१२	२१	
२१०१	७२२७	" "	"	१८८३	४६	
२१०२	५२०९	हसवत्सचौपाई	"	१८वीं	६२	चिसं. ६५

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान—राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची भाग-१]

क्रमांक	प्र.पा.क्र.	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि पातव्य	लिपि समय	पत्र सख्या	विशेष उल्लेखाय
२१०३	५४३१(१)	हस्तामनी (ग्रन्थ)		१६१०	५१-६४	
२१०४	५४५२(७०)	हृणमतरी छंद	नरहरदास	१६३१	१२० वीं	
२१०५	७७२१(१६)	हनुमान छंद		१८५६	२०१-२०३	
२१०६	१८८६(१८)	हमीररासो	कवि महिंग	१७८७	२८	गुटका
२१०७	४६०२			१९४४	१-७०	* लि. क. नायूराम पांडे गौड लि. क. मनसारास
२१०८	५३८४(१)			२०वीं	गुटका	
२१०९	७१६७	हमीरद्वयारता		१६वीं	३४-३६	
२११०	२३७४(१)	हरचक्रपुरी			१२७-१२८	
२१११	३५६७(१२)	हरजस			१-४	
२११२	६४४६(४)				३५-३८	
२११३	३४७३(१३)	हरिकेशीचरित्र नवरसरास	कनकसोम		१४ वीं	
२११४	३४५५(६)	हरिगणकण्ठहरणस्तोत्र	चंद कवि			
२११५	४०१२	हरिचंद्ररास	जिनहय			लि. क. क्षमाधि घ
२११६	४८२६		कनकसुंदर	१८८२	२५	
२११७	५३३		रत्नहंसोर	१८८५	१७	
२११८	७७२१(६)	हरिजननाममाता	रत्नहंसोर	१८८१	२८	
२११९	३४६१	हरिवल चौगाई	सावण्यकीर्ति	१८२५	१४४-१६५	२८वीं पत्र प्रमाप्त
२१२०	३५७३(२०)	धीवर चौगाई		१८वीं	३०	
२१२१	११२३(२)	हरिबल रास	कुणालसयम	१६वीं	६१-६४	
२१२२	२८६३(४८)	हरिपाली (हीकाली)	हीरकलंग	१७वीं	६-२२	
२१२३	२८६३(५०)	()	हेमोणद	"	८८ वीं	

क्रमसं०	गन्थासं०	ग्रन्थ नाम	कर्ता आदि ज्ञातव्य	निर्गम समय	पृ. संख्या	विशेष उल्लेखनीय
२१२४	२८८३ (५१)	हरियाली (हीयाती)	वीरहा	१७वी	८६ वाँ	
२१२५	४६०५ (१०,११,१२)	हरियालीरा बृहत् "		१६वी	३६-३८	
२१२६	२३७७ (३)	हरिरस	ईसरदास चारहठ	१८०७	१६	
२१२७	३५५५ (८)	"	"	१६वीं	६-१४	
२१२८	३५५७ (८)	"	"	१७६६	८२-६७	
२१२९	४६२४ (८)	"	"	१७६३	१-१०	
२१३०	५३४३	"	"	१८वी	५	
२१३१	७७२१ (१२)	"	"	१६३१	१८०-१६६	लि.क. फूलगिरि
२१३२	७७५० (१)	"	"	१८६०	१-२१	
२१३३	४६१४ (२)	हरिवंशपुराणनो रास	शहजिणदास	१८७१	७-१५७	लि.क. चक्रकीर्ति
२१३४	२५४८	हस्तरेखाचित्र		१६वी	१	
२१३५	४४५२ (६२)	हाथियारा बहाण		१८वीं	१३०	
२१३६	४६२४ (६)	हाथीरा बणाव		१७६३	११ वाँ	
२१३७	३५६७ (५)	हिंगुलाज प्राणदेवायण	ईसर चारोठ	१६वी	१००-१०५	
२१३८	४४५२ (२४)	हिंगुलाष्टक	रामसरण ?	१८वीं	२४ वाँ	
२१३९	७४१७	हिंडोलणा आवि		१७वी	१	लि.क. लेतसी

क्रमांक	प्रमाणक	प्रथम नाम	वर्तमान श्राद्ध मासव्य	लिपि समय	पत्र संख्या	विगण उत्सवकीय
२१४	३५७४(१)	हितोपदेश भाषा	हीरकलश	१७७३	११४	
२१४१	२८६३(६८)	होयाली	हेमाणद	१७वीं	१२४ वीं	
२१४२	२८६३(६९)	होयाली	हेमाणद	१६५७	१३५ वीं	
२१४३	२८६३(७०)	होयाली	हेमाणद	१८वीं	४ था	
२१४४	३५१०(४)	हीरकलश गीतादिव्यन	विरहण	१७वीं	१० वा	#
२१४५	२८६३(१५)	हीरकलश मुनिस्तुती	विरहण	१६५४	१६१ वीं	लि क नाथूनारायण शर्मा
२१४६	२८६३(१६)	हीरकलशको तमासो	विरहण	१८वीं	३२	पत्र १-२ अत्रास्त
२१४७	४१६८	हीरकलश रास	विरहण	१६वीं	८२	
२१४८	२१०७	हीरकलश रास	विरहण	१६वीं	५० वा	
२१४९	२३६८(७)	हीरकलश सञ्भाव	विरहण	१६वीं	१८ वीं	
२१५०	३५७३(४)	गुणडा मदनसुमतिजिनस्तवन	विरहण	१६वीं	१	
२१५१	१७५८	हीरकलश विचार	विरहण	१६वीं	२८-३१	
२१५२	२३७४(८)	श्यामस्तुती	विरहण	१६वीं	६१-६५	
२१५३	३५७४(२०)	श्यामस्तुती	विरहण	१६वीं	२	
२१५४	२३१३	श्यामस्तुती छंद	विरहण	१६वीं	१३	
२१५५	६५६	श्यामस्तुतीकरणो बालावबोध	विरहण	१७वीं	७१	पत्र स १, २ अत्रास्त
२१५६	४८३९	श्यामस्तुती	विरहण	१७वीं	१५	
२१५७	७३६७	श्यामस्तुती	विरहण	१६वीं	६	
२१५८	७४०३	श्यामस्तुती	विरहण	१६वीं	१४	स १५६४से रचित
२१५९	७४२३	श्यामस्तुती	विरहण	१६वीं	२०	
२१६०	४०२१	श्यामस्तुती	विरहण	१६वीं	२०	

ते गच्छ दीर्घे दीपनी, नाचीर नगर मभारि ।
 वीर जिष्णोमर दीपती, जिहा तीरथ प्रगट उदार ॥ १३
 ताम पाटं अनुक्रमे ह्यत्रा, श्रीलोपमीनागर मुरि ।
 विनय करी कर्मनागर, वाचक देय मनूर ॥ १४
 ताम नीम पुण्यनागर, वाचक पभर्ण एम ।
 अजनामुदगी चौपई, पूरण कीधी ते प्रेम ॥ १५
 मवत मोन नत्यामीड, श्रावण मान रमान ।
 सुदि तिवि पचमी निरगत, रिद्धि वृद्धि मंगल मान ॥ १६

नवं गाथा ॥ इति श्री अजना मुदरी चौपई नपूर्ण मवत १८६८ मीगनर कृष्ण पक्षे
 निथी १ भौमवामरे द्वितीय प्रहरे लिपत ऋषि नोनचद पीही यामे उदावत राज्ञे वाचनार्थ
 चीर नय श्रीरगु' ॥ श्री ॥

२४ १८२० अजना सुदरी भाम अपूर्ण

आदि- ॥६०॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

ढाल-वाह्वनि रथण इम चित्तवड मरसति मामिणी प्रणमियइ ।
 गोतम स्वामि जा पाइरे । अजना सुदरीनी क्या नारि नर मुण्ड मन लाउरे ॥१॥
 नील भविष्य भनइ पालियइ । पाइय मुजस नमार रे ।
 सवि कुमगति बनी टालियइ जइय भव दुप पार रे ॥२॥
 अन्त- धन धन अजनासुदरी, मुमरिउ चित्ति त्रिकाल रे ।
 सीत भलउ तिण्णइ, पानियउ जनु गावइ मुनिमान रे ।
 नील भलउ जगि पालियइ । ५६॥

इति अजना सुदरी भास नमाप्त । लिपत वमावण ऋषि वाई वीरो पठनार्थ मुभ
 भवतु लिपक पाठक ॥ छ॥ छ ॥ श्री ॥

२६ ३८६२ अरवड विद्याधर रास

आदि- ॥६०॥ सकल पटित मडली मटन प० श्री ५ रविमागर गणि चरणोम्यो
 नम ॥ वस्तु । सदा सपद २ रूप ऊकार । परमेष्ठी पचे महित । देव त्रिणि सदा सेवित ।
 महाज्ञान आनदमय । ब्रह्मबीज योगीन्द्र वदित ।

दूहा ॥ भुवन त्रिणि गुण त्रिणिमय, विद्या चउद निवास ।

हु प्रणमु परमात्मा, नर्व मिद्धि मुप वाम ॥ १

परम ज्योति परमेस जे, श्री गुरु सारदमाय ।

आदि कवीमर सतजन, नित वटु तस पाय ॥ २

अन्त- मवत मोलउ गण चालीस । कार्तिक सुदि तेरसि मसि दीम ।

सिद्ध जोग रिप अरिबनी । अरवड क्या चौपइ नीपनी ॥ १३

भणता बुद्ध मरीरे जोय । बुद्धि मिद्धि सवि होय ।

मिद्ध देव गुरु मरुति । गुरु भक्तिथी पामइ भक्ति ॥ १४

नव रस मड अरवड रासनी । सोता वगता जन पावनी ।

वीर क्या भावइ जे कहइ । च्यार पदारथ सहजे लहइ ॥ १५

जिहा रहइ अवर अरनी चद्र । तिहा रवि तारा ध्रुव गिरि इद्र ।
 सागर मपत नीपना वास । तिहा लगि रहा कथा परवाय ॥ १६
 उजेगिइ रहि चत्रमासि । कथा रचो ए गास्त्र विभासि ।
 विना धार बडि रम वात । पडित रस माहि विष्यात ॥ १७
 भहो पानना जाम पसाय । विद्या भरणी भानु भट पाय ।
 मित्र लाडजी मुगिना काजि । वाची विद्यान वाने राजि ॥ १८
 बहू वाचन मगल माणिक्य । अष्ट वधा रस छइ चाधिय ।
 ते गुण वृषा तणा आवम । पूरा सात हूमा आत्म ॥ १९
 इनि श्री भूति रतन सूरस । गोरप जोगिनी दाया सीग ।
 अष्ट कथानक आदस । कथा सात न कहा विनेस ॥ २०

इनि श्री गोरप जोगिनी सप्त आठेग अष्ट विद्याधर रास सपूर्ण । मयत १६६३ वर्षे
 ज्येष्ठ मासि १४ भौमवासर ५० श्री हंसगागर गण्डि गिष्य विमासागर वाचाधर त्रितित
 पात्रगजा नगरे गुभभवतु ।

३६ ११२४ (६) अष्टदत्त घोषाई

आदि- श्रीसीतामयासरगण्डिगुण्डा नम ॥

आदि जिलगण्ड प्रलम्ब पाय । मम सुखमति सामिगि माय ।

कर जोडीनी मायु मान । मवनि देजो वरदान ॥ १

अत- अष्टदत्त मुनि तण्डु चरित्र । भणुता गुणता हूइ तेह पत्रि ।

पडित हण्डत सीग इम कहइ । मण्डु गण्डिते सिव मुप सहइ ॥ २६

इति श्री अष्टदत्त मुनि चउपई सपूर्ण । त्रितित यानगदरेण भाद्र राउत पटा
 वृत्ते ॥ श्री पात्रगजा प्रगाधी सुप सपति ह ॥ श्रीस्तात् ॥

४१ ३५६२ (१४) अचलदास लीचीरी वारता

आदि- अष्ट अष्टदत्त पापीरी वात लीपी ॥

गड गागरगण्ड धनी अचलदास पीचा गागुरगुम राज करे छ । राजा राजो परजा
 पर कर छ । नगरीरा लोक बडा । सीणु राजारे रंगी साता मवाडा छ । मह्य मेवाडरो
 रण्डि माडन छ । तागरे बेटा साता सीता अचलदासना पाधा परणीया छ ॥

अत- गणा वरम लम राज गणा बौदा । जतरे वु अष्टदत्त प्राय तापी छ । सीणु
 मम गड मागुगडरा पात्रगण्ड हथार मुपताण गड गागुरगण्ड उवर वृत्त प्राय । त अचल
 दासनी पीचा गड सजीया छ । गणा दान मुपा बड कानी । भना जुगामु काम प्रायो ।
 सारा मना न उमा सीतमारा मगणो भाया । दाउ गणायो हूई । परपया मा मा नोम
 गो हूया ।

इति श्री अचलदास लीचीरी वात सगुरग ॥ म० १६०० ग मगाड मड १५
 ६० री हारावरा १, ॥ अ० ॥१॥

४४ ३५४६ (१८) अजीतनिघञ्जीरो वारता

आदि- वार्ता । महाराज श्री अजीतनिघञ्जीरो । महाराज श्रीअजीतनिघञ्जी पाति-
माह श्रीफरकनाहरा विना दूकम नरवदाम् मुग्भनं पाटा देममं पयानीया नं पातिमाहजी
द्विपण गया । द्विपण मुहममरद हरि पानिगाहजी दिनी आया । मवत १-६६ पट्रे पाति-
माहजी मारवाटि उपरा मुहम ठहराय नं वाईमी विदा कीवी । निवाव हगनअलीपा तिको
मोचीयारै वाग टेरा पटा हुवा ।

अन्त- तरं भटारी कल्लो महाराजकपार पानिमाहरो दूकम माथे नढाय त्यो ।
भवतव्य नारा मति नं कुमति उपजं । धरतीरं लालच अर्भनिघञ्जी वपतनिघञ्जी उपरा पर-
वानो लिपीयो । आपणं दोना भाया मारवाटिमं आधो आय टं । नागोर मंडतो धाहरो छं ।
महाराजन् चूक करिज्यो । महाराजनं जाडेचामे डोलो आयो थो । तिको महाराज परणीज नं
जाडेचीजीरा मेहना पोढीया था । तिण गति महाराजन् ववर वपतनिघञ्जी चूक कीयो । मवत
१७८१रा आसाट नुदि १३ मगलवार इण भाति अजीतनिघञ्जी नं मारिया नं धरती पानि-
माही गमी ।

इति महाराजरी वार्ता ॥१२॥ श्री ॥

४५ ३५७३ (४२) अजीतनिघञ्जीरो कवित्त

श्री ॥ महाराज अजीतनिघञ्जीरो कवित्त ॥

राजलोक रिपटुण विम पट्टदाईत प्यागी मघ मट्टेली च्यार अगत ।
सिनान उचारै वारै गाईण वले वने नव उट्टदावे गण ।
हाथल चेडी हुवै हुवै दीड जणी हजुरण ॥
पातरा पाच नाजर उभं भल वाई मृत भामीयो ।
नीववत अजन मतीया सहित ईम नरगलोक निवाइयो ॥ १ -
मारीयो लेप महाराजरं माहाराज कुणथो मरं ।
मोहकमनु नाह मुच्चो जेण मुहकमनं मारं ॥
सयदानु नाह मुत्रो सेदा सभर मघारे ।
पतमाहाना मुअं पडि उभो पतनाहा ।
वावीमी पच गडं सूक वदीयो दोग राह ॥
जोषाण धणी जस राजरो कुण तीणामु भारथ करं ।
मारीयो लेप महाराजनं महाराज कुणसु मरं ॥ २
ईत्ती कवित्त ।

४६ २३६८ (४) अजीतनिघञ्जीरो सीलोको

- अथ अजीतनिघञ्जीको सीलोको लीपते ॥

माता सरमती मोटी महामाई । तोनं तो समरचा कमणा नही काई ।
कहीयो सीलोको सुणज्यो ईण काजो । महाराजा अजमलरो वपाणुं राजो ॥ १
माहाराजा वंठा जालोर माहि । पतस्या ओरगनें लागु जी पाए ।
अव दोग कासीद दीलीसु आया । पतस्या ओरगनें मोष पुहचाया ॥ २

शन्त- सम कियाम आसात् मालो । राजाजी वीयो देवलोत्त वामा ।

चाप मीनाक पमाजा छाज । जा ध्याण बाज धविचल धाज ॥ ३१

ईता आग्रजीतमाय ॥ १ ॥ मीनाका सपुर्ण ॥ मिता वसाय वदि ११ सन १८४८ वा पीपन नमविज दाध्यामध्य, १म बीजजीका चेला नेमजा ताप्या छ, बालमै लीपा छ धानरा नाय रपाया १) मर ३६ म द्या जति ता पीन ॥

५४ २८६३ (१२७) धणहिल्लवाहपत्तनराजावली

आदि- मवत ८०२ वगुणउ चउत्त छणहिल्लवाह पाटग यसाधित ॥ साठि वप लगह राय पालिउ । एय ८६२ आउपउ गणिवउ । १ह १ह पाटि याग राजा नह राय हूऊ । वप २५ लगह राय पालिउ ॥

शन्त- आनुमारपान राजा राय वप ३१ एय सवत १२।३० । तेह नइ पाटि आय पाग राजा राय वप ३ एव १२।३३ तेह नइ पाटि बाल मून राजा राय वप २ एय स० १२३५ । तेह १० पाटि भामदेव राजा राय वप ६३ ॥ ८म सोलकी ११ पाट पाटगि नयदि राजवा ह्या ॥

५६ ७७४३ अर्ध्यामरामायण भाषा

आदि- श्री पुणेताय नमः ॥ मूरगती नीमो ॥ श्री मीनारामजा सा छ नः ॥ श्री रामाय नमा ॥ कथन अर्ध्याम रामायण भाषा पीपन रामहृदय ॥ राज श्रीराजैवधनी गभाषित ।

चौगर्द- जब भुय भार भया सुष्टन । मत्र हो मय मय जाचन प्रभु ॥
विशानद मुनी मय बाता । परजापत भमगुन ही ठाना ॥ २
मीन मय मय भय भगवाता । पीपन यका सब जाता ॥
मय गिरा बाना जु बुचारा । मुनाक प्रमा मय बाचारी ॥ २

शन्त- सुहा ॥ राम हीरकी राजधानी प्राये भरन बुनार ।
माध्याराम हीरक बमय्या राम नाट बाचार ॥ ६५
राम हीरद नाया धरय वीनी मय व न माई ।
मुना क राज न पारी है वरीय मय अयमान ॥ ६६

ईती था अर्ध्याम रामायण राम हृदय भाषा धरय मयुग ॥ कथने अर्ध्याम श्रीराज गीधनी ॥ मत्र मयुग ॥

६० ७२०३ अर्ध्यामरामायण भाषा

आदि- ॥ ० ॥ २० ॥ परमाय ॥
सुहा ॥ श्री विज बागी विज नमा बीजह य वम मुदि ।
विशानद मुय पामी मीति असा अमद ॥ १
प १- एम विजयन धाराया बाज मयो मविज नि मानी भावना ।
सुनि ठानि बाया मया मयो कया निज मति पावनी ॥

अन्त- कनक ॥ ते जैन धरम विचार माभनि निग मजम भाउ ए ।

परिमाह केगी मदा पाल नेम निग्नीचार ए ॥७१॥उ०

नमारना मुप मवन भोगवी ते न्है भव पार ए ।

श्रीरत्नहरप मुपाम रगी उम कहै श्रीमार ए ॥ ७०

उति श्री उपदेशमतरी नपूर्णम् । स० १८३८रा मिति आसोज वदि ४ दिने प०

श्रीकर्ममुन्दर कालग्रामे उपकेम गद्यै ।

२२६ ११२२ (१७)

ऊट तथा हाथीवर्णन

आदि- मुविमान तुमान जिके अति मोभित घाट मुघाट विध्यात घट्या ।

जटी आल मुपाल हलत भ्रमानय पत न थान जके पडिया ॥

विने पक सुद्ध भला वगदा दीव कुरगह जेभ पये क्रमता ।

जग भेम दीइ अमरे सहरो इत्यो घघवडा मदिरा घुमता ॥ १

अन्त- पट जेम उछाडिय पल्ल गेय वर फोज तरा ग्रहणा फवणा ।

घन जे मग रज्जित मूल महा पण लाप वे लाप जिके लहणा ॥

गट भाज पाहाड विहाड कुरगम भाट उपाउ वहे भनता ।

गजराज दिड गजसिध कमध्वज इद्र जिमा हथियार हुता ॥ २

इति हाथीना वपाण ।

२३६

२३६० (८)

एकलगिड वराहरी वात

आदि- ॥द०॥ अथ एकलगिटवाराहरी वात लिप्यते ॥ जवुदीप भरथ पट्टम अठारै गिरारो सिर अरवद । अरवद किमउहेक छै । उण दूहा जिमडो ।

दूहा ॥ वनस्पती पापर वणी, वरणीया टूक विहद ।

पटा विवधूटा नीभरणा, आयो मद अरवद ॥ १

धैधूवी लूवी घटा, सपर पपीया सद ।

लगसामु वाथा लीये, आजुणै अरवद ॥ २

अन्त- दाढालो काम आयो भूटण मती हुई । च्या चेलरा काम आया । पाचमो चेलरो आवुजी रहमी । महारावजी वीमलदेनै मारणहार हुमी । ऋपीश्वरागापा वचन मत्य हवा । भूठामे हवै रावजीनै मारमी । गोठ पायनै घरें पधारीया । उमरावानै मीप दीधी । मुजरो करनै माराही डेरे आप आपरै गया । महारावजी श्री वीमलदेजी दरवार पधारीया । मुपमै रहै छै । फतई हुई ॥

इति श्री दाढालो वाराहरी वात्ता मप्रण ॥ श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु ।

२४१.

५३०

एकाक्षर नाममाला

आदि- श्रीगणेशाय नम ॥ अथ एकाक्षरी नाममाला लिप्यते ॥

दोहा ॥ कहत अकारज विम्वनकू, पुनि महेम मतमान ।

आ ब्राह्मकू कहत है, ई जुगमा रमा जान ॥ १

अन्त- विटुपन मुप सुनि तरक पट अष्टादसहि पुरान ।

नाममाला एकाक्षरी, भापी रतनू भान ॥ ३४

इति श्रावणश्रीरा रतनु वीरभाग कृत एवाक्षरी नाममाला सपूर्णा ॥ स० १८५६ ना
वर्षे श्रावण त्रिद ३ रयो(वी)तिपिता श्रीमोडीजी प्रगादान् ॥

२५३ ३२८६

श्रीलाहरण

श्रादि- ॥ श्रागणनाय नम ॥ अथ श्रीलाहरण लिप्यते ॥

राग रामध्री ॥

श्रीगभूमतनें श्रां श्राराधू जी । मन श्रम बचन सेवा माधु जी ॥ १

चतुररंग लाव जेहेनें माने जी । तेहेना गुणमू लपीय पाने जी ॥ २

ताल ॥ पाने नप्या जाय नही श्रीगणशना गुणग्राम ।

सकन वारज सी । याम मुप लता नाम ॥ ३

श्रात- पछे श्रापानें वीनाय श्रापी वररथा जयजयकार ।

श्रीकृष्ण पधारथा द्वारिका पररानीनें कुमार ॥ १६

अ श्राया (हृ)रण जे साभले तेहेना ताप श्रथ जाय ।

भट प्रेमानद वेह कथा समरो श्रायदुराय ॥ १७

श्रावा ॥२६॥२॥ श्रीपाहण सपूर्ण ॥ समाप्त ।

२५५ २३०६ (३)

कृष्णध्यान

श्रादि- अथ कृष्णध्यान लिप्यते क्वि ईमरदासजीरो कयो ॥

निरप श्रादि रूपनिधान । कोट अनगकी छिन वान ।

माथ मुकट पपवा मोर । घेरत मदन मुरली घोर ॥

भान विमाल तान कपान । राप भानु नोटवी श्रोन ॥

भुबुटो भ्रू ह क्व कवान । मनवत कन्ना जुग भान ॥

श्रात- श्रोपत चरण श्रजुज लान । तिन विच ऊढ रप विमान ॥

जव तिन मदा चम पन्थ । तिनस कटति काट वरम ॥

निज पद लाग रज भर जात । तिनकु बह्य निव ललचात ॥

पनत वान त्रूप(ध)मभार । गावन गाव नदकुमार ॥

तिनक श्रस प लप वर । ईसर वार शरथा फर ॥ १५

इति श्राकवि ईमरदासजावृत कृष्णध्यान सपूर्णा ।

२७५ ५२११

बद्धबाहाकी वगावली

श्रादि- ॥ श्रागणनाय नम ॥ अथ बुद्धाशकी वगावली लिप्यते ॥

श्राश्रातिनारायणन कचनम ब्रह्माजी ॥१॥ माराच ॥२॥ वरुप ॥३॥ सुय ॥ ४ ॥

वयन्वात ॥५॥ मनु ॥६॥ इत्याव ॥७॥ विबुधि ॥८॥ पुरजय ॥९॥

श्रात- महाराजाधिराज जमनाय माहानसिध नरवन्वा राजाक । बटा गा राज
पायो । जति मानसिधजी ताव पड्या । माता पाम वदि ६ स० १८७५ वा । राज कीयो
महाना ४ श्रि ६ ॥ महाराजाधिराज धामवार् जयसिधजा सवत १८७ ५ साल श्रीजमवायजो
पधारथा जाति देना । मय माया साध पपारी भीतो अनाइ मति ८ सवत १८८६ व सान ।

२७८. ७७२० (२२)

कपडकुतूहल

आद्य अग्र खण्डित है । उपलब्ध रचनाका प्रारंभ इस प्रकार है—

.. .. द्वि पिलग पर सु दर होलियै वाय ॥ १३
 ममी जर सु मो मन भयो, प्रीउ होलियै बोनाय ।
 माल मु हुगीवे लीजिये, सो माहरइ आवी दाय ॥ १४ -
 तन मुपकी माटी चणी कन्नु वणयो मुचग ।
 रतन जडीत नीरपी सोनी मूदर अंग ॥ १५

अन्त— कचीयो पेम पछेवडो कीवो सेज तीअर ।
 तिरण बेला मदिर गई प्रीउ माणइ तिरिण वार ॥ ३१
 प्रीआग गगदास मूत, नगर उदैपुर वाम ।
 कपडकुतूहल कीघा वणी देहि दुवाम ॥ ३२
 इति कपडकुतूहल सपूर्ण ॥

२९२. २०६२

करगडू चोपाई

आदि— ॥६०॥ नमो अरिहिताण रिसिह
 जिणदह पयकमल, विमल वित्त पणमेमु ।
 वट्टमाण निगा वलि काई एक कवित कहेसु ॥ १
 रिमह वरन दिण तप कियउ, वट्टमाण छम्माम ।
 वरसी छिम्मासाडसउ नामह उतिण तास्म ॥ २

अन्त— वाचक मधिपर डम कहड, भणइ ते मपद शिव लहड ॥ ७४
 इति करगडू रिपि चउपई समप्रलिपट लेप्यक पाठके मुभं भवितु ॥

३०२ ११२३ (१२)

करसंवाद

आदि—
 दूहा ॥ पहिलू प्रणमिमि सारदा, जमु करि वेणा नाद ॥
 आदीस्वर आदिड करी, गाडमुं कर संवाद ॥ १ ॥
 नाभिराय कुलमडणउ, मुरु देवी उरि हार ।
 युगला धर्म निवारणउ, आदिड आदि कुमार ॥ २ ॥
 वीम लाप पूरव लही, कुरपदिड मुविनाल ।
 त्रिस विलाप पूरव जिणउ, कीघउ राज रसाल ॥ ३ ॥

अन्त— दोड कर मप जिनेवर करचा, भाव सरिस अक्षर सभरिया ।
 श्री श्रेयांनकुमार आणद । प्रथम पारणू प्रथम जिणद ॥ ६४ ॥
 हूई वृष्टि मो वन शृ गार । दुदुभि देव करइ जयकार ।
 मुनि नावण्यसमन कहड जोय । जिहार मपति तहा मुप होय ॥ ६५
 मपइ लहीड घननी कोडि । मपइ अग न लागइ पोडि ।
 मपइ वयण न वाघड रती । मप वपाणइ श्रीजिन मती ॥ ६६
 इति श्रीऋषभदेवपारणाधिकारे करमवाद सपूर्ण ।

३०६ ४०२०

कविकल्पलता

आदि- ॥ २० ॥ अथ श्रीसारकृत वाचप्री लिप्यांत ।
 ॐकार अपार पार तमू कां न तम्य ।
 सवर कर सिरताज मत्र धुरि कवियण्म्य ॥
 अरधपद गाकार उवरे मीडा जसु साहे ।
 ज ध्याव चित लाप तिक तिहुयण मन माहे ॥
 साधक सिध जोगी जती जासु ध्यांन अहनिस कर ।
 कवि सार वहे ॐकार जप काइ सण भुलो फिर ॥ १ ।

अन्त- क्षिन मडल मिति तिलक सहर पाली पुर सोहे ।
 गल् मरु मंदिर महिन वाग वाडी सनमोहे ॥
 राज कर जगताथ सुर सामत र नवाधो ।
 सोनगर मुनमथ सुजस वसुधा वर ताया ॥
 सवत मोलनि यासिय आसु सुदी दगमी दिन ।
 आसार कवित वावन कथा साभलियो साच मन ॥५५

इति आकविकल्पलता श्रीसारकृत सपुण । सुभ भूयात ॥ श्री सवत १८७८ रा
 मती फागुण सुदी १० स श्री श्रीपुराजा श्रीवनरामनी । लीपती कु इद्रभाण वाचनारथम
 अणदपुरमध्य ।

३२५ ४६१५ (१६) कागदरी नक्ल

इस गुटकम पत्र म० ३६८से पत्र स० ८०६ तक चार कागजो(पत्रा)की नक्लें दी हुई
 हैं जो इस प्रकार हैं—

पहली नक्ल आदि- कागदरी नकन ।

छन्द नराच- मत हन सांभर नगर सुधर । प्यारी निज हाथ दियो पतर ।
 सुभ वान कथानक सुदरिय । छिन्न गात अनत चित हृदिय ॥ १
 सलिता मर निसर नीर वहे । भवनि सभ बास घर र गहे ।
 बहु बास निवास न कृप वन । वनिता गनि तीर सनीर धन ॥ २ ।

अन्त- दिन जात वषा तुम सग विना । कबहु सप होत न आप विना ।
 कहता ज रजौ समचार मय । स मिथ्या तन मानहु भाम कव ॥ १७
 न तिय तुम पत्र सनेह धनो । पय जावनकी तुम रीत गनी ।
 जुग राम वस सनि संवत य । सभ मास तथी सरस चरय ॥ १८ इति ॥

दूमरी नक्ल-

[सवत १८३४]

आदि- कागदरी नक्ल लीपते । स्वस्त श्रीअमुकानगर सुधाने सुबल सुभ ओपमा
 बेलास क्यारी अमरसप्यारी चदवदनी मगलोचनी लगनरी लडी जीवरी जनी
 हीपारी हार, सेजरी मियुगार प्रीतमरी पीतार चित्तरी उदार हनतमुषी सदा
 सुधी ।

अन्त- सवसरपी नारी नही, मवसरपी नही बाण ।
 मव गुण एकणमे नही, दापु चतुर सुजाण ॥ ६२
 इती ओपमा लिपणारी, जशजोग मत जाण ।
 कहत दुलैमल चुप सु, रुप चुप परवाण ॥ ६३ ॥ सपुर्ण ।

तीमरी नकल-

आदि- सिध श्री प्यारी दीसे, जंपुर नगर जठेह ।
 प्रीतम लिपत वणायकै, नित २ नवलै नेह ॥ १
 चदवदनि मृगलोचनी, चिता लक सुचग ।
 गजगमणि रस जोग है, अतहि जाण सुचग ॥ २
 अन्त- वाहू उतर देजो सदा, कागद अधिक उजास ।
 हित कर लिपजो हेतमु दमक्त अपणा पाम ॥ २० सपुरण ॥

चीथी नकल-

आदि- सिध श्री सरवओपमा विराजमान अनेक ओपमा लायक गुणनिधान ब्रहोतर
 कलासुजाण चवदै विध्यानिधानं मूरज जेहा तेज, चकवा चकवि जिहा हेज, चद्रमा जेहा
 सितल, र्पा जेहा ऊजला ।

अन्त- मत क्किणहिमु लागजो, नैणाहदो नेह ।
 धुकै न धुवो नीसरै, जलै सुरंगी देह ॥ १८
 सजन फनजो फुलजो, वड जु वीसतरजो ।
 नालेरा जु लुवजो, आछा जु फनजो ॥ १९
 इति श्रीपत्री सपुर्ण ।

३३१. ३५६२

काया-नगरको कागद

आदि- अथ कायानगररो कागद लीषते । सीध श्रीसुरगपुरी मुव सुथानेर सकल
 सुभओपमा वीराजमानान राजराजेस्वर माहाराजाधीराज महाराजाजी श्री श्री १००८ श्री
 श्रीधरमरायजी जमराजजी सदाचरणजी वो चरणकमलायनु जोग कायानगरसु लीपतु
 ककर पानाजाद नमतासुर अतरसुर चीतगुपतरो नमो वीसन वचावसी अठारा समचार
 भला छै ।

अन्त- सवत जगणोसै सही, पाचा उपर एक । (१९१५)
 कवीयण कर जोडी वीनवे, सायव रापे टेक ॥
 कागद कीदो कोडसु, फरप रण्यो नही फेर ।
 ओर ठोर लावे नही, हीया जव चलो हेज(र) ॥ ३

इती कागद सपुर्ण ।

३४२

२३७५ (२)

काष्ठघोडा विक्रमजीतनी वारता

आदि- श्रीगणेशाय नम ॥ अथ श्रीकाष्ठघोडानी वारता लिष्यते ।
 चोपाई ॥ हरसि दरे गुणपतिनु नाम । प्रथ विपत पोतानो ठाम ॥

तन व्यजाण बिजा बीय । तह मानव एव भवचरज होय ।

समाप धाप्यु देहू । अ राजा य हू बरू ॥

माहि बठा एव दिठो जन । तहतु भरवा उपर मन ॥ २

घउ- विभ्रमना माठा राजन । कह भूतनी सुगुा भोजराजन ।

एवा बी मया सम सहो । त सापासग धमे जई ॥ १०२

एह मात पुतनीय कही । पछे आवात मारगे उठी गई ॥ १०४

इति श्रीराजा विभ्रमजितनी धारता बाण्ड्योदनी संपूर्ण ।

३४५ ११५२

बुधुबगत

घाति- २० ॥ बडगुा दात मयदवी भडी दवल नाम ।

गाहिकना गुरतिधा घर बोनीय बढाम ॥ १

एव शिवमि साहिबो बडगुीकुं पाणुा पुनावनी धी, बडगुी प्रगाव बीया । साहिबो मुभवुं क्या उपगार बरू । हमकु क्या उपगार करहुगे । हुगारे बरानुवनि उपगार करउ । तहउ घपर क्या उपगार करहुग ।

घल- जिन हा जाव घरमीमा, "जन नई जा जाइ ।

बया गुमाह पुतपनी रटइ सु रापउ गाहि ।

मनना पुमान दीना सट्टु करे गाव पर बीना ॥

पनीर मुटगुा मागे गादा तबाणे ।

याइ मानत बज्याया हुप हुप" बाई ॥

जिमा जीव बुजपनी, जिन नामना त जाइ ।

इति श्रीबुधुबगत समाप्त ॥ धी ॥ मयव १६७० वर्षे बगावमाते हृद्युप ।
सन्निवाते श्रीमन्मन्तुरीय मयागन्त स्वच्छासु-मुग-उममुन्नामन मजतजतपरागुा
श्रीपमरबादिमुरीदेरागां दिपय धमकादिना सन्ति ॥ धी ॥ येरा साकरणी ॥ धी ॥
श्रीनागपुरमन्त ।

४०८ २८८१ (१०१)

गजा-वर्षान्तवाह

वर त्रिदु नामक बाणिय बरिमापउ घग घाउ ।

घदगा बापि अ साहिबो निर अउउ भरबाउ ॥ १

रि र वर्तना हु मीरी वापउ मयव माराण ।

बा एउ मुत लव पाइनी वरनिउ पुएव माराण ॥ २

रिगि मजा कपव माराण रिगि मुदिउ बडा विभाय ।

मदिउ माराण म माराण मयव मयव हुए रीण ॥ ३

म मयव मयव मयव मयव मयव मयव मयव ।

म मयव मयव मयव मयव मयव मयव मयव ॥ ४

४०४ ११५६ (१०) विभोद श्रीपुत्र कर्णिको ललितलिखित कपोल

२०१ - १२ ॥ मयव २ २ विभोदरे मारि मयव बदाजा । मयव ११६१ मयव

दीन पातिमाह पदमणीरं लीयै आयो नै गोरोवादल लडीया । सवत १६२४ राणा उदैसिधजीसु चीतोड छूटो नै पीछोला-तलाव उपर उदैपुर वसायौ * * ।

अन्त- सव्वत १६०० राव राम काल कीधो राव डुगरसी टीकं वैठो । पछै राव मालदे डुगरसीनै तेडनै होलीयारी रामति माहे भालीयो । पछै राव मालदे फलोवी आण घेरी । डुगरसीनै पिण साये त्याया । कोट डुगरसीरं रजपूत जगहथै देपावत सभायो । वडी वेढ कीवी मास २ ताई । पछै रावजी डुगरसीनै दोहरो करण लागा । तरै डुगरसीजी जगह छ देपावतनै कहायौ । तु कोट परोटे तरै जगह श्रै कहाँ कु थारै हाथ कूची देईस । तरे डुगरसीनै पोल वारै ले गया । जगहथै देपावत डुगरसीरं हाथ कूची दीवी । डुगरसीजी राव मालदेनै दीधी । तरै राव मालदे गढ लीधो । डुगरसीनै परो छोड दीयो पछे डुगरसी कानी होइ गयो ।

५७१ २८६३ (१३८) चद्रगुप्त सोलस्वप्न सज्भाय

आदि- * * य नम ॥ हरषड प्रभु गुरु प्रणामी करी, स * हियडइ धरी ।

सोलह सुपण तरणी सिभाइ' * * राता सवि सुप धाइ ॥ १

भरतषेत्र पाडलपुरि * राजा चद्रगुपति अभिराम ।

निसि भरि सेजि सुपन जे लहिया, सोलह सुणियो अनुक्रमि कहिया ॥ २

अन्त- सवत सोलहसइ वावी वसुदि पचमिय जगीस ।

राजलदेसरि सवा * * एह सिभाय हीर रिपि कहइ ॥ २०

इति श्री चद्रगु * * द्र सोल स्वप्न सिज्भाय ॥ लिपत हेमराजेन ।

विशेष—गुटका अत्यन्त जीर्ण एव चूटित होनेसे इस कृतिका अघिकाश खण्डित हो गया है ।

६०३ ३५४६ (१३) जपरा मुपराकी वार्ता

आदि- अथ वार्ता १ जपरा मुपरारी लिप्यत्ते । पछिम दिसनै पटरण गाव छै । तठै ओढो भाटी राज करै । तिरारै दोइ वेटा हुवा । एकणरो तो नाम भीवो । दूजारो नाम देवो । गाव २॥ ५थ ३ रो घग्गी । घणा रजपूत पाप २ रा कनै रहै छै । असवार हजार १री साहिबी । तठै ठावा सगीरै भीवानै परणायौ । देवो पिण परण्यौ । तठै बरस १६ माहे तो भीवो हुवो* * * * * ।

अन्त-

दुहा ॥ पूटो ताई पानाह, जिणै न पायो जपरो ।

मिलै न मेले ताह, माटी दूजी माहुवा ॥ १

वेह दातार विनाह, जाचिक क्यु जीवै नही ।

पूटो ताई पानाह, जिणै न पायो जपरो ॥ २

पातरिया पहलोइ, जाय जूहारचो जपरो ।

नर बीजा नर लोइ, आप्या तलि आवै नही ॥ ३

आ इतरी वात जपरा मुपरारी कही ।

सूरवीर दातार, तिरारै मन लही ॥ ३

इति वार्ता सपूर्ण ॥

अन्त- हुजारा एक वार जात भेजे जारै ।
 मन्त्र पत्र दिगन्त नटा वाय दुर प्राँ ॥
 पोकरण पोतदार तिर्क द्वारका पधारै ।
 ज्यो पानिक मिट जाय दूर आतम निगतागै ॥
 उत्पात मात करगो अन्नग जान नोया रुप जायगो ।
 द्वारकानाय प्रतापयं दनरं होनी आवगो ॥ १

सवत १७३५रा पोस वदि १० महाराजा श्रीजयवन्तमिषर्जा देवलोक प्राप्त हुआ छै
 सो अटक पार तरै घोटै चहुँरै कल्या छै ।

६५०. ११२२ (४६) जाम लापारी नोमाणी

आदि- ॥३०॥ अथ जाम लापानी नोमाणी निहटप निप्यते ॥
 मां कर भवानी मेहरवानी, मपर प्रागेवान ।
 वापान लाऊक मूर विनाऊक, दे मवाऊक दान ॥ १
 हुनू दान दाऊक नरा नाऊक, बरनयो मुविहान ।
 रज रीत रापा जाम नापा, पट्ट भापा जान ॥

अन्त- हुनू म्प राजं छवि छाजै, जम कवदा जीह ।
 यह कहत राजमरान वावत, देमपत मव शीह ॥ २६
 हुनू दीह साजै धनी दोलत, मत्ता दत्त सवाड ।
 अस्मान जमी ताम अमर, जाम नाम न जाऊ ॥ ३०
 इति श्रीनीसाणी जाम लापारी मपूर्ण ॥ .

६५३. ७४६

जालधरपुराण

आदि- ॥ श्रीगणेशाय नम ॥ अथ जालंधरपुराण निप्यते ॥
 छद वैश्रापरी ॥ गजमुप गुण भडार गणेशर ।

सिधि बुधि समपि समोभ्रम मकर ।
 उमया मात उदर उत्तपना ।
 देमू देव विद्या वरदंन्रा ॥
 अप्पर अजव अछभम आणी ।
 वधवाणी दे अखिरल वाणी ॥
 विमला कला कमल वाहनी ।
 वेद वरनी चद वदनी ॥ २

अन्त- तोहारौ चाकर चिता तूभ ।
 मफेर विजो न चीरासी मूभ ॥
 तोरी करि रापि हवै त्रिपरारि ।
 अमै वर मूभ मया अवधारि ॥ ३५

इति श्रीजालधर पुराणं संपूर्णतामवीभजत् ॥ लिखित प. कुअरकुशलेन ॥

६८१ ४६१४ (५४)

जोगी रासा

श्रान्ति- अथ जोगीराम लापीत ॥ ४० नम मीध्यम्बो नम ॥
 आदिपुरिप जो आदिजगोत्तमु, श्रान्तिजती धादिनाथो ।
 श्रान्तिजुगोत्तमो जोग पयसो जय जप जय जगनाथो ॥ १
 तास परपर मुनिवर हुआ दीगाबर सहिनाथी ।
 कुदकुदाचरज^१ गुण मेर, पाहुजी कहिय कहाणी ॥
 अत- जोगीह रासो सीपहु थावक, दुपन कबहु लहि सौ ।
 जो जिएदासह त्रिविधि हि सिधहु समरण कीजहु ॥ ४२
 ईती जोगीरासो सपुरणमस्तु ।

६८३ ५४१८ (३१)

टडाणा गीत

श्रान्ति- टडाणा टडाणा बे जियइ टडाणा टडाणा ॥
 इत ससार दुप भडार क्या गुण देपि लुभाणा छे ॥
 जिन टग ठगिया नादइ काल फिर तस जोग पत्याणा छे ॥
 अत- बरि उदिम आपन बन मडी भोगी अमर बिमाणा छे ।
 समिकि तपोहण दस विधि पूरा निरमल धरम कराणा छे ॥
 सुधसरीक सहज लवनावहु भावहु अतर भा(गा) छे ।
 जप बूचा तम सुप पावहु, बछ पद निरवाणा छे ॥
 इति टडाणा समाप्तम् ।

७१५ २३६८ (५)

तारातबोलकी धार्ता

आदि- अथ तारातबोलकी वारता लीपते ॥ मुलतान वासी ॥ नाव ठाकुरसी ।
 बुनाकीनास दुर देसकीसु वारता देपि आया सु लीपी छ ॥ प्रथम गुजरातसु कोस ३००स
 अहमदाबाद नगर छ । अहमदाबादसु कोस ३००स आगरी छ । आगरासु कोस ३००स
 नाहोर छ ।

अन्त- ' तारातबोन नगरक आसि पासि सीमु नदी बहै छ । चोगरद जीका पाट
 छ । आगकी काई गम नही । मुनक जमी आसमान छ क नही छ । जी बी ठीक नही ।

आ वारता मुलतान वागी नाम ठाकुरसी जाति पनी बुलाकीदास देपि आयो
 सो नीपी छ ।

तारातबोन आगरासु ५२५१ कोस छ । आगे धरती छ जाका बिचारतो कबली
 जाग सहर १ भाग बताव छ । जीको राह कोस २००स आग चाल छ । सो पन्ति होसी
 सो जाणसी । इ बात मजूब जागो मतीना ॥

ईति श्रीतारातबोलकी धार्ता संपूण ।

७८६ ११२४ (१०) दामनक चौपाई

आदि- ॥३०॥ वा० श्रीगौभाग्ययोगरगुम्बे नम ॥
 दूहा ॥ नरमति गामिणि घानर्मी, मागु अविचल मान ।
 सरस वत्रा रम योनत्रा, रे जेड प्रदान ॥ १
 दया नर्म जगि स्यहुड, भाषद श्रीजितराय ।
 तजळ परि सत्रप्रहृ, वीनिमुं मगुण पनाय ॥ २
 मानव भव दुहित्यु नरी, कीजड जीव यनन ।
 दामनगर्ना परिमदा, लहीउ परिप्रयन ॥ ३

अन्त- नवत गोल त्रिमठि जाणि (१६६३) । ज्येष्ठ मुदि नरमो मु वगाणि ॥
 राउ(?)द्रहा नगर मभारि । श्रीपद्र मान स्वामि आचारि ॥ ३१
 पुन्यइ मुप नपति धरि होउ । पुन्यइ जय नाभउ पगि जोउ ॥
 दयाशील वाचक उमि कहउ । पुन्य घरी मित्र पद लहउ ॥ १३०

इति श्रीजीवदया विषये दामनक चौपाई नपूर्णे विहिते मुनि श्रीज्ञानयोग्येण माहाराजल
 पठनकृते श्रीपाद्वेनायप्रसादात् श्रीरस्तु ॥

८७६ ४६२४ (३) नागदमण कथा (अपूर्णे)

आदि- ॥३०॥ श्रीनारदाय नम ॥ अत्र नागदमणि लिप्येते ॥
 दूहा ॥ बलतो सारद दिनधु, गुणपति करो पनाऊ ।
 पधाटा पनगा मरस, जदुपति कीधो जाऊ ॥ १
 प्रभू अनेके पाठीया, देत बडा नादन ।
 के पालण पोठीया, के पय पान करन ॥ २
 कोइ न दीधो कानवा, मुण्यो न नीता वध ।
 आप वधावण उपना, वीजा छोडण वध ॥ ३

अन्त- "कलय ॥ मुणे पुणे सम वास, नद नदन अहिनारी ।
 समुद्र पार ससार, दोई गोपद अणहारी ॥
 अनतर आणद मवे वपताप सुणावै ।
 भगति मुगति भडार, कजन मुगनाह करावै ॥
 रमीयो चरित राघारमणि' " ॥

६१३ ११२३ (२२) नेमिनाथ चदाइण गीत

आदि- ॥३०॥ राम केदार गुडी ॥
 दूहउ ॥ मामल वरुं सोहामण, सत्र गुण भणु भडार ।
 मुगति मनोहर मानिनी, तिनको हइ भग्यार ॥ १
 वालि ॥ मुगति रमनि तु भरधारा । तुभु गुण कोइ न पामइ पारा ॥
 तीन भुवनहु आवारा । अभयदान सुहइ दातारा ॥ २
 अन्त- सहस वसप कु आयु ज पालिउ । जनम मरण कु भड स वटालिउ ॥
 मुकल ध्यान ऊजल गिरि करीए । नेमनाथ शिव रमणी वरीए ॥ ४५

दूहउ ॥ नेम चदाइए जे भणइ रे, ते पावइ पुसार ।

- मुनि भाकड इम वीनवड छोरउ भव के पार । ४६

इति नमनाथ चदाइए गात समाप्त ॥

३५७३ (४८)^१

पनरमी विद्या

आदि- ॥२०॥ श्री गुणसायम अथ राजा भोजरी पनरमी वार्ता व्यास भवानीदास
कृता लिप्यत ।

अथ कृत्वा ॥ श्री गणपति सरस्वती सीव त्रिसना रवि गुरुदेव ।

वास करे अरदास प्रभू, देजे अप्पर भय ॥ १

अविगल वारिण आप जे, देज्ये सुबुद्धि सुगया ।

त्रियाचरित्र वरणत करू, धरे सुलछन ध्यान ॥ २

अत- कछु न तार वचन चिन धरय ।

कराय भोग आलोच न करीय ॥

सुप विनाम बहुरेरा कीज ।

दीलसु मरम भरम नही दीज ॥ ५३

त्रिय परपुरुष घणु वपाणु ।

चोहट वात पारकी आण ॥

देप जवाना चीत दीढ़ावै ।

विघतामेह जु छिनाल वताव ॥ ५४

(अपूर्ण)

१०७५ ३५६० (४) पाबू घाघोलातरा दूहा (अपूर्ण)

आदि- ॥ श्री पाबू घाघोलातरा दोहा मु० नव्यरा क्या ॥

देवी द वरदान, भुणती यु लघ मालीयो ॥

पाबुमु परध्यान गालतु तुव गुण ॥ १

सुरनाया कुडा न वरदायव हुइज बल ॥

भल पाबू भूपाल मलकहे या वीरत सुणु ॥ २

अत- वीर वरजताह म कीघो सुज पामीयो ॥

पुट नह पाताह, माता सुण बूमो मुण ॥ ६५

छेन्डो विद्यावह म समझायो मो दिसा ॥

पिण तागो या एह तो पिण न मान त्रिपट ॥ ६६

११५५ ५८६७ चगसीराम प्रोहित हीरां की वात^२

१२६६ ३५४६ (२०) महाराज अभसिघ देवनीक हुवा तिण समयरी वार्ता

आदि- ॥२०॥ अथ वार्ता महाराजा श्रीअभसिघजी देवलीव हुवा मारवाण्डि
विपो हुवो तिण समीयाती ॥ सबत १८०६रा अगाड सदि १४री राति घडी २ पाछनी
रहिता महाराज श्रीअभसिघजी अजमर देवनीक ब्रवा न दाग पोहारजी दिरायो । पद्य

१ यह अथ मूल सूची में सूत्र स द्यपना रह गया है । २ यह कृति प्रतिष्ठान स प्रकाशित हो रही है ।

महाराजकवार श्रीगामिघर्जा श्रावण शुदि १० गुरुवार जोधपुरमें टीकें बंटा ।

अन्त- मवत १८१३रा आनाज मुदि ८ महाराज विजैगिपजी भेटर्न अमन कीया ।
सोभत पिण तुरी तीधी । तरै रामनिपजी तँपुर गया । राजा ईनरनिपजीरी बंटी परणीया
मवत १८१३रा पौम वदि १ मगनवार ।

इति मास्पडविपारी वारता मपूर्णा ।

कवित्त- दिपणी मुरधर देम राम राजा ते आया ।

लारा लगावै रार काल पिण पडया मवाया ॥

घरती हुई पराव लुटहोस घणी मचाई ।

हुनीयारा पोगाल गड पिण कटी गवाई ॥

मवत अठारै इग्यारोतरै वारोतरो पिण जाणीयो ।

तीनु काल मिन एकठा तेरोतरोही पिछाणीयो ॥

१२८६ ६०४.

माघवानलकामकदला चौपाई

आदि- * * * माघवानल २ रूपि मकरद । चवदह प्रियाघर चतुर ॥

विदुर जाणि मुरगुन विन्दण । नारद वर नाद गुण ॥

लहु वेस वयिम नक्षण । जला बहूनरि अति कुमनक्षण ॥

अभिनव इदकुमार । सद्गुरु मुपि जिम मन लउ ॥ विरचिमु तेह चरित ॥ २

अन्त- दूहा ॥ नवत् मोलमोलोत्तरइ, जेमलमेर मभारि ॥

फागुण नूदि तेरसि दिवमि, विरची आदित्यवार ॥ ५०

गाहा ग्ढा चउपई, कवित कथा मवघ ॥

कामकदनाकामिनी, माघवानल मवघ ॥ ५१

कुमनलाभ वाचक कहइ, सरम चरित सुपवित्र ।

जे वाचइ जे सभलइ, तीया मिलइ घन गरथ ॥ ५२

गाथा माढी पाचसइ, ए चउपइ प्रमाण ।

सुगता भणता सुप दीयइ, जे नर चतुर मूजण ॥ ५३

रा ल माल मु पट्टघर, कुवर श्रीहरराज ।

विरची ए श्रु गार रम, तासू कतूहल काजि ॥ ५४

मारदसु प्रसाद करि मोल तराइ आघारि ।

भणइ मभलइ तेह नर, सुप पामइ नरनारि ॥ ५५

गथ ५०५५ ॥ इति श्रीमाघवानलकामकदला चउपई समाप्ता ॥ स० १६४३ वर्षे
चैत्र वदि १० बुधवारै उत्तराण्ट नक्षत्रे मध्ये पल्लीवाल० भट्टा श्री शातिसूरि तत जि०
देवीदास लिपत जयतारणे ॥

१३०२ ६७१

मानतुगमानवती चौपाई

आदि- ॥दं०॥ श्रीपरमात्मने नम ॥

प्रणमु माता सरसती, प्रणमु सद्गुरु पाड ।

मूरपथी पडित करे, जम जगमे कहिवाइ ॥ १

कथा सरमनें कवि वयण, बलवीया बहु माठ ।

सावर द्राप अमी थकी, म ता अथिका दीठ ॥ २

ग्रन्त- सबत सतरेंमतवीसें घुरें । मुदि आसात् वीज दिनें गुरें ॥

परतर सह गुरुजिण्णचण जयवरू । तहनें राजे सोहगसुदरू ॥

सु दरू गोममु दर प्रमा । अमयसोम इणि परि कहें ॥

ए सरम कहिनें कथा दापी । भेद मतिमदिर लहें ॥

इति श्रीमानतुंग मानवतो चतुपदा समाप्ता ॥ सं० १७७८ चैत्र सुदि चतुर्थी तिथिता
प० राजविजयवर ॥ आदिका पुण्यप्रभाविका देवगुरुभक्तिवारिका केसरपठनाथ वीरम
पुर वास्तव कल्याणमस्तु ।

१३८२ ३५५० (१५) मडता आदिकी एतिहासिक हकीकत

आदि- मवत १७४६ वष पोस वणि नवाव अयाइतपानरो वटो रावणपडो
तिणनु मेन्तीम जोष पाडानु मारीयो । साभरि पर सुरव घणा मरण गया । रपत वषत
घोडा बुद द्रव सब रजपूतार आयो । राडानु वाती । मारवाटि माह वरस ७०८ रह्यो ।
लोवा माहे लाव पात्ती गाव घणा पाड मारीया या तका मव कसर बाडी । मुहुवमनीष
मन्तीयानु मारीयो हुनो तको वर लीया ।

ग्रन्त- सं० १७५२ वर्षे वगडी मुनात र्पीया हजार ७ लसकरीपानर वट बीजो
हवीवपान लाधा । माप नीपनी सपरी । मह घणा हूमा ॥ १

१४५४ ७७२० (२३) रागनामोपरि विरहसुभाषित

आदि- ॥१०॥ प्रीतम चाल्या हे गया ललित करी लयवार ।

द्विपडा उपर हिमता, मा विरहणीको ना द्वार ॥ १

सुम विण मेरे प्रातमा, मदीर माहि अघार ।

पर बाहर नहा आलगे जा पीया लाव गघार ॥ २

ग्रन्त- पाहारा प्रीतम आहयो, सया मम सुजाण ।

मन उछाहा मधि हूयो, करा कल्याण कल्याण ॥ ३०

प्राठ पधारमा हे सया पायो आज मोभाग ।

जतथी जय जय करे, आज अम्हारा भाग ॥ ३१

एति राग मपूण सवन् १७६१ वर्षे जठ मू ७ दोने थी ॥

१४६१ ४६०६ (२) राजसभारंजन

आदि- ॥१०॥ अथ राजसभारंजन तित्पत्त ॥

गगाधर सबहु सदा गाहन रसिक प्रवीन ।

राजसभारंजन कहा, मन हुनास रस नीन ॥ १

एपतिरति नारायनन, विद्या मुपन मुगह ।

जा शिन आय धानमी, जातवती कन एह ॥ २

वीचमे कुछ उदाहरण—

माथ सट्टे चलयो चहै, मुग्धा तिथि पिय छैल ।

पीमेमे कोटी न्ही, चले बाग की सैल ॥ ६७

महज रीति कुल तजि लगै, काम कलाकै माज ।

बाप न मारी मीडकी, वेटा तीरदाज ॥ ७०

अन्त— छद तीनसमाठ मत्र, व्यवहारै मुप देत ।

राज—सभा—रजन मरम, क्रियो रमिकजन हेत ॥ ६७

अक वान मुनि ससि (१७५६) ममा, विक्रम मक नभ माम ।

उजल नवमी भृगु दिवस, पूरन रम-प्रकास ॥ ६८

मुपद भूमि मग्रामपुर, श्रीनृपवर जयसाहि ।

तहि कवि मन मुग्रमन्न अति, मति रतिमो अवगाह ॥ ६९

जव लो मुप सज्जन कला, मेरु धराधर धाम ।

तव लो चिर जीवहु रमिक, पटत गुणत गुंन नाम ॥ ७०

इति श्रीराजसभा-रजन दोहा समाप्त ।

संवत् १७६८ वर्षे मिति पोम वदि १४ शुक्ले लिपिहृतं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।

१४७६ ४८३४

राठोड नाहरखानगे छद

आदि— छद राठोड नाहरखानरी गाडण माधोदास री कह्यो ॥

आरज्या ॥ उपपन्ना पुरसाणी उडा । पाणी पछा पापर होडा ।

अँरा कीआ रच्छीस जोडा । नाहरखान भमर्ष घोडा ॥ १

भाडजी केवी मुगलाणी । पासा पैंग जिके पुरमाणी ॥

वडपाता मुण अवरल वारणी । रेवत रीभ दीयै राजाणी ॥ २

अन्त— कलम ॥ वहम तेज वट्ट मफल वट्टत मोला वहु भोयरा ।

धीरज तेज अनत लोय दीप ववहनोयण ॥

घड विसाल पै करह गात उतगह मैंगल ।

पवग वेग विसराल बाजि वीया वेगागल ॥

वरहाम वडा वड कवीयणा त्यागी छण हरतै रवै ।

ममपीया पान राजानकै कृप करन्नह अभिनवै ॥

इति नाहरखान घोडारा दाताररी छद संपूरण ॥

१४६८ ३८६७

रामयशोरसायन

आदि— ॥दं०॥ राम-रामा लिपते ॥ वेलावल रागे ॥

दोहा ॥ श्रीमुनिसोन्नतस्वामि नमो, त्रिभवन तारण देव ।

तीरथ कर प्रभु वीगमो, सुर नर सारै सेव ॥

पुत्र नुमित्र नरिन्द्रनो, पो मावैत ममाय ।

जनमा भूमि जिनवर तणी, राजग्रही कहवाय ॥ २

ग्रन्त-कलस ॥ राम लिछमन ग्रन रावण सति सीता नीचरी ।

कही भाषा चरीत साची वचन रचन करी परी ॥ १

सध रग विनोद कचता, ग्रन आवता सुप भगी ।

केगराज कवीन जप सदाहरप वषामणो ॥ २

ईति श्रीढाल ह्यपटया रामयसोरसायण चतुधादिकार समाप्त सब ढाल ६२ सब गाथा ३१६६ सब ग्रथाग्रथ ४३७५ ईति रमायण समाप्त ॥ सवत १६७१ चत्र मासे गुवापये तिथ छठ ६ वार प्रादीत बार न देहरग्राम जमना टट । लिपत रमायण साम्न पुरा कीषा हगा बुधराम लिपत ।

१५३७ २३६४ (२) रूपदीपक विगल

प्रादि- । श्रीरामजी ॥ ग्रथ रूपदीपक भाषा त्रिपन ॥

दाहा ॥ सारदमाता तू बनी सुबुधि देहू दर हाल ।

पिगन वि छाया सीय बरनों बावन चाल ॥ १

गुरु गनेमके चरण गहि हिय धारक विस्न ।

कुमर भवानोनास की जुगति कर ज विस्न ॥ २

ग्र त- बावन बरनी चाल सब जस मोम बुद्ध ।

भून भेद जाकौ कहौ करौ कवीसर श्रुद्ध ॥ ३

मवत सतर स वरम श्रीर छिहतर पाय ।

भादा सुदि दुतीषा गुरो, भयो ग्रथ सपदाय ॥ ४ सवत १७७६

इति श्रीरूपदीपक विगल भाषाग्रथ संपूणम ॥१॥ स १८५८ मिती पोस सु ६ ।

१५४७ ११२२ (६१) लापफूलाणीरा कवित्त

प्रादि- ॥१०॥ ग्रथ लापाफूलाणीना कवित्त लिप्यते ।

छप्पय ॥ प्रथम चउहू कौडि सेन गह मिल मुभट्टा ।

घर पूरय ऊमठ वहे सिर घाट उवट्टा ॥

जगल वारा मिरू लप्प लोधी घर माही ।

वनचर चीध विलग्न जाण वामणो पसाही ॥

धूधला गयण पुड धूजियो गभीर पच जोजन गियो ।

मम वीह सूर सत्त मारवा इद्र वहे लापा ग्रयो ॥ १

ग्र त- सवत नव एक्कम मास कारतवव निरतर ।

पिता वर छन ममहि सहउ रापाइत राद्धर ॥

पड ममा भो पार पड सोलकी सो पत्त ।

प्रागणीस सो चावडा मूधा छिन राज रिणवट ॥

पातरे घमल मगल लहे सोल सीह नामी सर ।

भाठ म पप्प रा चादण मूलराज लापो मर ॥ ५

इति लापा फूलाणीना कवित्त संपूर्ण ।

३५४६ ३५५५-(२७) लापाफुलाणीरी वात

आदि- श्री गणेशाय नम ॥ अथ लापाफुलाणीरी वात लिपते । प्रथम तो गीत सीहा सेतरा मोहरो लापाजीनै मारीया तिरा समारो—

मुध मन जात चालियो सीहो, सेन मुत्तन ले वहू साज ।
मूलराज नालेर मेलायो, उपर करो कनोट्या आज ॥ १
हुतो चाल्यो जाति गोमती, सगी पण छै आगलो साथ ।
जाता करे बलता घर जास्या, वाडडता सगपणारी वात ॥ २

अन्त- सिरदार काम आयो । रापायचरा काका भाइ माग ही वर ले पाछा पाटण आया ।

इति श्री लापाफुलाणीरी वात मपूर्ण । मवन् १८२६ वर्षे घेष्ट वदि १४ दिने पिपलीया ग्रामे लिपत केसरचद लिपीकृत । तिरा समारो कह्यो दूहो—

लापो तो मीहै मारीयो, थे भगा मो वार ।
पडीयो सीह करकडै, की वेडीयो गिमार ॥ १

वात लाखोजी पुरे लोहे पडिया छै तठै मूलराज चावडो आयो सीहोजी कुच करे नैक नव जनै पधारीया । सोलकणीमु सुप भोगवना छ पुत्र हुवा छै । वडा आसथानजी तिके मारवाडमै आया । तिरारो विसतार राठोड छै सही ।

इति वारता सपूर्ण ।

१५६३ १८१५ विक्रम-चरित्र

आदि- ॥६०॥ श्रीत्रिपुराई नम ॥

देवि सम्मति पाय पणमेवि शभु गकति त्रिमनी धरी ।
करिम कवित नव नवइ सिद्धि बुद्धिबर विघनहर ।
गुणनिधान गणपति प्रसादि जानी रपि आगइ हूया ॥
जह आगम परवेस तस पसाइ कवीअण कहइ विक्रममुत ब्रणवेस ॥ १

दूहा ॥ आदि सति नेमी सरह, पासनाह वर्द्धमान ।

ए पचड मगल करण, शास्त्रारभि प्रवान ॥ २

अन्त- पनरपासठइ सवत्सरिइ । जेठ मास सुदि पक्ष दिन करिइ ॥

रवि त्ररास ए शास्त्र प्रकास । कहि कवीअण निज गुरु उदास ॥ ४६

विपुल बुद्धि सुकवि तेह तणइ । वाचक उदयभानु इम भणइ ॥ ६२

इति श्रीविक्रमचरित्र प्रवध ॥ सवत् १५६७ वर्षे मार्गशरमासे कृष्णपक्ष नवम्या तिथी गनिवारेऽज्जेहश्रीपूणिमापक्षे पूजा श्री श्री ६ भुवनप्रभसूरि शक्य वा० रत्नमेरु लिपित ॥ गोदावरी ग्राम श्री श्रीहस सानिध्ये लिपित ॥ कल्याणमस्तु ॥

६४१४

विक्रमचरित्र (हेमाणन्द रचित)

आदि- ॥६०॥ श्रीसरस्वत्यै नम ॥ प्रणम्य देवदेवच वीतराग सुरचित ॥

लावानी हि किनोदाय करिष्येह कथामिमा ॥ १

नन्वा सरस्वती देवी स्वेताभरणभूयिता ।

पद्मपत्रविमालाश्री नित्य पद्मासन स्थिता ॥ २

श्रुत- श्री विक्रमने बताल कथा कही जउवास उदार ।

मोन छियाल भाद्रव माम । हेमाणद कहै उल्हास ॥ ३६

इति श्रीवत्सालपञ्चासा २४ कथा ।

दोहा- बनि विक्रम मीमम गया, पाद्यो तिणु हा डाल ।

मन्वधी वाधइ काया, तब बोल भूपाल ॥ १

भागवा भग अपूण है ।

१६१२ २०१६ विक्रममेन चोपाई (परमसागरप्रणीत) *

आदि-

॥६०॥ दूहा- परम जाति प्रनामपर पूरण परम उल्लाम ।

प्रगमु परमानदमु परम सपमर पास ॥ १

चरमसरीरा चरम जिन गायन नाह सद्धिर ।

परम प्रम पद मुजस्यां जगवन भजि न वीर ॥ २

श्रुत- तां लग ए चोपन थिर रह्या, जा लग मुरज च्या ।

राग ध्यासी दान चोमट्टमी, परमसागर आणदा रे ॥ १३

मध्य गाया १३४७ छ इती श्रीविक्रमान्त्य ज्ञानावतीसूत विक्रममेन चोपाई मपूर्ण ।

१६१३ ३८६८ विक्रममेन चोपाई (मानसागररचित)

आदि- ॥०॥ श्रावतसगाय नम ॥

मुपगता सपमरा पूरण परम उतास ।

सानिध कर्या साहिना अधिन पम मुक भाग ॥ १

मारद च सामा बडो, बदन अनोपम जाग ।

सा मारण मुप्रमत्र हूवा, दा मुक बचन विनाग ।

श्रुत- दान बावनमी जा मे गाइ मानसागर मुपगाइ जी ।

दीन २ पवन जान सवाइ दा २ दाउत पाइ जी ॥१॥ १३॥

इति श्रीविक्रममेन नरित्य चोपी सपूर्ण समाप्ता । स० १८२८ वरप ।

१६२७ ३६१२ विद्यावितात चोपाई

आदि- ॥०॥ जीजितरपाम नम ॥

राजिनवरगुणवागिना प्रगमु सरगति माय ।

बविधगु बयणु ममुचरइ त सारद मुगगाइ ॥ १

प्रणामु गोतम प्रमुप वलि, गणधर गुणह निवाम ।

समरता गुण जेहता, पूजइ मगली आस ।

अन्त- ताम सीस रगइ कहइ, राजसिंघ आणद ।

विद्याविलास नूप गाईयउ, दान अधिक सुपकद ॥ ४५

ए सवध सुहामणउ, सुणत भणत दुप दूर ।

मनवच्छित साहिल फलइ, लहावइ नुपतर पूर ॥ ४६

इति श्रीविद्याविलास चउपई समाप्त संपूर्ण सर्वंगाथा ३४६ त्रयाग्र ४१६ सवत् १६६३ वर्षे माह वदि ६ नौमि ठाकरसी वाचनार्थ लिपित श्रीजेमलमेरमध्ये शुभ भवतु कल्याणमस्तु ॥

१६२६ ६१११

विद्याविलास चोपाई

आदि- ॥दं०॥ श्रीनरस्वत्यै नम ॥

दूहा- सरसति नित आपो सुमति, चित हित धरि प्रणामेवि ।

जित तित थिन थानक अचल, सोभित दह दिमि देवि ॥ १

कवियण नरसा निधि करण, दूर हरण अग्न्यान ।

चरण सरण उपम धरण, उपावण गुण ग्यान ॥ २

अन्त- वाचक गुणवर्धन सुषदाया, श्रीसोमगणि नुपसायाजी ।

डम जिनहरप पुण्य गुण गाया, तीस ढाल सुष पायाजी ॥ १४

हिव राजानि सुणै गुरवाणी ॥

इति श्रीपुण्यविषये विद्याविलास चोपई संपूर्ण ॥ स० १६२६ वर्षे मिति ग्रामाढ सुदि ७ दिने ।

१६३२ १६२७

विद्याविलास रास (पवाडउ)

आदि- ॥दं०॥ ॐ नम ॥ श्रीवीतरागाय नम ॥

पहिलुं पणामु पढम जिणेसर, शत्रुजय अवतार ।

हथिणाउरि श्रीशाति जिणेसर, उजलनेमि कुमार ॥ १

जी राउलि पुरि पास जिणेसर, साच उरउ वर्धमान ।

कासमीरि पुरि सरसति सामणि, दिउ मुभ नित वरदान ॥ २

अन्त- सयम लेई सिवपुरि पुहुतउ धन धन विद्याविलासइ ।

भणइ हीराणद सो श्रीसवह वच्छित पूरउ आसइ ॥ १६

सवत चऊद पच्यासी अए, रचीउ ए हरमालतु ।

अचल वधामणा ए ॥ १६

जा लगइ अवरि रवि तपए ता लगइ विस्तरउ ए चरी ।

अचल वधामणा ए ॥ २०

इति विद्याविलास चरित्ररास संपूर्ण ॥ सवत् १६७६ वर्षे ॥ आसो वदि दुवादसी गुरुवारें..... जावालमधे लिपित ॥ शुभ भवतु ॥

१६७० ७७२२ (१५) वीरमद ईश्वरिया धारिण कवित

धाणि- ॥ आगणगाय न(म) ॥

कवित- गदत लव दर्दयन मन भक्तत ग्रहिराइणु ।
 धनत धान ग्रहि चलत पान पघत पत्राइणु ॥
 समरत प्राप्त माया तपास रस हाइ महा जल ।
 परमा वात वावन घात चितत वेगायन ॥
 प्रणुराद चाइ एकागुर्वै साविहानर दिग मव ।
 त्रिहू राइ त्रिगव तारियणु तना दाता तो धारण्ये ॥
 प्रत्त- कर परि जिग गिरवर धरपी, मयुरा मारपी कम ।
 रणा रापस निरदले, जयकारा जदुवस ॥ १०
 श्रीठाकुरांरी गापी छ ॥ लिपन मिथ्य मानदराम ॥ शुभमस्तु ॥

१६७३ २१४३ (४) वीतलदेव मूर्धर गिकाररी वात०

धाणि- ॥ अथ यन्त्राव वीतलद सीरीहीर धणीरा मूर्धरार सिकाररा वात लिपन ॥

द्रुही- गहै धूय सुवा घटा यणिया टव विहूलन ।
 धरवदन धयगा रहै जाता बीणु हवास ॥ १

वात- धावुरा पाहुडों ऊपर नवनाथ । चोरामा मिद्ध । चोंमठ जायगी । धावन
 धार । तपाम बाहू नवना तपस्या कर । स प्राधूर पाहुणा ऊपर १ जनम सीयी मो मास
 २ धमवा ध्याररा हूवी । मो माईता गाय चरण जाव । ना पाहुड बीग १२ म तें ऊपर चर
 पाय । ना मारी ही टाड तपमा तपस्या कर छ ।

धन- ना जिग यहम मूवर गिव भी तम पाय पटी । यरी मजगल हूई ।
 त्रिर्ष गिकारर काम धामा धा तिकान रायजी निवाजन करी । गीरोही पपारीया ।

इति धायद मय रामलदेर मूर्धरार गिकार वात मूर्धरी ।

१६६० ७७४३ (४) वैशानुनि भावा

धाणि - ॥ धीगमर्जी ॥ अथ यन्त्रुनी भाषा साप्यत ॥ राजश्रीराजमीपजी
 नमायर्ष ॥

ध- धी भागीय दगम मकप, ह मनुग भाषा बंध ॥
 धनी धान मर कप धा धावागमन मिष्टे अम प ॥
 धीग- धीगुनव हला तनुवनागा । बद्ध्यागके पुन विमया ॥
 तीतर दधना म कर । मातवा वनी हीरदमे ध ॥
 ध- धि गी लोट ज करे युनै कम जान ।
 तम ल म हूय पाव है यद मम बाणन ॥ ६०

इति धाद मूर्धरी मय धरल गइल ॥ अर्थ य मूर्धरार धीराजगाम्त्री ॥

० म ४६२२ (३३) पर धीजिग लकागिह बरातरा धनी वीर दग रपगर्षी कथा
 कानु टव है विदु दाराजी कथायता सिद्ध है ।

१६६१. ३६०३

वैदर्भी चौपाई

आदि-

॥६०॥ दूहा- जिण धर्म माहे दीपता, करि धरमस्यु रगि ।
 रिदइ, मूरा जाणिस्यइ, ढाल भणइ चहुरग ॥ १
 रग विण रस न आवमी, कविता करो विचार ।
 नवरस आदि सिंगार रस, ते आणु अधिकार ॥ २
 अन्त- दूहा ॥ दान देइ चार तलीयो, हूवउ तउ जयजयकार ॥
 पेमराज गुरु इम भणै, मुगत गया ततकाल ॥ ४६
 भणै गुणै जे साभलै, वैदरभी तणी वीवाह ।
 भणता सह सुप सपजै, पुहचइ नगर मभार ॥ ५०
 इति श्रीवैदरभी चौपाई समाप्ता ॥ ग्रथाग्रथ २५० ।

१७००. ३५४८ (१)

वैहलीमरी वात

आदि- ॥ अथ वैहलीमरी वात लिप्यतै ॥

दूहा- धूर दीपण वाका धणी, राज करै पीरोज ।
 उगै आयनीया विचै, दाण उधरै रोज ॥ १

वात- पीरोजसाह पातसाह गढ गजनी राज करै । तरै पातसाह वीचारीयो वीजा-
 पुररो गढ लीजे । तरै पातसाह कटक करनै वीजापुररै गढनु लागी । मास ८ आठता ढ
 ढोहो हुओ । पळै गढ पीरोजसाह पातसाह लीयो ।

अन्त- वात ॥ तठै ममण तलाव ऊपर सती कर काठ देने पाछो वलीयो ॥

दूहो- रातै मुह वैहलीम साह, साहिव भाई होय ॥
 भोजाई पला जिसी, कवर होसी मोहि ॥ ५६

इति वैहलीमरी वात सपूर्ण ॥ लिपत धनराज तिमरीमध्ये सा श्रीअमुकनाजी
 तत्पुत्र राजसी फतेचंद वाचनाय ॥ स० १७६४रा मिती आमोज सुदी २ गुरवारे ॥

१७६८ १००२

शत्रुञ्जयउद्धार रास (समयसुन्दररचित)

आदि-

॥६०॥ दुहा- श्रीरिमहेसर पाय नमी, अण्णी मन आणद ।
 रास भणी सरलीयामणो, सेत्रु जना सुपनो कद ॥ १
 सवत च्यार सतोतरइ, हूआ धनेसर सूर ।
 तिण सेत्रुज महातम कीह्यो, सिलादित्य हजूर ॥ २

अन्त- तास सीस जग जाणीर्य ए, समयसुन्दरउ वडाय ।

रास रच्यो तिण सूअडो ए, सुणता आणद थाय ॥ २१॥से॥

ईति श्रीसेत्रुजय रास सपूर्ण ॥ सवत् १८३६रा वर्षे आसोज मुद १२ दिनै उपाध्याय
 श्रीसोभागचंदजी कस्थ आत्यम साधने लिपापित प नैरासीलिपत श्रीराधणपुरमध्ये ॥
 श्रीरस्तु ॥

१७७२ ३६५३ नशुञ्जयउद्धार रास (नयसुन्दरविनिमित्त)

गादि- ॥१०॥ शक्यमा नम ॥

विमल गिरिवरमदन जिनराय । श्रीरिसहेसर पम नमा ॥
 धरोय ध्यान सारदा दवी । श्रीमिद्धाचल गाई सिउ ॥
 हईई भाव निरमन धरेवी । सशुजि गिरिवर माहिं वण्ड ॥
 मिद्धि अनती बाडि । जिहा मुनिवर मुगति गया ॥
 यदु व वर जोडि ॥ १

घात- भानुमेह गणित मीग दाए वर जाणि कहि ॥

नयसुन्दरा प्रभु पाय मवा नित बने वा । देहि दणए जय करो ॥ ११४

श्री श्रीमशुञ्जयउद्धार समाप्त ॥ म० १६६२ वर्षे मागसिंरि सदि २ महोवाध्याय
 विमनहूपगणिए गिण्य गणिए हेंसविजयेणालेणिए ॥ शुभ भवन्तु ॥

१७४४ ६०० श्रीपाल रास (विनयविजय यशोविजय विरचित)*

गाणि- ॥ श्री सद्गुरुकर्मो नम ॥

द्रुहा- मलयबलि व विषणुतणिए, सरगति वरि सुपसाय ।
 मिद्ध चक्र गुणगारता, पूरि मनोरथ माय ॥ १
 घात्रिय रिपन मवि उपमम नपता जिन पोवीस ।
 नमता निज गुणपवनमल जगमा वष जगीस ॥ २

घात- देह सबन ससोह परेदे रग घमग रगवा जी ।

शुनुकर ते महाण्य पन्वा नहिस्य गान विवाला जी ॥१४॥ त०

इति श्रीमहाणाध्याय श्रीकालिविजयगणिए गिण्य उपाध्याय श्रीविनयविजयगणिए विर
 षिणे उपाध्याय श्रीनयविजयगणिए पूरिन प्राकृतबंध श्रीमिद्धचक्रमहिमावणनाथिकारे श्रीपाल
 वसुप संद संपुणम् ॥ घाग म० १६२३म मिद्धनक्षत्रजाविधि लिपी है ।

१८४३ ६०३

शुभबहोतरौ चाणई

घाणि- ॥ श्रीगणगाय म ॥ श्रीमाताजी साथ छे ॥ छ ॥

सपन गुरागुर गाया मगन बजाग मुनस जय नितया ।

वर विजायरा दाया सा सारन वम वर गुमाणि ॥ १

घात- मंगल गहेला जिन चापीग । बीजो मगन पोमय मीग ॥

बीजा मंगल मुग घणिपात । चापो जिन गागन अयात ॥ २२

इति धारणयत्ररा कथा गुरुबहोतरौ चाणई गणुनी समाप्त भवन्तु ॥

ग १६००ना वर्षे ।

१८४४ ४०१०

शुभबहोतरौ

घाणि - ॥१०॥ श्रीगणगाय म । सप दान गुवायत्राती निण्ये ॥

* रग इतिरौ चार विधिम प्रतिदी है चारारे कथा लप पाठ घाग घमग है ।

दूहा- करि प्रणाम श्री मारदा, गपनी बुध परमान ॥

मुक शप्न वार्ता उ नगी, न्यापने देवी दान ॥ १

विक्रम नगर मुहामणी, मुण सपतमी ठोर ।

हिंदू धान ५८ हिंदू धरम, अंगो महर न श्रीर ॥ २

अन्त- * हरदत्त मेठ होम करायो निहा मारिका पिण आर । उपरनु दिव्यमाना पडी । उणरे दर्शन सेती मराप छट शुभकारिका गधधं होय आपणी लोक गया ।

इति श्रीवृत्तर वार्ता मुघ ग्वावहस्तगी नपूर्णांम् ॥ ७२ संवत् १८६६रा मित्ती श्रावण सुदी १ दिने लिपतं प० विज्ञानमुद्रेण श्रीजैगन्धेर दुर्गे चतुर्मास्या स्थिता ।

१८४५ ४४१६ शुक्रवहोतरी । प्रथम पत्र अप्राप्त

आदि- दी वट्टी । पृथ्वीके विषं वृद्धतगी कथा मनुष्य भाषा करि प्रभावती आगे कहसी । सील रपावमी । तदि गंधमाद परवतके विषं आविर्न शुक्र मगीर छोटिके मूल गी शरीर पामी पाचने मोहर ब्राह्मणने दान देई । निपाप याडम***।

* अन्त- ***कवि देवदत्त कहे । शुक्रका वनन सेना करिके आपकी बुद्धिके अनुमाने वाधी छई ।

इति श्रीशुक्रवहोतरी कथा समाप्ता ॥ मन् १७६० वर्षे आमोज वदि ६ पट्टी भोमवासरे प० बनीतविजय निपि चक्रे ॥ शुभभवतु ॥ श्रीनमाप्ता ॥

१७४५ ६८५ श्रीपाल रास (ज्ञाननागर कृत)

आदि-

॥दं०॥ दूहा- कर कमताजोडेवि करि, सिद्ध मयन पणमेम ।

श्रीश्रीपाल नरिदनु, रामवध पभणन ॥ १

महीयनि मय अनेक छै, पपति मपतिंग मार ।

भवसायर तनु उत्तरै, जो जपे श्रीनवकार ॥ २

अन्त- सिद्ध चक्र महिमा सुणो ए माल वडी भवेया कर्णधरेवि सुणो न्दरी भ० २ मनवदित्त मुपदायक ए माल० ॥ जे सुणे नितमेव सुणो० जे० १ एक मना जे जिन जपइए मा० ते घर मगल माल मु० ते० २ ऋद्धि अनती भोगवें ए मा० जम भूपति श्री सुणो सुदरी जे० २ ।

इति श्रीपालराम सपूर्ण ।

१७४६ ६६१ श्रीपाल रास (जिनहर्ष रचित)

आदि-

॥दं०॥ दूहा ॥ श्रीअरिहत अनत गुण, धरीयड हीयडै ध्यान ।

केवल ज्ञान प्रकाश कर, दूरि हरण अगन्यान ॥ १

चउद राजु ऊपरि रहइ, सिध अनत समृद्धि ।

मुगति युवति मुप भोगवड, दायक अविचल सिद्धि ॥ २

अन्त- सवत सतरइमे चालीसे, चैत्रादिक सुजगी इमइ रे ।

मातइ सोमवार सुत दीने, पाटण विमवा वीसैरे ॥ १०

१६६८. ३५५५ (१६) मिरोही माटवी आदि स्थानोंकी बोलियोंके नमूने

आदि— अथ बोनीया निप्यते ॥

मवड्या ४ ॥ नभलेम भाट पेमा आही वात यामो कहुं,
माटीयारो माट मारु रहुंया रं जास्या जी ।
उगुनं अभागीयारुं लेवा देवी काट नही
उगुनं नभागीयारुं धी नं वाटी पाम्या जी ॥
घाघरं रं घुमकैमु भाडीयारुं भूमकै मु,
लोचनारुं मुमकैमु चितडो रमावस्या जी ।
अमलाने कोट आछो नीरपारी ओट वालै,
ज्यामु मारी रात जीवडो रमास्या जी ॥ १

इति मीरोही बोनी मपूर्ण ।

ठालोभूलो लेड मोनै बुगी बुगी गाळ्या बोले,
गावरी लूगाया मूर्ण छोहरा मूर्ण हाटमुं ।
पमा कितो एक कय ए कहु कहा, आही मोया,
अधिकरो ज्यु ह ईई अथा घाटमु ॥
ओही रजपूत जायो हु ई रजपूत जाई,
ओही एक नामै छै त्युही काले काटमु ।
नरादलबाई आही वात थामु कहु भाई,
अहै घरवामसु केहा दिन काटमु ॥

इति माडेवी बोली सपूर्ण ।

जेथ जावा तेथ माहरुं दोड दोड आछो आछो,
आवै धारो किसुं लीयो माहरुं काम काज जावा छ ।
हार कठी डोरो तोडै भालनै वाह मरोडै,
अही भूठी वाता नेहडो न लगावा छ ॥
सटकमै माडी पोलै भूडी भूडी गाल्या बोले,
तोमु किसु वीहा धारुं घरे रोटी पावा छ ।
लाज बीज किसु पोवै पापतीरा लोरु जोवै,
आये काल्ह उथि म्हेइ उथि आवा छ ॥

इति बीकानेरी बोली मपूर्ण ।

नरादल भाई बाई आही वात थामु कहुं,
देपो बाई धारी भाई म्हामू वेढ माडै जी ।
एक तो म्हेइ गड कीछै तिका थे जाणी विध,
बीजी ही नसारुं कीया तीअरी ठोर हिडै जी ॥

बहो हिव जाऊ निधी बहो जिकू,
तिवू करी छपी ही न छुट्टु म्हरा देखडो न छाड जी ।
जाणो त्यु ही हावो घ्राप हू तो वपू ही
बहू नही दया मान भाड जी ॥
इति गोधपुरी वाली मपूर्ण ॥ त्रिपीठत चित्रा केसरचद ॥ समाप्त ॥

३५४६ (२) सेरसिंह मेडतिया घ्रावि राजाघोंका सपपरा

घ्रादि- गीठ जाति सपपरो ऋगिघ मेडतीपारा नै बुसलभिघ चांवावतरो ।

बवन् घ्रावीया घरारै बंध बंधू राजा बंधे चान
बहुई अरावा दगे छुट गोला बाग ।
बलाबली सिंधुराग बागिया भुभाउ बाजा
अड बहु अाभ लाग उनल अाराणु ॥ १ ।

घ्रा- रगम अनाग जसा बसी तग अग रभा
आपता पिलगा पोड सरोठती अग ।
नय बप पान घणु परिवां कुरग बचा,
भेट जेन साजी भला भागरा तरग ॥ ७ ॥इति॥

३५४६ (१०) सोनीगरा धीरमदेरी वारता

घ्रादि- ॥२०॥ अय वार्ता १ सोनिगरा धीरमदेरी ॥ गड जालोर सोनिगरा बणवीर
जीर बवर दाद हुआ । बडो बवर कानउडे । छोटी राणगडे । टीक कानउडेजी बडा । गड
जानोर राज बर । तिको एबणु समीय कानउडेजी भिकार पडोया । तिको जालोरमु बोग
१० तथा ११ उपरा गया न राति पडी । बन एब पवास रगो ।

घ्रा- तर अगर बदणरो घर घणायो । भायो पड गोद माहे लेन राती हुई ।
तिका पावदगु जाय सतलोबम भनी हुई । पातिगाह अनाबलीन दिली गया । आ इतरी यात
धीरमदे सोनिगरारी बनी । सुरवीर शतार तिगर मन सही । समय १३३७ अलाबदीन
पातिगाह जानोर आयो नै समय १३४६रा पाठुण यदि १३ धीरमदे सोनिगरो बांम आयो न
गड जानोर भागो ।

इति धारमदे सातिगरारी घार्ता मपूर्ण ।

४६०३

हमीररासो (हमीरायन)

घ्रा- र्थी गर्नेमाय नम हमीराईन मीय ॥

बनीन- गवरीन घान ब लीपाट वाराण ॥

पार भुज बर परग भरल मुपन अग राजत ॥

बर बर्मदन अयमान साम यमन योह मुहाय ।

मधुर स्वगय स्वगमय रथा धार उन्माहा बीन ।

१। ६न प्रगत गुधा गुपी घना जी बय बनीय प्रभा माण ॥ १

अन्त- कवीतः ॥ अमी करीउ बाहु करै नही, कोउ मो नगी राजवी चक्र तल ।

वाँस वीरुम राण बुयवीन पाँवयाभा. अजहु मध्यवी रोउ रोले ।

दक्षीन भडारा मदगल बट्ट हमेन करी ।

कदल रनयभ गढ अगी करै न कोई ॥

- ईती श्रीहमरायनमाको श्रीगार सपुरन समापनी ।

छद जाजाको ॥ कुउलीयो माई मोहदे अमीम काई जीवो वरम मो । याई मोह दे अमीस छीत्री ई तीर जीवो । वारा उपर वीस भनैजा जन वीरम केह ।

लीपत पाडे नाथुराम ब्राह्मन गोटमी आसावी अम घर्ममुत्तं गउ ब्राह्मनवा रक्षपाल राजा श्रीमलजीकू नाथुराम ब्राह्मन गोट नदारामको भतीजो टोड रहे है पवीजीको अष भीछुकको अमीम वचजोजी मीती पीन वदी ९ मगावार सवत् १७८७ जो पुस्तग वाचं जीकु राम राम वचजोजी । जाद्रष्ट दस्वा ताद्रम लीपने मा । जदी मुद्र वीमुद्र वा मम दोपे न दीयते ॥ गु० ॥

२३७४ (१०)

हरचदपुरी

आदि- ॥ अथ हरचद लप्यते ॥

नेरी अवेनी उत्पम ठाय । राज करे ता हरचद गय ॥ १

रायना चक्र फरें नव पड । आण न लोपे को बनवत ॥ २

मामु छोल वरु नव फरे । पित्त पिलो पुत्र नमी मरे ॥ ३

गउ तुलमी विरामणने दवार । रावु मत हरचद नै राय ॥ ४

अन्त- काढी पट्टकनें धसममो जाघायो मुके सीम ।

आगल चकीना आजीउ भाहावग्रहा जगदीम ॥ ८

ईती हरचदपुरी नपुरां ॥१०५५॥

२८६३ (६८-६९)

हीयाली

१ हीरकलश कृत

जलि कमल प्रसगइ । वाम वमड लघु अग विअगइ ॥

कहिहो पठित ते फुण नारी । स्याम वरण ते स्याम सिगारी ॥

कवण मुनीर कमल कुण नारी । हीरकलम कहि कहउ न इ विचारी ॥ ८

२. हेमाणद कृत

राम मल्हार ॥ एक पुरुष सामल मुकुलीणउ रमणी त्रिहु भरतार रे ॥

गग मुरि सिरि मूल उत्पन्नउ सुविचारउ समार रे ॥ १

हीरकलम मुनि सीम हेमाणंद बोलइ मन उल्हाम रे ॥ ५

अन्त- इति श्रीहीयाली नाम कृत हीरकलस मुनि ॥ सवत १६५७ वर्षे काती सुदी २ दिने रचवी स्थाने ।

२८६३ (१५) हीरकलग गोत्रादि घणन

इस युग्मक दसवें पत्र पर धारमम सूक्ष्माक्षरोम हीरकलग गोत्रादि निम्ने हूण हैं, जा पत्रका कुछ भाग मग्नित हो जानेस पूगतया पद नहा जाते । पढनेम आने योग्य कुछ अंग इम प्रकार है—

रीया बुदुरा गोत्र ॥ सा० मोहणसी पुत्र मत्रि वा पुत्र म० चावा पुत्र म०
 धरणा पुत्र म० दवा पुत्र सोभा पुत्र सा० सगता पुत्र सा० सदारग प्रमुख ॥ कुत्तरा पुत्र
 नीमल हीरा चला हेमाणद चेला अरजन ईसर सा० तेजा पुत्र बीदा पुत्र चिरमाना ॥

परिशिष्ट २

ग्रन्थकार नामानुक्रमणिका

अ

अचलकीर्ति ८३
अजितदेव ६
अनूपसिंह ८४
अभयकुशाल ८२
अभयमोम ६५, ६६, ८०
अमृत ४६
अमृत कवि २७
अमरसाधु ८०
अमरमुन्दर ८४
अर्जुनचंद्र ४०
अर्जुनजी १४

आ

आहो हूरमोजी ६४
आणद १०७
आणद जेटूमल ३१
आनन्दघन ७२
आनन्दचन्द ७४
आनन्दनिधान ७८

ई

ईसर ११
ईसरदास १४, १०६

उ

उत्तमविजय ४७
उत्तमसागर १०८
उदयभानु ८०
उदयरत्न ७, ३४, ३७, ४५, ७०,
७८, ६४
उदयविजय ५४, ६४
उदयवत २३
उदेराज १६

उदेराज १७

उदो ६०

ऋ

ऋषभ १, २४
ऋषभदास १८, १०७
ऋषभसागर ८२

क

कानरकवि ६६
कानककीर्ति ३४, ३७, ३८, ४६,
कानकनिधान ७१
कानरमुन्दर ७१, १०५
कानकमोम ६, १०, ६१, १०५
कवीर १५, ४६
कमल ५७
कमलचन्द्र ५१
कमलविजय २६
कमलहर्ष ६
करणीदान १०३
करमचद ३०
कल्याण २१, ५८, ६७
कल्याणतिलक ४१, ६८
कलशकवि २८
कविजन ६४
कवि देव १६
कवियण ४६, ७२, ७६
कानरदान वारंठ ५८
कान्ति ७, ३३
कान्तिविजय ४५, ६२, १०४
कान्तिसेवक ५३
काशीराम ६८
किमनदास १४

कुम्भरकुशल ११
 कुशललाभ २१ ३६ २७, ६४,
 ६५ ६३
 कुशलसागर ८३
 कुशलसयम १०५
 कुशलदृष्ट ४१
 कूपाराम ३१
 क्षगरकुशल १०८
 क्षेपरविमल १०२
 क्षेपराज ३५ ७५
 क्षेपावदास ७६ ६१
 क्षेपरसिमा १७ ४०
 क्षेपथ २०
 क्षेपीदास ४० ४५ ८२
 क्षाली भाटण ३१
 ख
 खिडियो जगो ७२ ७३, ७४
 खुश्यालघद ६१
 खतल २६
 खताक १२
 खम ६६ १०२
 खेमराज १० ११
 खेमो ४
 ग
 गजकुशल २२ ६३
 गङ्गादास ६३
 गौगला ६७
 गुणशीति १६
 गुणरत्न ८७
 गुणसागर १५ ३५ ४० ४७ ८६
 गुपाल ४२
 गुनाल ६४
 गेहू ४८
 गोवर्द्धदास ६७
 गोपालदाम ५१ ६२
 गोरमनाथ ३४

गोवि ददास ७५ १०३
 च
 चतुभु जदाम ६१ ६२
 चरनदास ६७
 चानण लिडिया ६४
 चारित्रगुदर ४०
 चारित्रसघ ६६ ६७
 चिवानच ६७
 चुनोलास २५
 चेतनदास २६
 चतपदास २१
 चौथमल ३५
 चद ४७ १०५
 चद्रकीर्ति ५८ ८१
 चद्रदत्त १८
 चद्रभाण ३२
 छ
 छीतरदास ३०
 ज
 जगनाथ ४५ ७१
 जटमल २३ २४
 जयरग ५ १५
 जयलाल १८
 जयविजय ५४
 जयसोम ५८
 जवानसिंह २१
 जसवतसिंह ४०
 जायद ६१
 जिणदास ३५
 जितघद २
 जिनचद्र २०
 जिनदास ३४, ७३
 जिनराज २७
 जिनरग ३४ १०३
 जिनलाभ ४३ ६३
 जिनयत्तलभ १०

जिनसुन्दर ४०
 जिनसूरि २३
 जिनहर्ष ६, ७, १२, १५, १७, २६,
 ३४, ३६, ४३, ५१, ५४, ५७, ८०
 ८१, ८४, ८६, ८७, ८८, १००, १०५
 जिनेन्द्र ६६
 जिनोदय ७८, १०४
 जीनराज २६
 जीवी १४
 जेराज १००
 जेस कवि ७५
 जैत कवि ६२
 जैदेव ७, ५७
 जोरो ६५, ६६

ठ

ठाकुरसी ४८

त

तत्त्वहस १२
 तिलकसूरि ५६
 तुलसीदास १०३
 तेजविजय ६२
 तेन कवि ५७

द

दत्तलाल ३८
 दयाशील ४०
 दयासार ६
 दर्यासिंह १०४
 दयासूर ६७
 दशार्क भद्रराज ३६
 दान ६१, १०८
 दानसागर ६६
 दीप्तिविजय ६१
 दीपो २१, २२, ३८, ५४, ७८, १०१
 देईदान १००
 देपाल २८, ३२, ६६
 देवगुप्त ५

देवचद ७, २७, ८८, ६६, ६६
 देवदत्त ६२, १०२
 देवविजय ४६, ८६
 देवमील ८४
 देवसूरि १०७
 देवीदान ८४, ६२, १०३

ध

धर्मगिरि ६
 धर्मगो ८३
 धर्मदेव ३, ८१
 धर्मनरेंद्र ७
 धर्ममन्दिर ८, ५१, ६६, ७०
 धर्मरत्न ३२
 धर्मवट्टान ३, १८, ४२, ५२, ६६, १०२
 धर्मविजय २७
 धर्मशील ८८, १०२
 धर्मसमुद्र ७६, ८५
 धर्मसी ४१, ५२, ५६, ६७
 धर्मदास ६

न

नन्द १०१
 नन्ददास ४५
 नम्र सूरि २०
 नयनशेखर ७०
 नयविजय ७०
 नयचिमल ८, ३२
 नयसुन्दर ४२, ४६, ७०, ८८, ६१,
 ६४, १०२
 नरपति ८०, ८१
 नरवद १६, ७६
 नरसिंह चारण ६४
 नरसी ४८, ४६
 नरहरदास ६, १०५
 नारायणदास भरुची ४३
 नेणसी मुहता ६७, ६८
 नेमविजय २३, ६२

नेमिदास ४
नमिसागर ३४

प

पथीराज १४
पथवीराज ७७
प्रतापसिंह (सवाई) ५, ६ ६८
प्रभुचंद ३४
प्रभदास ७३
प्रोतिविमल २२, २३
प्रम कवि ३५
प्रमराज ८४
प्रमानंद १४ ४२ ६६ ७४
पदमचंद्र ३२
पदमराज ७
पदम कवि १४
पदमचंद्र ३१
पदमसागर ८०
पद्मत घर्माथी ३७ ६६
परमसागर ८१
परममुख ५४
परमानंद ४२
पागचंद १३ ३६ ६८
पुण्यकीर्ति ५ ५५ ६१
पुण्यनदि ३३
पुण्यरत्न ४६, ५५, ७०
पुण्यसागर १ २ १०१
पुह कवि ६३

प

पद्मकवि १०१
पद्म गुलाब ६८
पद्म जिणदास ४ १०६
पद्मग ६ ७२
पद्मतो ५६
पद्मपारीदास १ २
पद्मारतो ८
पद्मारतोदास ६७

बालचंद्र ५८
त्रिलोक ३३
बोकानो ६४

भ

भक्तिराम २८ १००
भगवान ६४
भगोतीदास ३५
भद्रमेन २८
भवानीदास ७३, ७७
भवानीनाथ २
भाकड मुनि ४६
भाग्यविजय २३
भानूकीर्ति ७२
भानूमेरु ८८
भाव कविपण ३
भावप्रभ १०, १०१
भावरत्न ४१
भायविजय २
भीम ६६
भुवनकीर्ति १२
भोन १२

म

मगनीराम ८४ ६६
मतिकुशल २६ ३०, ८२
मतिचंद्र १६
मतिगजर १५, ४१
मतिसागर १०४, १०७
मतिहार ८६ ६०
मतिमुंदर ६७
मनराम २६
मरुत्प ४६
मलयकीर्ति ३०
मल्लूचदास ५३ ५६
महिमोदय १६ २० ५३, ८७
महिराज ८ ६
महेग १०५

माइदास २
 माणकसाह ३
 माणिक्यसूरि १०१
 माधव १००
 माधो १०७
 माधोदास ४५, ५४, ७५
 माधो २४
 मानकवि ६
 मानकवीर १६
 मानसागर १७, ८१, १०१
 मानकवि ६२
 मालदेव ५५, ६६
 मालमुनि २, ५०
 मीरा ४८, ४६, ५०
 मुक्तिनिधान ६
 मुरलीदास ४६
 मूला २०
 मेघमुनि ८६
 मेघराज ३०, ४२, १०८
 मेघनन्दन ३
 मेरुविजय ४७
 मेरुसुन्दर ७०
 मोडू गोदड ६३
 मोतीराम ६६
 मोहनविजय २८, २६, ५२, ६५, ७१
 मगनीराम ५१
 मगलधर्म ६१
 मगलमाणिक्य २
 मट्टाराम ७१
 य
 यशोविजय ८३
 यादव ६६
 योगचंद्र ७०
 र
 रघुपति ७१, ६३
 रघुलान २
 रतनबाई ७७

रतनविमल ५, ५५
 रतन वीरमाण १३
 रतन हमीर ७०, १०५
 रतनघोष ८७, १०७
 रतनसुन्दर ६२
 रतिर ७३
 राजकवि ५४, ६८
 राजपाता ३२
 राजमसुद्ध ५७
 राजसिंघ ४, ८४
 राजसिंह ५७, ८१
 राजनी ६७
 राजसुन्दर ५
 राजनीम ४३
 राजहर्ष ४६
 राजहरप ३७
 राजुल ७८
 राजो ५
 रामचंद्र १२, ३८, ५८, ७५
 रामचरण ४५, ७५
 रामचरन २०
 रामनाथ ७५
 रामविजय २६
 रामसरण १०६
 रामानन्दजी ७५
 राघव १६
 रघनदाम ६
 रूपश्रुति ६६
 रूपचंद्र ८, ४१, ५६
 रूपमेवक २३, ५४
 रूपो ८
 रंदाय ७७
 रगकलश ८६
 रगसागर ४६
 ल
 लत्रो १८
 लक्ष्मिचि २६

सविधिविग्रह ४० ६५
 सविधिविग्रह ७७
 सतयोग्य २४
 सन्निगातर ६२
 सामयदन १३, ७७ ७८ ८०, ८१
 सांगम २१
 सामचर ४१, ६० ७४ ७८ ८१
 सायम्परीति ७४, १०१
 सायम्पसमय १६ २४, ७६ ८२ ६३
 ६७ ६६

सप्तमी बीति ६१ ८०
 सप्तमायगा १६ ५७ १०२
 सप्तमायन्तम ८० ८१
 सप्तमागुण्ट ६६
 सप्तमीगुरि ८४
 सप्तमाह्य ६१
 सौम्ये .१

य

यज्ञि ८१
 यज्ञिविग्रह ३८
 यज्ञ ७८
 यज्ञराज १०७
 यज्ञमान ८
 यज्ञप्रीति ८४
 यज्ञान ४
 यज्ञचर ६१
 यज्ञाग १६ ८४
 यज्ञान्य ३
 यज्ञान्य ७७
 यज्ञान्य ८३
 यज्ञान्य ८
 यज्ञान्य १४
 यज्ञान्य १२
 यज्ञान्य १०१
 यज्ञान्य ४६ ४४ १० ६७ ८८
 यज्ञान्य १२

विनीतविप ६
 विनचद २०
 विमलमूर्ति ५५
 विदहण १०७
 विष्णुदास १३
 विसराम (?) १६
 वीरचर १६ २०, ६६
 वीरमूर्ति ३२
 वीरविप ४६ ६४
 वीरी १०२
 वीरु १०६
 वीरोराम ३३

श

श्याम ६८
 श्यामगुणाय ४२
 श्याम शोभो १४
 श्रीसार ७ ८, १२, १६ २०, ६६ ८०
 ७७ ६७

शुभसागर २२
 शुकुर ४३
 शक्तिगुण ८६ ६७
 शांतिप्रथम ५६
 शांतिभद्र ५६
 शांतिवमल ८२
 शांतिगुरि ६४
 शांतिह्य ६, २२ ६१
 शांतिचर ८ १२ २६ २४, ४७, ४८
 ४६ ८३ ६६
 शांतिदास ८४
 शांतिविप १०४
 शांतिगुण श्यामो ०
 शांतिगुरि ६२
 शांतिचर ७
 शांतिचर ०
 शांतिचर ६३
 शांतिचर १०

स

सकलकीर्ति २८, ४६, ६२

सकलचन्द्र ७६, ८३, १०३

सतीदास ४

समधर कवि ४०

समयरग २२

समयसुन्दर ८, ६, १२, १६, २३, २५

२६, ३०, ३७, ३६, ४०, ४२, ४४

५०, ५१, ५३, ५५, ५६, ६३, ६८

६६, ७६, ८८, ६१, ६२, ६८, ६६

१००, १०४, १०७

समृद्धमुनि ६

सर्वाणचन्द्र सूरि ६१

सरूपराम ३६

सहजसुन्दर २१, ५०, ७१, ७२, ६४, ६७

सहजानन्द ७६

साईदास ४४

सागरचन्द्र ३०, ६८

साधुकीर्ति ६३, ६८

साधूराम ६०

सामन्त ५१

सामलदास ४४, ५६, ८०

सामल भट्ट ४, १८

सारग ६४

सिद्धसेन १३

सिद्धिविजय ६४

सिवदान ८३

सिंहकुशल ४७

सीताराम ३६

सुजसविजय ८७

सुन्दरसूर ६५

सुमति ३

सुमतिकीर्ति ७८

सुमतिप्रभ ३

सूर्यमल ७६

सूरचन्द्र २५

सूरज ४५

सूरजीशाह ८

सूरविजय ७१

सूरसागर ३३

सेवक २, १२, १३, ७१, ८१, १०३

सोम, ३४

सोमविजय ३४

सोमविमल ८८

सोमसुन्दर ६२

सोमसूरि ६

सोभाग्यसेतार ५५

सवेगसुन्दर ६६

ह

हरजी जोशी ३७

हरदास ३३, ५६

हर्ष ५१

हर्षकीर्ति ४७, १०१

हर्षकुल ७६

हर्षकुशल ३६

हर्षचन्द्र ५५

हर्षवर्म ८६

हर्षनिधान ७१

हर्षमूनि ५५

हर्षमूर्ति २६

हर्षसागर ५०

हरिदान १३

हीनकलश १, ३, ७, १०, १८, १६,

२०, २२, २५, २६, २६, ३०,

३३, ३८, ४०, ४३, ४६, ४७,

४८, ५२, ५८, ६०, ६६, ७३,

७८, ७६, ८३, ६२, ६३, ६८,

६६, १००, १०५, १०७

हीरकुशल १८

हीररतन १

हीराणद १६, ८१, ८२

हेम ८६, ६५, ६७

हेमचन्द्र ८७

हेमरतन २३, २४, ५०, ७७

हेमाणन्द ८४, १०५, १०७

हेमानंद ८०

हंग कवि - ७

दा

शमादह्याण १७, ५१ ८५

शमाप्रमोद ४५

शमबद १००

न

शानकवि ४०

शानकवि ५० ६२

शानद ७०

शानमद २२

शानविपत ८, १५ २२, ६२

शानगोल १०१

शानमागद E १० ११, २६ ४७,

५८ ८७ ८८ ८९, ९९

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित
महरचपूर्ण राजस्थानी ग्रन्थ

१. कान्हडदे प्रबन्ध, महाकवि पद्मनाथ रचित । सम्पादक- प्रो के बी व्यास एम ए ।
मूल्य १२ २५
२. वयामला रासा, कविवर जान रचित । सम्पादक- डा उशरथ शर्मा श्री श्री प्रगरचन्द्र,
भवरलाल नाहटा ।
मूल्य ४.७४
३. लावारासा, चारण कप्रिया गोपादान विरचित । सम्पादक- श्री महताचन्द्र शारङ ।
मूल्य ३ ७५
४. वांकीदास री रयात, कविवर वांकीदाम । सम्पादक- श्री नरोत्तमदान स्वामी एम ए. ।
मूल्य ५ ५०
५. राजस्थानी साहित्यसग्रह, भाग १, सम्पादक- श्री नरोत्तम स्वामी, एम. ए. । मूल्य २ २५
६. जुगलविलास, महाराजा पृथ्वीसिंह कृत । सम्पादिका- श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत ।
मूल्य १ ७५
७. भगतमाळ, ब्रह्मदामजी चारण कृत । सम्पादक- उदैराज उज्ज्वल ।
मूल्य १.७५
८. राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिरके हस्तलिपित ग्रन्थोकी सूची, भाग १ ।
मूल्य ७ ५०
९. मुहता नैणसीरी रयात, भाग १, मुहता नैणसी कृत । सम्पादक- श्री बदरीप्रनाद नाकरिया ।
मूल्य ८ ५०
१०. रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढा कृत । सम्पादक-श्री सीताराम लालस ।
मूल्य ८ २५
११. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थ सूची, भाग १ ।
मूल्य ४ ५०

